सत्यमेव जयते

आज़ादी के तराने

(ब्रिटिश राज द्वारा प्रतिबंधित उर्दू साहित्य से)

सम्पादक

डा० राजेश कुमार परती

राष्ट्रीय अभिलेखागार

नई दिल्ली

आज़ादी के तराने

(ब्रिटिश राज द्वारा प्रतिबंधित उर्द साहित्य से)

सम्पादक

डा० राजेश कुमार परती

राष्ट्रीय अभिलेखागार

नई दिल्ली

"आज़ादी के तराने"

प्रकाशन तिथि : अक्तूबर, 1986
शक-1908

राष्ट्रीय अभिलेखागार, जनपथ, नई दिल्ली

प्रथम संस्करण : 1000

प्रकाशक : राष्ट्रीय अभिलेखागार, जनपथ, नई दिल्ली

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, नई दिल्ली-110064
द्वारा मुद्रित 1986

प्राक्कथन

राष्ट्रीय अभिलेखागार ने कुछ समय पहले **"आज़ादी के तराने"** नामक पुस्तक प्रकाशित की है । इस पुस्तक में उर्दू में प्रकाशित वे गीत व कविताएं संकलित हैं जिन्हें ब्रिटिश राज ने छपते ही अपने अधिकार में ले लिया था । इससे पहले भी प्रतिबंधित गीतों का एक हिन्दी संकलन 'देश भक्ति के गीत' इस विभाग द्वारा सन् 1985 ई. में प्रकाशित किया जा चुका है ।

उपर्युक्त उर्दू पुस्तक का विमोचन माननीय राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह जी द्वारा 13 अगस्त, 1986 को राष्ट्रपति भवन में सम्पन्न हुआ । इस पुस्तक के विमोचन के अवसर पर माननीय राष्ट्रपति जी ने यह इच्छा व्यक्त की थी कि इस उर्दू पुस्तक का हिन्दी रूपान्तर भी प्रकाशित होना चाहिए जिससे हिंदी पाठक देश भक्ति से पूर्ण इस साहित्य से लाभान्वित हो सकें । हमें अत्यंत प्रसन्नता है कि हम माननीय राष्ट्रपति जी की इस इच्छा को पूरा करते हुए **'आज़ादी के तराने'** का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि देश की वर्तमान युवा पीढ़ी को इस प्रकाशन से स्वतंत्रता संग्राम की एक गौरवपूर्ण झलक मिल सकेगी ।

राजेश कुमार परती
अभिलेख निदेशक
भारत सरकार ।

नई दिल्ली
दिनांक 22-9-1986

प्रस्तावना

साहित्य समाज की विचारधारा का प्रतीक होता है, विशेषकर वह साहित्य जो लोक गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाए । जब यह साहित्य लोक साहित्य बन जाता है तो भाषा अपनी विशेष सांस्कृतिक एवं भाषायिक प्रवृत्ति, धर्म एवं विश्वास तथा रीति-रिवाज के सभी बन्धनों को तोड़ देती है । ऐसे साहित्य पर जन भावनाओं और समय की आवश्यकताओं के तत्व आच्छादित हो जाते हैं । यह आवश्यक नहीं कि ऐसा साहित्य महाकाव्य बन जाए । सम्भवतः, इसमें महान साहित्य की विशेषताएं बहुत कम हों, किन्तु इसकी पृष्ठभूमि में जो जन भावनाओं की अभिव्यक्ति है उसके तत्व इतने प्रभावशाली और सुदृढ़ होते हैं कि वे ऐसे साहित्य के औचित्य बन जाते हैं ।

यह संकलन स्वतंत्रता संग्राम के उस महत्वपूर्ण भाग का एक संक्षिप्त विवरण है जहां न धार्मिक भेद-भाव था, न वेशभूषा और विचारधारा की भिन्नता, न ही कोई भाषायिक पक्षपात और क्षेत्रीय संकीर्णता । उस समय सभी के हृदय में देशभक्ति की एक ज्वाला प्रज्जवलित थी, एक दृढ़ निश्चय था जिसने सबको एक सूत्र में बांध रखा था ।

यह संकलन भारतवर्ष में आज़ादी के संकल्प और स्वतंत्रता संग्राम के उस क्रमिक विकास को भी प्रस्तुत करता है जो राजनैतिक और सामाजिक दोनों ही दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

जैसा कि उपर्युक्त पंक्तियों में कहा गया है कि साहित्य समाज की विचारधाराओं का प्रतीक होता है, भारत का स्वाधीनता संग्राम और विविध भाषाओं में उपलब्ध समकालीन भारतीय साहित्य इस बात के स्पष्ट उदाहरण हैं । जिस समय ''गालिब'' ने सन् 1857 ई. की दुखान्त घटनाओं से प्रभावित होकर अपनी गजल लिखी उस समय उनके सम्मुख अंग्रेज़ों की गुलामी से मुक्ति पाने की कोई कल्पना न थी । उनकी गज़ल में तो बस अंग्रेज़ों के अत्याचारों और अन्यायों के विरुद्ध एक रोषपूर्ण वर्णन था । मुहम्मदहुसैन 'आज़ाद' और अलताफहुसैन 'हाली' तक

आते-आते राष्ट्र एवं देश की समस्याओं तथा राजनैतिक और सामाजिक आन्दोलन सम्बन्धी विचार जन्म ले चुके थे । ''इस्माईल'' मेरठी और ''सुरूर'' जहांनाबादी के समय में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सुख चैन के त्याग की भावना, स्वाधीनता के लाभों की अभिव्यक्ति एवं पराधीनता के अभिशाप के विरुद्ध स्पष्ट प्रतिक्रियाएं एक स्पष्ट रूप धारण करने लगी थीं । यद्यपि उस समय भी देश-प्रेम और स्वाधीनता का प्राथमिक व धुंधला स्वरूप ही मिलता है, परन्तु राजनैतिक स्तर पर जैसे-जैसे देश में इस संघर्ष की भावना बढ़ने लगी ''इकबाल'' और ''चकबस्त'' आदि कवियों की रचनाओं में स्वाधीनता, राष्ट्रीयता और देश प्रेम के भाव भी स्पष्ट होने लगे । शायरे इन्कलाब ''जोश'' तक आते-आते जहां देश में भारत छोड़ो के नारे गूंज उठे वहीं साहित्यकारों तथा कवियों को भी वाणी मिल गई । इसके पश्चात् तो युवा कवियों का एक तांता सा लग गया जिसमें 'मजाज़', 'मखदूम', सरदार 'जाफरी', 'फैज़', 'अल्ताफ' मशहदी जैसे प्रसिद्ध कवियों के साथ-साथ 'कानून शिकन', 'मिर्ज़ा दबंग' और 'रौशन ख्याल' आदि अज्ञात नाम भी मिलते हैं ।

रक्त-रंजित हृदय से निकली इन रचनाओं ने ब्रिटिश सरकार को बहुत ही भयभीत कर दिया था । उनकी यही कोशिश रही कि जनता तक पहुंचने से पहले ही इन रचनाओं को अपने अधिकार में ले लिया जाए । ब्रिटिश सरकार यद्यपि अपने इस उद्देश्य में पूर्णतः कभी भी सफल न हुई फिर भी उसने भारत की भावी पीढ़ी को यह बहुमूल्य साहित्यिक पूंजी उपलब्ध करा दी

राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम से ओत-प्रोत बहुत सी ऐसी उच्च श्रेणी की रचनाएं भी हैं जो कवि की विचार धारा एवं कल्पना का प्रतिनिधित्व करती हैं । हमारा कार्य क्षेत्र चूंकि ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रतिबंधित उस साहित्य तक ही सीमित है जो समय की लूटमार से बचकर आज राष्ट्र की धरोहर के रूप में हमारे पास सुरक्षित है, अतः हमारा यह संकलन उस बड़ी साहित्यिक सामग्री का छोटा सा भाग है ।

हज़ारों की संख्या में सुरक्षित उर्दू में प्रकाशित नज़्मों, गज़लों और गीतों में से एक छोटी-सी संख्या का चयन करना काफी कठिन कार्य

था । अत: इसके चयन के समय रचनाओं के साहित्यिक मूल्यों और विषय की महत्ता के साथ-साथ कवि के स्थान एवं उसकी लोकप्रियता को भी ध्यान में रखा गया ।

इस संकलन के प्रकाशन के पीछे यह कल्पना निहित थी कि ऐसे साहित्य राष्ट्र की गौरवपूर्ण पूंजी होते हैं जिसके आधार पर समाज की हार जीत की गाथाएं रची जाती हैं । स्वाधीनता संग्राम के समय में जो भाषायिक, राष्ट्रीय एवं धार्मिक एकता हमारे सामने आई उसी के आधार पर आज हम पुन: यह कल्पना करते हैं कि आज की नई पीढ़ी भी एक स्वर होकर एक नवीन सामाजिक एवं आर्थिक स्वतंत्रता के संघर्ष में आधुनिक भारत का निर्माण करेगी ।

राष्ट्रीय अभिलेखागार में विभिन्न भाषाओं एवं क्षेत्रों में रचित ऐसे साहित्य का भंडार है और इसकी विस्तृत सूचियां भी प्रकाशित हो चुकी हैं । प्रतिबंधित साहित्य में से हिन्दी भाषा में चयन की गई कविताओं का एक संकलन ''देश भक्ति के गीत'' पिछले वर्ष प्रकाशित किया जा चुका है । यह प्रकाशन इस क्रम की दूसरी कड़ी है ।

इस संकलन के चयन, संपादन और प्रकाशन आदि में श्री रतन सिंह, कनिष्ठ श्रेणी लिपिक, श्री हिफ्ज़ुल कबीर, सहायक अभिलेखाधिकारी, श्री सैयद मुहम्मद रज़ा बाकर, सहायक अभिलेख निदेशक तथा श्री कृष्ण लाल अरोड़ा, उप अभिलेख निदेशक ने जो सहयोग दिया है, मैं उन सबका आभारी हूं ।

राजेश कुमार परती,
अभिलेख निदेशक,
भारत सरकार ।

सूची

क्रम. सं०	कवि	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1	2	3	4
1.	मिर्ज़ा असद उल्लाह ख़ां "ग़ालिब"	सन् 1857 ई०	1
2.	मौलवी मुहम्मद हुसैन "आज़ाद"	हुब्बे वतन	2
3.	ख़्वाजा अल्ताफ़ हुसैन "हाली'	इंग्लिस्तान की आज़ादी और····	4
4.	मौलाना "शिबली" नोमानी	नज़्म	5
5.	अल्लामा "ताजवर" नजीबाबादी	एक तरही ग़ज़ल के मुन्तख़ब अश्आर	6
6.	डा० मुहम्मद "इक़बाल"	तरानः-ए-हिंदी	7
7.	"सफ़ी" लखनवी	उतना ही वह उभरेंगे ···	8
8.	पंडित ब्रज नरायण "चकबस्त"	जोशे जवानी	9
9.	तदैव	हमारा वतन दिल से प्यारा वतन	11
10.	मौलाना सैयद फ़ज़लुल हसन "हसरत" मोहानी	निजाते हिंद	12
11.	मौलाना "ज़फ़र" अली ख़ां	हिंदुस्तान	13
12.	तदैव	फ़ानूसे हिंद का शोला	14
13.	तदैव	तख़्त या तख़्ता	15
14.	"अकबर" इलाहाबादी	ब्रिटिश राज	17
15.	मौलवी मुहम्मद "इस्माईल" मेरठी	आज़ादी ग़नीमत है	18

1	2	3	4
16.	शब्बीर हसन ख़ां "जोश" मलीहाबादी	ईस्ट इंडिया कम्पनी....	19
17.	तदैव	शिकस्ते ज़िदां का ख़्वाब	23
18.	"मख़दूम मुहीउद्दीन	आज़ादिए वतन—कहो हिन्दोस्तां की जय	24
19.	"जमाल" मज़हरी	नालः-ए-जरस	26
20.	हकीम मुहम्मद मुस्तफ़ा खां "मद्दाह"	हमारा देस	30
21.	दुर्गा सहाय "सुरूर" जहांनआबादी	गुलज़ारे वतन	32
22.	फ़ैज अहमद "फ़ैज़"	तसल्ली	34
23.	"अल्ताफ़" मशहदी	मां की दुआ	36
24.	असरारुल हक़ "मजाज़",	विदेशी मेहमान से	37
25.	अली "सरदार" जाफ़री	आगे बढ़ेंगे	39
26.	"अख़्तर" शीरानी	असीराने वतन की याद में	41
27.	तदैव	लोरी	42
28.	जां निसार "अख़्तर"	मैं उनके गीत गाता हूं	45
29.	मुईन अहसन "जज़्बी"	दावते जंग	47
30.	तिलोक चन्द "महरूम"	वतन के लिए पैग़ाम	51
31.	"सलाम" मछलीशहरी	मजबूरियां	52
32.	"साग़र निज़ामी"	अह्द	53
33.	"शमीम" करहानी	जवान जज़्बे	55
34.	"रविश" सिद्दीक़ी	बेदारिए मश्रिक़	56
35.	"अफ़सर" मेरठी	वतन का राग	60
36.	"रज़ी" अज़ीमाबादी	नौजवानों की दुनिया	62
37.	राम प्रसाद "बिस्मिल"	सरफ़रोशी की तमन्ना अब··	64
38.	तदैव	वह चुप रहने को कहते हैं··	65

1	2	3	4
39.	राम प्रसाद "बिस्मिल"	दूर तक यादे वतन....	66
40.	तदैव	उम्मीद की झलक	68
41.	तदैव	वतन के वास्ते जीना....	69
42.	"अशफ़ाक़" उल्लाह ख़ां	शहीदे काकोरी को आख़िरी नज़्म	70
43.	"विक़ार" अंबालवी	तरानः-ए-जंग	72
44.	"उमर" अंसारी	तरानः-ए-आज़ादी	73
45.	नौबहार सिंह "साबिर" टोहानवी	पयामे बेदारी	74
46.	तदैव	आसारे आज़ादी	78
47.	कन्हैयालाल "साक़िब"	शहाबे साक़िब	80
48.	"जान बुल"	नौहः-ए-वतन	81
49.	ललिता प्रसाद "अख़्तर" सहारनपुरी	ग़ज़ल	82
50.	"उस्मान" हामिद	वतन क़ैद से अब छुड़ाना पड़ेगा	83
51.	मनोहर सहाय "अनवर"	इत्तिहाद	85
52.	डलड़ बावा साहब बहादुर	एक तरही गज़ल के मुन्तख़ब अश्आर	86
53.	कुंवर हरी सिंह "जरी"	कहीं पीछे न हटना....	87
54.	अली हुसैन शाह "अली"	शामे ग़ुरबत	89
55.	किशन चन्द "ज़ेबा"	गज़ल	90
56.	इनामुल्लाह ख़ां "नासिर" हसनपुरी	क़ुरबान गाहे आज़ादी	91
57.	पंडित दत्ता प्रसाद "फ़िदा"	निदाए वक़्त	92
58.	"साग़र" अकबराबादी	रावी की हवाएं	93
59.	शिवलाल "बिस्मिल"	इन्क़िलाब! इन्क़िलाब !!	94

1	2	3	4
60.	"अज़हर" हसन ज़ाहिदी	ग़ुलामी का तौक़ उतार फेंको	96
61.	"अज़हर" अमृतसरी	शहादत की तमन्नाएं	97
62.	सैयद मक़बूल हुसैन	ऐ हुर्रियत की देवी!	98
63.	राम सरूप "चमन" लखनवी	जेल भारत वासियों को....	99
64.	फ़ीरोज़ उद्दीन "मन्सूर"	मौत बेहतर है अगर..	100
65.	लाला शगुन चन्द "दर्शन"	हिन्दुस्तानियों का गीत	101
66.	महाराज बहादुर "बर्क़"	जन्नत से भी अज़ीज़....	102
67.	सेवक राम "बासिर"	जज़बाते बासिर	104
68.	ए०एच० "साहिर"	शोला नवाई	105
69.	मुहम्मद इब्राहीम "अबरार" देहलवी	कानपुर का ख़ूनी मंज़र	106
70.	"शोख़" देहलवी	मज़लूम की आह	107
71.	"माहिर"	हिंदुस्तानी आज़ाद जमाअत	109
72.	"माहिर"	है लाज़िम हिंद को आज़ाद करना	111
73.	"मुसाफ़िर"	हिन्दियों को संदेस	113
74.	"राम दास"	ऐ ख़ुफ्त. बख़्त हिन्दी..	114
75.	"अनवर"	हिन्दुस्तान	116
76.	"आग़ा"	अवतार ले चुले हैं....	117
77.	"ख़ुजंदी"	ख़ून का असर	118
78.	कामरेड भारती "शौक़"	कटेंगी मादरे भारत की...	119
79.	"नैयर"	ग़ज़ल	121
80.	"ख़ुर्शीद"	ग़ज़ल	122
81.	"फ़लक"	ग़ज़ल	123
82.	"रौशन ख़याल"	फ़िरंगी का आज और कल	124
83.	"क़ानून शिकन"	नौजवानों से ख़िताब	126

1	2	3	4
84.	"मिर्ज़ा दबंग"	इन्क़िलाब! इन्क़िलाब!! इन्क़िलाब!!!	128
85.	अज्ञात	सुर्ख़ मछली बनके··	129
86.	अज्ञात	मुक़दमा साज़िश लाहौर····	130
87.	अज्ञात	तरानः-ए-फ़लक	131
88.	अज्ञात	चलो जेलख़ाने चलो जेलख़ाने	132
89.	अज्ञात	हिंदुस्तानी बच्चों का गीत	134
90.	अज्ञात	ऐ फ़िरंगी !	135
91.	अज्ञात	हो गए हैं अपने घर में····	136
92.	अज्ञात	वतन के वास्ते हम····	137
93.	अज्ञात	अच्छे दिन आने वाले हैं	138
94 से 100.	अज्ञात	दीगर (अन्य) गज़लियात	139 से 146

सन् 1857 ई०

बस के फ़आल मा युरीद[1] है आज।
हर सलहशूर[2] इंग्लिस्तां का ॥
घर से बाज़ार में निकलते हुए।
ज़ोहरः[3] होता है आब[4] इंसां का ॥
चौक जिस को कहें वो मक़तल[5] है।
घर बना है नमूनः ज़िन्दां[6] का ॥
शहर देहली का ज़र्रः ज़र्रः ख़ाक।
तिशनः-ए-ख़ू[7] है हर मुसलमां का ॥
कोई वां से न आसके यां तक।
आदमी वां न जासके यां का ॥
मैंने माना के मिल गए फिर क्या।
वही रोना तनो दिलो जां का ॥
गाह[8] जल कर किया किए शिकवः[9]।
सोज़िशे[10] दाग़ हाय पिन्हां[11] का ॥
गाह रो कर कहा किए बाहम[12]।
माजरा दीदः हाय गिरयां[13] का ॥
इस तरह के विसाल[14] से "ग़ालिब"।
क्या मिटे दिल से दाग़ हिजरां[15] का ॥

मिर्ज़ा असदरूल्लाह ख़ां "ग़ालिब" -- "आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, 'सिब्ते हसन"
प्रकाशक, हलक़ः-ए-अदब, लखनउ (1940 ई०)
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या 1712

1. जो चाहे करे, 2. हथियार बन्द, 3. साहस 4. पानी, 5. वध-स्थल, 6. कारागार 7. ख़ून का प्यासा, 8. कभी, 9. शिकायत, 10. जलन, 11. छुपे हुए घाव 12. आपस में, 13. नम आँखें. 14. मिलाप, 15. दूरी-बिछड़ना

हुब्बे वतन

ऐ आफ़ताबे हुब्बे वतन[1] तू किधर है आज ।
तू है किधर के कुछ नहीं आता नज़र है आज ॥

तुझ बिन जहां है आखों में अंधेर हो रहा ।
और इन्तिज़ामे दिल ज़बरो ज़ेर[2] हो रहा ॥

तुझ बिन सब अहले दर्द हैं दिल मुर्दः हो रहे ।
और दिल के शौक़ सीनों में अफ़सुरदः[3] हो रहे ॥

ठन्डे हैं क्यों दिलों में तेरे जोश हो गए ।
क्यों सब तेरे चिराग़ हैं ख़ामोश हो गए ॥

हुब्बे वतन की जिन्स का है क़हत साल[4] क्यों ।
हैरां हूँ आज कल है पड़ा इसका काल क्यों ॥

कुछ हो गया ज़माने का उलटा चलन यहां ।
हुब्बुल वतन के बदले है बुग़ज़ुल वतन[5] यहां ॥

बिन तेरे मुल्के हिन्द के घर बे चिराग़ हैं ।
जलते इवज़[6] चिराग़ों के सीनों में दाग़ हैं ॥

कब तक शबे सियाह[7] में आलम तबाह हो ।
ऐ आफ़ताब इधर भी करम की निगाह हो ॥

उलफत[8] से गर्म सब के दिले सर्द हों बहम[9] ।
और जो के हम वतन हों वो हमदर्द हों बहम ॥

ता[10] हो वतन में अपने ज़रोमाल का वफ़ूर[11] ।
और मुमलकत[12] में दौलतो इक़बाल[13] का वफ़ूर ॥

इल्मो हुनर से ख़ल्क़[14] को रौनक़ दिया करें।
और अनजुमन में बैठ के जलसे किया करें॥
लबरेज़े[15] जोशे हुब्बे वतन सब के जाम हों।
सरशारे[16] ज़ौक़ो शौक़ दिलेख़ासो आम हों॥

मौलवी मुहम्मद हुसैन "आज़ाद"—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलक़:-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति, संख्या, 1712

1. देशभक्ति के सूरज, 2. उथल-पुथल, 3. उदासीन, 4. काल, 5. देशद्रोहिता, 6. बदले, 7. काली रात, 8. भाईचारा, 9. साथ, 10. ताकि, 11. बढ़ोतरी, 12. राज्य, 13. गरिमा, 14. जनसमूह, 15. भरा हुआ, 16. डूबा हुआ।

इंग्लिस्तान की आज़ादी और हिन्दुस्तान की गुलामी

कहते हैं आज़ाद हो जाता है जब लेता है सांस।
यां ग़ुलाम आकर-करामत है यह इंग्लिस्तान की ।।

इस की सरहद में ग़ुलामों ने जो है रख्खा क़दम।
और कट कर पावं से एक इक के बेड़ी गिर पड़ी ।।

क़ल्बे माहियत[1] में इंग्लिस्तान है गर कीमिया।
कम नहीं कुछ क़ल्बे माहियत में हिन्दुस्तान भी ।।

आन कर आज़ाद यां आज़ाद रह सकता नहीं।
वो रहे होकर ग़ुलाम, उसकी हवा जिन को लगी ।।

ख़्वाजः अल्ताफ़ हुसैन "हाली"—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हल्क़ः-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. कायान्तरित

नज़्म

कोई पूछे के ऐ तहज़ीबे इंसानी के उस्तादो !
यह ज़ुल्म आराईयां[1] ताके[2] ये हश्र अंगेज़ियां[3] कब तक ।।
यह जोश अंगेज़िये[4] तूफ़ाने बेदादो[5] बला ताके ?
यह लुत्फ़ अन्दोज़िये[6] हंगामः-एः-आहो फ़ुग़ां[7] कब तक ।।
यह माना तुमको तलवारों की तेज़ी आज़मानी है ।
हमारी गर्दनों पर होगा इसका इम्तहां कब तक ।।
निगारिस्ताने[8] ख़ूं की सैर गर तुमने नहीं देखी ।
तो हम दिखलाएं तुम को ज़ख्म हाय ख़ूंचकां[9] कब तक ।।
यह माना गर्मी-ए-महफ़िल के सामां चाहियें तुम को ।
दिखाएं हम तुम्हें हंगामः-ए-आहोफ़ुगां कब तक ।।
यह माना क़िस्सः ए-ग़म से तुम्हारा जी बहलता है ।
सुनाएं तुम को अपने दर्दे दिल की दास्तां कब तक ।।
यह माना तुमको शिकवः है फ़लक[10] से ख़ुश्क साली[11] का ।
हम अपने ख़ून से सींचें तुम्हारी खेतियां कब तक ।।
उरूसे बख़्त[12] की ख़ातिर तुम्हें दरकार है अफ़शां[13] ।
हमारे ज़र्रः हाय ख़ाक होंगे ज़रफ़िशां[14] कब तक ।।

मौलाना "शिबली" नौमानी—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलकः ए-अदब, लखनऊ (1940 ई.)—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य — अवाप्ति संख्या, 1712

1. अत्याचार करना, 2. कब तक, 3. अस्त-व्यस्त करना, 4. तीव्रता, 5. अत्याचार, 6. मज़ा उठाना, 7. चीख़-पुकार, 8. चित्रालय, 9. ख़ून में डूबी, 10. आकाश, 11. अकाल, 12. भाग्य की दुल्हन, 13. स्त्रियों के गालों व बालों पर छिड़कने वाला रुपहला-सुनहला पदार्थ, 14. स्वर्ण की भांति लुटना

एक तरही गज़ल के मुनतख़िब अश्आर

बम चख़ है अपनी शाहे रइयत पनाह[1] से।
इतनी सी बात पर के "उधर कल इधर है आज" ॥

उनकी तरफ़ से दारो रसन[2], है इधर से बम।
भारत में यह कशाकशे बाहम दिगर[3] है आज ॥

इस मुल्क में नहीं कोई रहरौ[4] मगर हर एक।
रहज़न[5] बशाने राहबरी राह बर है आज ॥

उनकी उधर जबींने[6] हुकूमत पे है शिकन।
अन्जाम से निडर जिसे देखो इधर है आज ॥

अल्लामः "ताजवर" नजीबाबादी—"आज़ादी की नज्में"—"रोज़ाना वीर भारत," लाहौर (2 मार्च, 1930 ई.)—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य— अवाप्ति संख्या 2497

1 जनता को शरण देने वाला, 2 सूली-बेड़ी, 3 आपसी खींचतान, 4 रास्ते का साथी
5 लुटेरा, 6 माथा

तरानः-ए-हिन्दी

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा ।
हम बुलबुलें हैं इस की यह गुल्सितां हमारा ।।
गुर्बत में हों अगर हम रहता है दिल वतन में ।
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहां हमारा ।।
पर्बत वह सब से ऊंचा हमसायः आसमां का ।
वह संतरी हमारा, वह पासबां हमारा ।।
गोदी में खेलती हैं इसकी हज़ारों नदियां ।
गुलशन है जिनके दम से रश्के जिनां[1] हमारा ।।
ऐ आवरूदे[2] गंगा ! वह दिन है याद तुझको ।
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा ।।
मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना ।
हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा ।।
यूनानो मिस्रो रोमा सब मिट गए जहां से ।
अब तक मगर है बाक़ी नामों निशां हमारा ।।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे ज़मां हमारा ।।
"इक़बाल" कोई महरम[3] अपना नहीं जहां में ।
मालूम क्या किसी को दर्दे निहां[4] हमारा ।।

डा. मुहम्मद "इक़बाल"—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलक़ः-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. स्वर्ग से बढ़कर, 2. नदी, 3. राज़दार, 4. छुपा हुआ

उतना ही वो उभरेंगे जितना के दबा देंगे

ज़िंदः हैं अगर ज़िंदः दुनिया को हिला देंगे ।
मश्रिक़[1] का सिरा लेकर मग़्रिब[2] से मिला देंगे ॥

हम सीनः-ए-हस्ती[3] में अंगारः हैं अंगारः ।
शोले भड़क उठ्ठेंगे, झोंके जो हवा देंगे ॥

मज़दूर हों देहक़ां[4] हों हिन्दू हों मुसलमां हों ।
सब एक तो हो जाओ फिर उनको दिखा देंगे ॥

हम कौन हैं हम क्या हैं हम कुछ भी नहीं लेकिन ।
वक़्त आने दो वक़्त आने पर फिर उनको दिखा देंगे ॥

मज़दूर की फ़ितरत में क़ुदरत ने लचक दी है ।
उतना हो वो उभरेंगे जितना के दबा देंगे ॥

मज़दूर के नालों[5] से आतिश[6] भड़क उठ्ठेगी ।
चलते हुए पानी में हम आग लगा देंगे ॥

तारीकिए ग़फ़लत में हैं जो के पड़े सोते ।
यह नज़्म "सफ़ी" पढ़ कर हम उनको जगा देंगे ॥

"सफ़ी" (लखनवी)—माहनामा 'रिसाला कीर्ति', अमृतसर (जनवरी, 1930 ई.)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2326

1. पूरब, 2. पश्चिम, 3. अस्तित्व, 4. किसान, 5. चीख़-पुकार, 6. आग

जोशे जवानी

हुक्म हाकिम का है फ़र्याद जुबानी रुक जाए।
दिल की बहती हुई गंगा की रवानी[1] रुक जाए।
क़ौम कहती है हवा बंद हो, पानी रुक जाए।
पर यह मुमकिन नहीं अब जोशे जवानी रुक जाए।

हों ख़बर दार जिन्होंने यह अज़ीयत[2] दी है।
कुछ तमाशा यह नहीं क़ौम ने कर्वट ली है॥

हो चुकी क़ौम के मातम में बहुत सीनः ज़नी[3]।
अब हो इस रंग का सन्यास, है यह दिल में ठनी।
मादरे हिन्द की तस्वीर हो सीने पे बनी।
बेड़ियां पैर में हों और गले में कफ़नी।

हो यह सूरत से अयां[4] आशिक़े आज़ादी हैं।
क़ुफ़्ल[5] है जिन की ज़ुबा पर यह वो फ़र्यादी हैं॥

आज से शौक़े वफ़ा का यही जौहर होगा।
फ़र्श काटों का हमें फूलों का बिस्तर होगा।
फूल हो जाएगा छाती पे जो पत्थर होगा।
क़ैद खानः जिसे कहते हैं वही घर होगा।

संतरी देख के उस जोश को शरमाएंगे।
गीत ज़ंजीर की झनकार पे हम गाएंगे॥

जिसमें सौदाए मुहब्बत[6] था वो सर बाक़ी है।
रात अंधेरी है मगर यादे सहर[7] बाक़ी है।
दिल के हर ज़ख़्म में फ़र्याद का दर[8] बाक़ी है।
क़ौमे बैदार[9] के सीने में जिगर बाक़ी है।

दिल दहलते नहीं ज़िन्दां[10] में गिरफ़तारों के।
बेड़िया ढूंढ़ते हैं पांव वफ़ादारों के।।

"चकबस्त", पंडित ब्रजनारायण—हफ़्तावार 'पयामे जंग', लाहौर (26 फरवरी, 1930 ई.)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2588

1. बहाव, 2. कष्ट, 3. सीना कूटना, 4. स्पष्ट, 5. ताला, 6. प्रेम भाव, 7. सुबह की याद, 8. दरवाज़ा, 9. जागा हुआ राष्ट्र, 10. कारागार

हमारा वतन दिल से प्यारा वतन

यह हिन्दोस्तां है हमारा वतन[1],
मुहब्बत की आंखों का तारा वतन।
हमारा वतन, दिल से प्यारा वतन ।।

वो इसके दरख़्तों[2] की तैयारियां
वो फलफूल पौदे वो फुलवारियां।
हमारा वतन, दिल से प्यारा वतन ।।

हवा में दरख़्तों का वो झूमना,
वो पत्तों का फूलों का मुंह चूमना।
हमारा वतन, दिल से प्यारा वतन ।।

वो सावन में काली घटा की बहार,
वो बरसात की हल्की हल्की फुहार।
हमारा वतन, दिल से प्यारा वतन ।।

वो बाग़ों में कोयल, वो जंगल के मोर,
वो गंगा की लहरें, वो जमना का ज़ोर।
हमारा वतन, दिल से प्यारा वतन ।।

इसी से है इस ज़िंदगी की बहार,
वतन की मुहब्बत हो या मां का प्यार।
हमारा वतन, दिल से प्यारा वतन ।।

"चकबस्त" पंडित ब्रजनरायण—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलक़ः-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. देश, 2. पेड़

निज़ातें हिन्द

ऐ के निजाते हिन्द की दिल से है तुझ को आरज़ू।
हिम्मते सर बुलन्द[1] से यास[2] का इन्सिदाद[3] कर ।।

क़ौल[4] को ज़ैदो अम्र के हद से सिवा अहम न जान ।
रौशनी-ए-ज़मीर[5] में अक्ल से इजतिहाद[6] कर ।।

हक़[7] से ब उज्रे मसलेहत[8] वक़्त पे जो करे गुरेज़[9]।
उसको न पेशवा समझ–उस पे न एतिमाद[10] कर ।।

ख़िदमते अहले जौर को कर न क़ुबूल ज़ीनहार[11] ।
फ़न्नो हुनर[12] के ज़ोर से ऐश को ख़ानःज़ाद[13] कर ।।

ग़ैर की जिद्दोजहद[14] पर तकियः[15] न कर के है गुनाह।
कौशिशे ज़ाते ख़ास[16] पर, नाज़ कर, एतिमाद कर ।।

मौलाना सैयद फज़लुल हसन "हसरत" मोहानी—"आज़ादी की नज़्में", संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलक:-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई.)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. ऊंची, 2. निराशा, 3. रोक लगाना, 4. कथन, 5. आत्मा का प्रकाश, 6. काम लेना, 7. सच्चाई, 8. मसलेहत का बहाना, 9. भागना, 10. भरोसा, 11. हर्गिज, 12. कारीगरी 13. घरेलू नौकर, 14. प्रयास, 15. भरोसा, 16. आत्म विश्वास

हिन्दुस्तान

नाक़ूस[1] से ग़रज़ है, न मतलब अज़ां से है ।
मुझको अगर है इश्क़ तो हिन्दोस्तां से है ॥

तेहज़ीबे[2] हिन्द का नहीं चश्मः[3] अगर अज़ल[4] ।
यह मौजे रंग रंग फिर आई कहां से है ॥

ज़र्रे में गर तड़प है तो इस खाके पाक से ।
सूरज में रौशनी है तो इस आसमां से है ॥

है उसके दम से गर्मिए हंगामः–ए–जहां[5] ।
मग़रिब[6] की सारी रौनक़ इसी इक दुकां से है ॥

मौलाना "ज़फ़र" अली ख़ां—"आज़ादी की नज्मे"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलक:–ए–अदब, लखनऊ (1940 ई0)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. घण्टा, 2. संस्कृति, 3. स्रोत, 4. प्रकृति, 5. संसारिक उथल-पुथल की गर्मी; 6. पश्चिम

.फ़ानूसे हिन्द का शोल:

जिन्द: बाश[1] ऐ इन्क़िलाब ! ऐ शोल:–ए–फ़ानूसे[2] हिन्द ।
गर्मियां जिस की फ़रोग़े[3] मनक़ले[4] जां हो गईं ॥
बस्तियों पर छा रही थीं मौत की ख़ामोशियां ।
तूने सूर[5] अपना जो फूंका महशरिस्तां[6] हो गईं ॥
जिन बलाओं से घिरे रहते थे सुबहो शाम हम ।
तेरे आते ही वो अंग्रेज़ों की दरबां[7] हो गईं ॥
जितनी बूंदें थीं शहीदाने वतन के ख़ून की ।
क़सरे आज़ादी[8] की आराइश[9] का सामां हो गईं ॥
मरहबा[10] ऐ नौ गिरफ़्ताराने[11] बेदादे फ़िरंग[12] ।
जिन की ज़ंजीरें ख़रोश अफ़ज़ाए[13] ज़िंदां[14] हो गईं ॥
ज़िन्दगी उनकी है, दीं[15] उनका है, दुनिया उन की है ।
जिनकी जानें क़ौम की इज़्ज़त पे क़ुरबां हो गईं ॥

मौलाना "ज़फ़र" अली ख़ां—रोज़ाना 'वीर भारत' लाहौर (2 मार्च, 1930 ई. सण्डे एडीशन)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य--
अवाप्ति संख्या, 2497

1. जीवित रहे, 2. कंडील, 3. शोभा, 4. अंगीठी, 5. शंख, 6. परलयमय, 7. दरबान, 8. आज़ादी का महल, 9. सजावट, 10. वाह वाह, 11. नए बन्दी, 12. फ़िरंगी अत्याचार 13. शोर बढ़ाने वाले, 14. कारागार, 15. धर्म ।

तख़्त या तख़्तः

निकहते गुल[1] के इवज़[2] दोशे सबा[3] पर अब की बार।
बूए जां गुलशन[4] में लाई है बहारे इन्क़िलाब ॥

झूमते आते हैं महफ़िल में वो रिन्दे लम यज़ल[5] ।
जिनकी आंखों से टपकता है खुमारे[6] इन्क़िलाब ॥

वज़ाए आलम[7] में तग़ैयुर[8] के हुवैदा[9] हैं निशां ।
जोश में हैं जज़बः–ए–बे इख़्तियारे[10] इन्क़िलाब ॥

फूटने वाली है आज़ादी के सूरज की किरन ।
उठ रहा है पर्दः–ए–शब हाये तारे[11] इन्क़िलाब ॥

खीरः[12] हो जाने को है बीनाई[13] इस्तबदाद[14] की ।
सर पे आ चमकी है तेग़े आबदारे[15] इन्क़िलाब ॥

अलहज़र[16] ऐ ख़िरमने[17] बेदादे मग़्रिब[18] अलहज़र ।
मुजमरे[19] मश्रिक़[20] में रक़सां[21] है शरारे[22] इन्क़िलाब ॥

हिन्द के चाके गरीबां[23] का है क्या उस में क़ुसूर ।
पंजः–ए–यूरप है ख़ुद परवरदिगारे[24] इन्क़िलाब ॥

सर बकफ़[25] मैदां में आ पहुंचे जवानाने वतन ।
जिन की क़ुरबानी पे है दारोमदारे इन्क़िलाब ॥

खेलते आए हैं "नल" के वक़्त से हिन्दू जुआ ।
उन की यह फ़ितरत है अब रहने[26] क़िमारे[27] इन्क़िलाब ॥

घर से निकले हैं मुसलमां भी कफ़न बांधे हुए ।
नारः–ए–तकबीर है मिज़राबे[28] तारे इन्क़िलाब ॥

ज़र्रः ज़र्रः रूकशे[29] खु़रशीदे ख़ावर[30] हो गया ।
क्यों न हो ख़ाके वतन मिन्नत गुज़ारे[31] इन्क़िलाब ॥

ख़ाक में मिल जाएगा सरमायः दारी का ग़ुरूर[32] ।
गर यही है गर्दिशे[33] लैलो नहारे[34] इन्क़िलाब ॥

वक़्त आ पहुंचा के या मर जाओ या आज़ाद हो ।
"तख़्त या तख़्तः" है हुक्मे ताजदारे[35] इन्क़िलाब ॥

मौलाना "ज़फ़र" अली ख़ां—"दर्दे वतन"—संग्रहकर्ता, कामरेड "उसमान हामिद"—मुद्रक, धब्बासी लिथो आर्ट प्रेस, कराची—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2633

1. फूल की सुगंध, 2. बदले, 3. हवा के कांधे, 4. जान की महक, 5. आत्मिक मदिरा पिए हुए लोग, 6. नशा, 7. संसार के ढंग, 8. बदलाव, 9. स्पष्ट, 10. बेक़ाबू, 11. काली रात के पर्दे, 12. चौंधियाना, 13. दृष्टि, 14. अत्याचार, 15. धारदार कटार, 16. बचना (बचो), 17. खलयान, 18. पश्चिमी अत्याचार से, 19. चिमनी, 20. पूरब, 21. नाचता हुआ, 22. चिंगारी, 23. गरीबान का फटना, 24. पालनहार, 25. हथेली पर सर लिए, 26. गिरवी, 27. जुआ, 28. संगीत बजाने वाला तार, 29. आमने सामने होना, 30. चमकदार सूरज, 31. आभारी, 32. घमंड, 33. चक्कर, 34. रात दिन, 35. सम्राट ।

ब्रिटिश राज

बहुत ही उमदः है ऐ हम नशीन[1] ब्रिटिश राज।
के हर तरह के ज़वाबित[2] भी हैं उसूल भी हैं ॥
जो चाहे खोल ले दरवाज़ःए–अदालत को ।
के तेल पेच में है, ढीली उसकी चूल भी है ॥
निगाह करते हैं हाकिम बहुत तअम्मुक़[3] से ।
तुम्हारी अर्ज़[4] में गो कुछ ज़्यादः तूल[5] भी है ॥
जगह भी मिलती है कोंसिल में आनरेबिल की ।
जो इल्तिमास[6] हो उमदः तो वो क़ुबूल भी है ॥
तरह तरह के बनालो लिबासे रंगा रंग ।
अलावः रुई के रेशम भी और वूल भी है ॥
चमक दमक की वो चीज़ें हैं हर तरफ़ फैली ।
के आंख महव[7] है ख़ातिर[8] अगर मुलूल[9] भी है ॥
अंधेरी रात में जंगल में है अयां[10] इंजन ।
के जिसको देख के हैरान चश्मे ग़ूल[11] भी है ॥
शगुफ़्तः[12] पार्क हैं हर तर्फ़ रहरवों[13] के लिए ।
नज़र नवाज़[14] है पत्ती हसीन फूल भी है ॥
जब इतनी नेमतें मौजूद हैं यहां "अकबर" ।
तो हर्ज क्या है जो साथ उसके डेम फ़ूल भी है ॥

"अकबर" इलाहाबादी—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन" प्रकाशक, हलक़ः-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. साथी, 2. निधियां, 3. गहराई, 4. चौड़ाई, 5. लम्बाई, 6. याचना, 7. लीन होना, 8. मन, 9. उदासीन, 10. स्पष्ट, 11. प्रेत की आंख, 12. खिला हुआ, 13. रास्ता चलने वाले, 14. लुभावने

आज़ादी ग़नीमत है

मिले ख़श्क रोटी जो आज़ाद रह कर ।
तो वो ख़ौफ़ो ज़िल्लत के हलवे से बेहतर ॥

जो टूटी हुई झोंपड़ी बेज़रर[1] हो ।
भली उस महल से जहां कुछ ख़तर हो ॥

मौलवी मुहम्मद "इस्माईल" मेरठी, "आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन" प्रकाशक, हलक़ः-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. बिना हानि

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के फ़रज़ंदों[1] से

किस ज़ुबा से कह रहे हो आज तुम सौदागरो ?
"दह्र[2] में इंसानियत के नाम को ऊंचा करो"
"जिसको सब कहते हैं "हिटलर," भेड़िया है भेड़िया"
"भेड़िये को मार दो गोली पये अमनो बक़ा[3]"
"बाग़े इंसानी में चलने ही पे है बादे ख़िज़ां[4]"
"आदमियत ले रही है हिचकियों पर हिचकियां"
"हाथ है "हिटलर" का रख़्शे ख़ुदसरी[5] की बाग पर,,
"तेग़[6] का पानी छिड़क दो जर्मनी की आग पर"

—

सख़्त हैरां हूं के महफ़िल में तुम्हारी और ये ज़िक्र ।
नोए इंसानी[7] के मुस्तक़बिल[8] की अब करते हो फ़िक्र ।।
जब यहां आए थे तुम सौदागरी के वास्ते ।
नोए इंसानी के मुस्तक़बिल से क्या वाक़िफ़ न थे ?
हिन्दियों के जिस्म में क्या रूहे आज़ादी न थी ?
सच बताओ क्या वो इंसानों की आबादी न थी ?
अपने ज़ुल्मे बे निहायत[9] का फ़सानः[10] याद है ?
कम्पनी का फिर वो दौरे मुजरिमानः[11] याद है ?
लूटते फिरते थे जब तुम कारवां दर कारवां ।
सर बरेहना[12] फिर रही थी दौलते हिन्दोस्तां ।।
दस्तकारों के अंगूठे काटते फिरते थे तुम ।
सर्द लाशों से गढ़ों को पाटते फिरते थे तुम ।।

सनअते[13] हिन्दोस्तां पर मौत थी छाई हुई ।
मौत भी कैसी, तुम्हारे हाथ की लाई हुई ॥
अल्लाह् अल्लाह् किस क़दर इंसाफ़ के तालिब हो आज ।
"मीर जाफ़र" की क़सम क्या दुश्मने हक़[14] था सिराज ?
क्या अवध की बेगमों का भी सताना याद है ?
याद है, "झांसी की रानी" का ज़मानः याद है ?
हिजरते[15] सुल्ताने देहली का समां भी याद है ?
शेर दिल "टीपू" की ख़ूनीं दास्तां भी याद है ?
तीसरे फ़ाक़े में इक गिरते हुए को थामने ?
किस के तुम लाए थे सर शाहे "ज़फ़र" के सामने ?
याद तो होगी वो मटिया बुर्ज की भी दास्तां ?
अब भी जिस की ख़ाक से उठता है रह रह कर धुआं ॥
तुम ने क़ैसर बाग को देखा तो होगा बारहा ?
आज भी आती है जिससे हाय "अख़्तर" की सदा ॥
सच कहो क्या हाफ़ज़े[16] में है वो ज़ुल्मे बे पनाह[17] ।
आज तक रगून में इक क़ब्र है जिसकी गवाह ॥
ज़ेहन में होगा यह ताज़ः हिंदियों का दाग़ भी ?
याद तो होगा तुम्हे जलियान वाला बाग़ भी ?
पूछ लो उस से तुम्हारा नाम क्यो ताबिंदा[18] है ।
"डायरे" गुर्ग दहन आलूद[19] अब भी ज़िन्दः है ॥
वो "भगत सिंह" अब भी जिसके ग़म में दिल नाशाद[20] है ।
उसकी गर्दन में जो डाला था वो फन्दः याद है ?
अह्ले आज़ादी रहा करते थे किस हंजार[21] से ।
पूछ लो ये क़ैद ख़ानों के दरोदीवार से ॥

अब भी है महफ़ूज़ जिन में तनतनः[22] सरकार का ।
आज भी गूंजी हुई है जिस में कोड़ों की सदा ॥

आज कश्ती अम्न के अमवाज[23] पर खेते हो क्यों ?
सख्त हैरां हूं के अब तुम दरसे हक़[24] देते हो क्यों ?

अहले क़ुव्वत[25] दामे हक़[26] में तो कभी आते नहीं ।
"बैंकी" अख़लाक़ को ख़तरे में भी लाते नहीं ॥

लेकिन आज अख़लाक़ की तलक़ीन[27] फ़र्माते हो तुम ।
हो न हो अपने में अब क़ुव्वत नहीं पाते हो तुम ॥

अह्‌ले हक़[28] रौशन नज़र[29] हैं–अहले बातिल[30] कोर[31] हैं।
यह तो हैं अक़वाल[32] उन क़ौमों के जो कमज़ोर हैं ॥

आज शायद मंज़िले क़ुव्वत[33] में तुम रहते नहीं ।
जिसकी लाठी उसकी भैंस अब किस लिये कहते नहीं ?
क्या कहा "इंसाफ़ है इंसां का फ़र्ज़ें अव्वलीं" ।
क्या फ़सादो ज़ुल्म का अब तुम में कस बाक़ी नहीं ?
देर से बैठे हो नख़्ले रास्ती[34] की छांव में ।
क्या ख़ुदा ना करदः[35] कुछ मोच आ गई है पांव में ?
गूंज टापों की न आबादी न वीराने में है ।
ख़ैर तो है अस्पेताज़ी[36] क्या शिफ़ाख़ाने[37] में है ?
आज कल तो हर नज़र में रहम का अन्दाज़ है ।
कुछ तबीयत क्या नसीबे दुश्मनाँ[38] नासाज़[39] है ?
सांस क्या उखड़ी के हक़ के नाम पर मरने लगे ।
नोए इंसां की हवा ख़्वाही[40] का दम भरने लगे ॥
ज़ुल्म भूले, रागनी इंसाफ़ की गाने लगे ।
लग गई है आग क्या घर में के चिल्लाने लगे ?

मुजरिमों के वास्ते ज़ेबा[41] नहीं ये शोरो शैन[42] ।
कल "यज़ीदो शिम्र" थे और आज बनते हो "हुसैन" ।।

ख़ैर, ऐ सौदागरो अब है तो बस इस बात में ।
वक़्त के फ़रमान[43] के आगे झुकादो गर्दनें ।।

इक कहानी वक़्त लिखेगा नये मज़मून[44] की ।
जिस की सुरख़ी[45] को ज़रूरत है तुम्हारे ख़ून की ।।

वक़्त का फ़रमान अपना रुख़ बदल सकता नहीं ।
मौत टल सकती है अब फ़रमान टल सकता नहीं ।।

शब्बीर हसन ख़ां "जोश" मलीहाबादी––"आज़ादी की नज़्में"––संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"––प्रकाशक, हलकः–ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य––अवाप्ति संख्या, 1712

1. बेटों, 2. विश्व, 3. शान्ति एवं अस्तित्व हेतु, 4. पतझड़ की हवा, 5. उद्दण्डता का घोड़ा, 6. कटार, 7. मानवता, 8. भविष्य, 9. अधिक अत्याचार, 10. क़िस्सा, 11. दोषपूर्ण युग, 12. नंगे सर, 13. कारीगरी, 14. सच्चाई, 15. गमन, 16. याद, 17. अत्याधिक, 18. चमकीला, 19. भेड़िया जिसके मुह खून लगा हो, 20. अप्रसन्न, 21. कष्ट, 22. अकड़, 23. लहरें, 24. सत्यपाठ, 25. शक्तिमान, 26. सच्चाई का जाल, 27. नसीहत, 28. सत्यवान, 29. दूरदर्शी, 30. झूठे लोग, 31. अंधा, 32. कथन, 33. शक्ति, 34. सत्य का वृक्ष, 35. ईश्वर न करे, 36. अरबी घोड़ा, 37. चिकित्सालय, 38. शत्रुओं का भाग्य, 39. ख़राब, 40. मित्रता, 41. उपयुक्त, 42. रोना-पीटना, 43. आदेश, 44. विषय, 45. शीर्षक

शकिस्ते ज़िन्दां का ख़ाब[1]

क्या हिन्द का ज़िंदा कांप रहा है, गूंज रही हैं तकबीरें ।
उक्ताए हैं शायद कुछ क़ैदी और तोड़ रहे हैं ज़न्जीरें ॥

दीवारों के नीचे आ आकर यूं जमा हुए हैं ज़िंदानी[2] ।
सीनों में तलातुम[3] बिजली का, आंखों में झलकती शमशीरें[4] ॥

भूकों की नज़र में बिजली है, तोपों के दहाने ठण्डे हैं ।
तक़दीर के लब को जुन्बिश[5] है, दम तोड़ रही हैं तदबीरें ॥

आंखों में गदा[6] की सुर्ख़ी है, बे नूर है चेहरः सुल्तां[7] का ।
तख़रीब[8] ने परचम खोला है, सजदे में पड़ी हैं तामीरें[9] ।

क्या उनको ख़बर थी ज़ेरोज़बर[10] रखते थे जो रुहे मिल्लत[11] से ।
उबलेंगे ज़मीं से मारे सियः[12] बरसेंगी फ़लक[13] से शमशीरें ॥

क्या उनको ख़बर थी, सीनों से जो ख़ून चुराया करते थे ।
इक रोज़ इसी बेरंगी से झलकेंगी हज़ारों तसवीरें ॥

क्या उनको ख़बर थी, होंटों पर जो क़ुफ़्ल[14] लगाया करते थे ।
इक रोज़ इसी ख़ामोशी से टपकेंगी दहकती तक़रीरें ॥

संभलो, के वो ज़िन्दाँ गूंज उठा, झपटो के वो क़ैदी छूट गए ।
उट्ठो के वो बैठीं दीवारें, दौड़ो के वो टूटीं ज़ंजीरें ॥

शब्बीर हसन ख़ां "जोश" मलीहाबादी—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलक़ः-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई.)

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—

अवाप्ति संख्या, 1712

1. कारागार टूटने का सपना, 2. बन्दी, 3. हलचल, 4. तलवारें, 5. हिलना, 6. भिखारी, 7. राजा, 8. तोड़फोड़, 9. निर्माण कार्य, 10. ऊपर-नीचे, 11. राष्ट्र आत्मा, 12. काला सांप, 13. आकाश, 14. ताला

आज़ादिए वतन

कहो हिन्दोस्ताँ की जय ।

कहो हिन्दोस्ताँ की जय--कहो हिन्दोस्ताँ की जय ।
क़सम है ख़ून से सींचे हुए रंगीं गुलिस्ताँ की ।
क़सम है ख़ूने देहक़ा की, क़सम[1] ख़ूने शहीदाँ की ।
यह मुमकिन है के दुनिया के समन्दर ख़ुश्क हो जाएँ ।
यह मुमकिन है के दरया बहते बहते थक के सो जाएं ।
जलाना छोड़ दें दौज़ख़[2] के अंगारे यह मुमकिन है ।
रवानी तर्क कर दें बर्क़[3] के धारे यह मुमकिन है ।
ज़मीने पाक अब नापाकियों को ढो नहीं सकती ।
वतन की शमे आज़ादी कभी गुल[4] हो नहीं सकती ।
कहो हिन्दोस्ताँ की जय--कहो हिन्दोस्ताँ की तजय ।।
वो हिन्दी नौजवाँ यानी अलम बरदारे[5] आज़ादी ।
वतन के पासबाँ[6] वो तेग़े जौहर दारे[7] आज़ादी ।
वो पाकीज़: शरार:[8] बिजलियों ने जिस को धोया है ।
वो अंगार: के जिस में ज़ीस्त[9] ने ख़ुद को समोया है ।
वो शम-ए-ज़िन्दगानी आंधियों ने जिस को पाला है ।
इक ऐसी नाव तूफ़ानों ने ख़ुद जिसको संभाला है ।
वो ठोकर जिस से गेती[10] लर्ज़: बर अंदाम[11] रहती है ।
वो धारा जिस के सीने पर अमल[12] की नाव बहती है ।

छुपी ख़मोश आहें शोरे महशर[13] बनके निकली हैं।
दबी चिंगारियां खुरशीदे ख़ावर[14] बन के निकली हैं।

बदल दी नौजवाने हिन्द ने तक़दीर ज़िदाँ[15] की।
मुजाहिद[16] की नज़र से कट गई ज़ंजीर ज़िदाँ की।

कहो हिन्दोस्तांन की जय–कहो हिन्दोस्ताँ की जय।
कहो हिन्दोस्ताँ की जय॥

"मख़दूम" मुहीउद्दीन—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलक़-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. किसान, 2. नर्क, 3. बिजली, 4. फूल, 5. झण्डा उठाने वाला, 6. रखवाला, 7 धारदार कटार, 8. चिंगारी, 9. जीवन, 10. संसार, 11. शरीर में कम्पन, 12. कर्म, 13. परलय का शोर, 14. सूर्य, 15. कारागार, 16. योद्धा।

नाल :–ए–जरस

बढ़े चलो––बढ़े चलो । बढ़े चलो–––बढ़े चलो ।।
बिरादराने नौजवाँ ! ग़ुरूरे कारवाँ हो तुम ।
जहाने पीर[2] के लिए शबावे जाविदां[3] हो तुम ।।
ब नक्शे पाए रफ़तगां[4] । बढ़े चलो––बढ़े चलो ।।
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो––बढ़े चलो ।।

उठाए सर बढ़े चलो, तने हुए ग़ुरूर से ।
तुम्हारे क़ाफ़ले की शान देखती हैं दूरसे ।।
हिमालयः की चोटियां । बढ़े चलो––बढ़े चलो ।।
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो––बढ़े चलो ।।

सलामे मौजे गंग[5] लो, मुजाहिदाने हुर्रियत[6] ।
हैं गुलफ़िशाँ[7] बहिश्त[8] से पयम्बराने हुर्रियत ।।
खुला है अर्सःए-जहां । बढ़े चलो––बढ़े चलो ।।
बिरादराने नौजवां । बढ़ चलो बढ़े चलो ।।

ख़राब बादः–ए-ख़ुदी,[9] मये अमल[10] पिए-हुए ।
अलम बदोश[11] व सफ़ ब सफ़[12] कुलाह कज[13] किए हुए ।।
मिसाले बहरे बेकरां[14] । बढ़े चलो––बढ़े चलो ।।
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो––बढ़े चलो ।।

बढ़े हुए हों हौसले चढ़ी हुई हो आसतीं ।
बदल दो सूरते जहां उलट दो सफ़हःए-ज़मीं[15] ।।
पलट दो दौरे आसमां । बढ़े चलो बढ़े चलो ।।
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो––बढ़े चलो ।।

क़सम तुम्हारे अज़्म[16] की, फ़िदा तुम्हारी शान के।
बढ़ा के हाथ तोड़ लो सितारे आसमान के ।।

झुका दो शाख़े कहकशां[17]। बढ़े चलो—बढ़े चलो ।।
बिरादरने नौजवां । बढ़े चलो—बढ़े चलो ।।

बिनाए कुहन:[18] तोड़ दो बनाओ इक जहाने नौ[19]।
जहाने नौ, जहाने नौ, ब सक़फ़े आसामने नौ[20] ।।

नए मकीं[21], नया मकां। बढ़े चलो—बढ़े चलो ।।
बिरादराने नोजवां । बढ़े चलो—बढ़े चलो ।।

न हो सवाले ईं व आं,[22] न हो तमीज़े बहरो बर[23] ।
अबस[24] है ख़ौफ़े तीरगी[25] सितारे छुप गए अगर ।।

चमक रही हैं बिजलियां। बढ़े चलो—बढ़े चलो ।।
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो—बढ़े चलो ।।

बुझे न शमे-दिल कहीं , हवा है तेज़ बाग़ की ।
अगर अंधेरी रात है, बढ़ाओ लौ चिराग़ की ।।

गरज रही हैं आंधियाँ । बढ़े चलो—बढ़े चलो ।।
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो—बढ़े चलो ।।

जनाबे ख़िज़्र[26] पीर[27] हैं, लकीर के फ़क़ीर हैं ।
कमां का साथ देंगे क्या, वो नौजवां जो तीर हैं ।।

चूं तीर जुस्त: अज़ कमां[28]। बढ़े चलो—बढ़े चलो ।।
बिरादरने नौजवां । बढ़े चलो—बढ़े चलो ।।

जो अक़्ल राह रोक दे तो उसका साथ छोड़ दो ।
जो मज़हब आके टोक दे तो उसकी क़ैद तोड़ दो ।।

हवा की तरह सर गिरां[29]। बढ़े चलो––बढ़े चलो ॥
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो––बढ़े चलो ॥

रुके न पाए जुस्तुजू[30], बिछे हैं ख़ार[31] राह में।
झुके न परचमें[32] अलम खड़े हैं दार[33] राह में॥

मिसाले गर्दे कारवां। बढ़े चलो––बढ़े चलो ॥
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो––बढ़े चलो ॥

खिले हैं फूल ज़ख़्म के, अजल[34] गले का हार है।
लहू से सुर्ख़ हैं कफ़न, यह मुज़दः ए-बहार [35] है॥

निसारे तेग़े ख़ूं फ़िशां[36]। बढ़े चलो––बढ़े चलो ॥
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो––बढ़े चलो ॥

सुनो मेरी सदा सुनो, दराए कारवां[37] हूं मैं।
मुख़द्दराते फ़ाक़ः कश[38], की दुख भरी फ़ुग़ां[39] हूं मैं॥

क़दम बढ़ाओ मेहरबां। बढ़े चलो बढ़े चलो ॥
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो––बढ़े चलो ॥

ग़रीब बच्चे क़ौम के, बिलक रहे हैं भूक से।
खुदा का अर्श[40] हिल रहा, है मामता की हूक से॥

गिरे न सर पर आसमां। बढ़े चलो––बढ़े चलो ॥
बिरादराने नौजवां। बढ़े चलो––बढ़े चलो ॥

फ़सानः हाय बेकसी[41], ज़ुबाने दर्द से सुनो।
अगर हो पहलुओं में दिल, हवाए सर्द से सुनो॥

पयामे अश्के बे कसां[42]। बढ़े चलो––बढ़े चलो ॥
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो––बढ़े चलो ॥

जो राहबर[43] ठहर गए, नहीं मक़ामे पैशो पस[44] ।
जो हम सफ़र बिछड़ गये, तो छेड़ो नालः ए-जरस ॥

सुनो "जमील" की फ़ुग़ां । बढ़े चलो---बढ़े चलो ॥
बिरादराने नौजवां । बढ़े चलो---बढ़े चलो ॥

"जमील" मज़हरी—"आज़ादी की नज़्में—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हल्कः-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. कारवां के घण्टे की आवाज़, 2. बूढ़ा संसार, 3. सदा रहने वाली जवानी, 4. जाने वालों के पांव के निशान पर, 5. गंगा की लहरों का सलाम, 6. स्वतन्त्रता सेनानी, 7. पुष्प बिखराती, 8. स्वर्ग, 9. आत्म-विश्वास के नशे में चूर, 10. कर्म की मदिरा, 11. कांधे पर झण्डा उठाए, 12. पंक्तियों में, 13. टोपी टेढ़ी किए, 14. बड़े समुंद्र की भांति, 15. धरती का का पन्ना, 16. संकल्प, 17. आकाश गंगा, 18. पुरानी बुनियादें, 19. नई दुनिया, 20. नए आसमान की छत पर, 21. रहने वाले, 22. यह और वह, 23. ख़ुश्की और तरी की पहचान, 24. बेकार, 25. अंधकार का भय, 26. एक नबी जो अभी तक जीवित हैं और भटके हुओं को राह दिखाते हैं, 27. बूढ़े, 28. कमान से छूटे तीर की भांति, 29. भारी, 30. खोज के पांव, 31 कांटे, 32. फरेहरा, 33. सूली, 34. मौत, 35. बहार की ख़ुशख़बरी, 36. रक्त बहाने वाली, 37. कारवां की आवाज़, 38. भूखी राजकुमारियां, 39. चीख़, 40. आकाश, 41 बेकसों की कथाएं, 42. बेचारों के आसूओं के संदेश, 43. राह दिखाने वाला, 44. झिझक का स्थान-समय

हमारा देस

जग से भला संसार से प्यारा ।
दिल की ठन्डक आंख का तारा ।
सबसे अनोखा सबसे नियारा ।
दुनिया के जीने का सहारा ।
प्यारा भारत देस हमारा ॥

इसके दरया, इसके समुन्दर ।
इसके संगम, इसके बंदर[1] ।
प्रेम की मूरत, प्रीत का समुंदर ।
हुस्नो मुहब्बत का गहवारा[2] ।
प्यारा भारत देस हमारा ॥

कितनी पुर कैफ़[3] इसकी अदाएं ।
कितनी दिलकश इसकी फ़िज़ाएं ।
मुश्क से बढ़कर इसकी हवाएं ।
ख़ुल्द[4] से बेहतर इसका नज़ारा ।
प्यारा भारत देस हमारा ॥

मुल्क को हासिल हो आज़ादी ।
ख़त्म हो दौरे सितम ईजादी[5] ।
दूर हो इसकी सब बरबादी ।
चर्ख़[6] पे चमके बन के तारा ।
प्यारा भारत देस हमारा ॥

हम में पैदा हो यक जाई ।
सब हों बाहम भाई भाई ।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई ।
गाएं मिलकर गीत यह प्यारा ।
प्यारा भारत देस हमारा ॥

हकीम मुहम्मद मुस्तफ़ा खां "मद्दाह" "अहमक़" फफून्दवी—आज़ादी की नज़्में संग्रहकर्ता,—"सिब्ते हसन—प्रकाशक, हलक़:-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—राष्ट्रीय अभिलखागार प्रतिबंधित साहित्य–अवाप्ति संख्या, 1712

1. घाट, 2. झूला, 3. अच्छी, 4. स्वर्ग, 5. अत्याचार का युग, 6. आकाश

गुलज़ारे वतन

फूलों का कुंजे दिलकश[1] भारत में इक बनाएं ।
हुब्बे वतन[2] के पौदे इस में नए लगाएं ।।
फूलों में जिस चमन के हो बूए जां निसारी ।
हुब्बे वतन की क़लमें हम उस चमन से लाएं ।।
ख़ूने जिगर से सींचें हर नख़्ले आरज़ू[3] को ।
अश्कों[4] से बेल-बूटों की आबरू बढ़ाएं ।।
एक एक गुल में फूंकें रूहें शमीमे वहदत[5] ।
इक इक कली को दिल के दामन से दें हवाएं ।।
फ़िरदौस[6] का नमून:अपना हो कुंजे दिलकश ।
सारे जहां की जिसमें हों जलव: गर फ़िज़ाएं ।।
छाया हो अब्रे रहमत[7] काशान:[8]-ए-चमन में ।
रिम-झिम बरस रही हों चारों तरफ़ घटाएं ।।
मुर्ग़ाने[9] बाग़ बन कर उड़ते फिरें हवा में ।
नग़में हों रूह अफ़ज़ा[10]और दिल रुबा सदाएं[11] ।।
हुब्बे वतन के लब पर हों जांफ़िज़ा[12] तराने ।
शाखों पे गीत गाएं फूलों पे चहचहाएं ।।
छाई हुई घटा हो मौसम तरब फ़िज़ा[13] हो ।
झोके चलें हवा के अशजार[14] लहलहाएं ।।
इस कुंजे दिलनशीं[15] में क़ब्ज़: न हो ख़िज़ा[16] का ।
जो ही गुलों का तख़्त:, तख़्त: हो इक जिना[17] का ।।

बुलबुल को हो चमन में सैयाद[18] का न ख़टका ।
ख़ुश ख़ुश हो शाख़े गुलपर ग़म हो न आशियां[19]का ।।
हुब्बे वतन का मिलकर सब एक राग गाएं ।
लहजः जुदा हो गरचे मुर्ग़ाने नग़मः ख़्वां[20] का ।।
एक एक लफ़्ज़ में हो तासीरे बूए उल्फ़त[21] ।
अन्दाज़ दिलनशीं हो एक एक दास्तां का ।।
मुर्ग़ाने बाग़ का हो उस शाख़ पर नशेमन[22] ।
पहुंचे न हाथ जिस तक सैयादे आसमां का ।।
मौसम हो जोशे गुल का और दिन बहार के हों ।
आलम अजीब दिलकश हो अपने गुलसितां का ।।
मिल मिल के हम तराने हुब्बे वतन के गाएं ।
बुल बुल हैं जिस चमन के गीत उस चमन के गाएं ।।

"सुरूर" जहान आबादी - "आज़ादी की नज़्में" - संग्रहकर्ता "सिब्ते हसन" - प्रकाशक, हलक़:-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य-अवाप्ति सख्या, 1712

1. दिल लुभाने वाली झाड़ी, 2. देश प्रेम, 3. उम्मीद का पौधा, 4. आंसुओं, 5. एकता की सुगंधित आत्मा, 6. स्वर्ग, 7. कृपा के बादल, 8. महल, 9. पक्षी, 10. आत्मा को बढ़ाने वाला, 11. आवाज़ें, 12. आत्मा को बढ़ाने वाले, 13. ख़ुशी को बढ़ाने वाली, 14. पेड़, 15. सुन्दर, 16. पतझड़, 17. स्वर्ग, 18. शिकारी, 19. घौंसला, 20. चहचहाने वाले, 21. प्रेम की सुगंध का असर, 22. घौंसला

तसल्ली[1]

चन्द रोज़ और मेरी जान फ़क़त चन्द ही रोज़ !

ज़ुल्म की छांव में दम लेने पे मजबूर हैं हम ।
और कुछ देर सितम[2] सह लें, तड़प लें, रोलें ।

अपने अजदाद[3] की मीरास[4] से माज़ूर[5] हैं हम ।
जिस्म पर क़ैद हैं, जज़बात पे ज़ंजीरें हैं ।

फ़िक्र[6] महबूस[7] है, गुफ़तार[8] पे ताज़ीरें[9] हैं ।
अपनी हिम्मत है के हम फिर भी जिए जाते हैं ।

जिन्दगी क्या, किसी मुफ़लिस की क़बा[10] है जिसमें ।
हर घड़ी दर्द के पैवन्द लगे जाते हैं ।

लेकिन अब ज़ुल्म की मीआद के दिन थोड़े हैं ।
इक ज़रा सब्र के फ़रयाद के दिन थोड़े हैं ।

अर्सः-ए-दहर[11] की झुलसी हुई वीरानी में ।
हम को रहना है, पे यूं ही तो नहीं रहना है ।

अजनबी हाथों का बेनाम गरांबार[12] सितम ।
आज सहना है, हमेशः तो नहीं सहना है ।

यह तेरे हुस्न से लिपटी हुई आलाम[13] की गर्द ।
अपनी दो रोज़ः जवानी की शिकस्तों[14] का शुमार ।

चांदनी रातों का बेकार दहकता हुआ दर्द।
दिल की बेसूद तड़प, जिस्म की मायूस पुकार।
चन्द रोज़ और मेरी जान फ़क़त चन्द ही रोज़ !

फैज अहमद "फैज"—"आजादी की नज्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्तेहसन"—प्रकाशक, हलक:-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार, प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. दिलासा, 2. अत्याचार, 3. बाप-दादा, 4. छोड़ी हुई सम्पत्ति, 5. वांछित, 6. सोच, 7. बन्दो, 8. बोलना, 9. सजाएं, 10. एक वस्त्र, 11. विश्व, 12. भारी, 13. दुख, 14. पराज्यों

मां की दुआ

तेरे दम से फिर वतन वालों में पैदा हो हयात[1] ।
पंजः-ए-अग़यार[2] से हो हिन्द को हासिल निजात[3] ।।

काम आजाए वतन की राह में तेरा शबाब[4] ।
ग़ैरतें ज़िदानियों[5] की फिर उलट डालें नक़ाब ।।

तू बदल डाले निज़ामे हिन्द के लैलो नहार[6] ।
यह ग़ुलाम आबाद हो आज़ाद मुल्कों में शुमार ।।

आसतीने हिन्द हो तेरे लहू से लालः फ़ाम[7] ।
पादशाहों का लक़ब पाने लगें हिन्दी ग़ुलाम ।।

हड्डियां पिस कर बने ग़ाज़ः[8] उरूसे हिन्द[9] का ।
हुस्न फिर हो जाए कुछ ताज़ः उरूस हिन्द का ।।

तेरे होंटों से ब वक्ते मर्ग[10] यह निकले सदा[11] ।
नौजवानाने वतन आगे बढ़ो आगे ज़रा ।।

"अलताफ़ मशहदी"—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्तेहसन"—प्रकाशक, हलक़ः-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—

आवाप्ति संख्या, 1712

1. जीवन, 2. विदेशियों का पंजा, 3. मुक्ति, 4. जवानी, 5. बंदियों, 6. रात-दिन, 7. लाल होना, 8. पौडर, 9. भारत की दुल्हन, 10. मरते समय, 11. आवाज़

बिदेशी मेहमान से

मुसाफ़िर भाग वक़्ते बेकसी है ।
तेरे सर पर अजल[1] मन्डला रही है ॥
तेरी जेबों में हैं सोने के तोड़े ।
यहां हर जेब ख़ाली हो चुकी है ॥
यह आलम हो गया है मुफ़लिसी का ।
के रस्मे मेंज़बानी[2] उठ चुकी है ॥
न दे ज़ालिम फ़रेबे चारः साज़ी[3] ।
यह बस्ती तुझ से अब तंग आ चुकी है ॥
मुनासिब है के अपना रास्तः ले ।
वो कश्ती देख साहिल[4] से लगी है ॥
घटा जो उस समन्दर से उठी है ।
दुरे ख़ुश आब[5] भी बरसा चुकी है ॥
मगर अब इसका आलम ही जुदा है ।
यह बदली आग बरसाती उठी है ॥
सितारः सुबह का बेनूर है अब ।
दरो दीवार पर धूप आ चुकी है ॥
हिजाबाते तास्सुब[6] उठ रहे हैं ।
हक़ीक़त जलवः फ़र्मा[7] हो रही है ॥

नसीमें नर्म रौ[8] इस गुलसितां की ।
समूमे[9] दश्त पैमा[10] बन चुकी है ॥
बगूले उठ रहे हैं, बढ़ रहे हैं।
फ़ज़ाए दह्र[11] में हलचल मची है ॥
ज़ुबां पर आएगी जो आग बन कर।
वो शै[12] सीनों में करवट ले रही है ॥
मुरत्तब[13] इक नया दस्तूर[14] होगा।
बिना[15] इक दौरे नौ[16] की पड़ रही है ॥
हिली जाती है बुनयादे क़दामत[17] ।
जवानी होश में आई हुई है ॥
यहां हर शाख़ शमशीरे बरहन:[18] ।
गुलों से ख़ून की बू आ रही है ॥
यहां के आसमाने आतिशीं[19] पर।
बग़ावत की घटा मन्डला रही है ॥
यहां से एक तूफां चल रहा है।
यहां से एक आंधी उठ रही है ॥

असरार उल हक़ "मजाज़"–"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलक:-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०) राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 171॥

1. मौत, 2. मेहमानदारी, 3. काम आने का धोखा, 4. किनारा, 5. अच्छी चमक वाला मोती, 6. पक्षपात के पर्दे, 7. सामने आना, 8. सुबह की ठण्डी हवा, 9. विषैली वायु, 10. मैदान में चक्कर लगाने वाली, 11. ज़माना, 12. वस्तु, 13. बनाना, 14. क़ानून, 15. बुनियाद, 16. नया ज़माना, 17. पुराना पन, 18. नंगी तलवार, 19. आग जैसे

आगे बढ़ेंगे

वो बिजली सी चमकी वो टूटा सितारा ।
वो शोलः सा लपका वो तड़पा शरारा[1] ।
जुनूने बग़ावत ने दिल को उभारा ।
बढ़ेंगे अभी और आगे बढ़ेंगे ॥

गरजती हैं तोपें गरजने दो उनको ।
दुहल[2] बज रहे हैं तो बजने दो उनको ।
जो हथियार सजते हैं सजने दो उनको ।
बढ़ेंगे अभी और आगे बढ़ेंगे ॥

कुदालों के फल दोस्तो तेज़ कर लो ।
मुहब्बत के साग़र[3] को लबरेज़[4] कर लो ।
ज़रा और हिम्मत को महमेज़[5] कर लो ।
बढ़ेंगे अभी और आगे बढ़ेंगे ॥

विज़ारत की मंज़िल हमारी नहीं है ।
यह आंधी है बादे बहारी[6] नहीं है ।
ज़िरः[7] हम ने तन से उतारी नहीं है ।
बढ़ेंगे अभी और आगे बढ़ेंगे ॥

हुकूमत के पिन्दार[8] को तोड़ना है ।
असीरो[9] गिरफ़्तार को छोड़ना है ।
ज़माने की रफ़्तार को मोड़ना है ।
बढ़ेंगे अभी और आगे बढ़ेंगे ॥

चटानों में राहें बनाना पड़ेंगी ।
अभी कितनी कड़ियां उठाना पड़ेंगी ।
हज़ारों कमानें झुकाना पड़ेंगी ।
बढ़ेंगे अभी और आगे बढ़ेंगे ॥

हदें हो चुकीं ख़त्म बीमो रिजा[10] की ।
मुसाफ़त[11] है अज्मे[12] सब्र आज़मा[13] की ।
ज़माने के माथे पे है ताबनाकी[14] ।
बढ़ेंगे अभी और आगे बढ़ेंगे ।

उफ़क़[15] के किनारे हुए हैं गुलाबी ।
सहर[16] की निगाहों में है बर्क़ ताबी[17] ।
क़दम चूमने आई है कामयाबी ।
बढ़ेंगे अभी और आगे बढ़ेंगे ।।

मसाइब[18] की दुनिया को पामाल[19] करके ।
जवानी की शक्लों में तप के निखर के ।
ज़रा नज़्में गेती[20] से ऊंचे उभर के ।
बढ़ेंगे अभी और आगे बढ़ेंगे ।।

महकते हुए मरग़ज़ारों[21] से आगे ।
लचकते हुए आबशारों[22] से आगे ।
बहिश्ते बरीं[23] की बहारों से आगे ।
बढ़ेंगे अभी और आगे बढ़ेंगे ।।

अली "सरदार" जाफ़री—"आजादी की नज्में" संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलक:-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. चिंगारी, 2. नगाड़ा, 3. प्याला, 4. भरा हुआ, 5. तेज, 6. बहार की हवा, 7. एक जंगी वस्त्र, 8. घमंड, 9. बन्दी, 10. आशा-निराशा, 11. यात्रा, 12. निश्चय, 13. कठिन, 14. चमक, 15. आकाश, 16. सुबह, 17. बिजली की चमक, 18. कष्ट, 19. रौंदना, 20. संसारिकता, 21. उद्यान, 22. झरने, 23. स्वर्ग

असीराने वतन की याद में

ख़ाली जाएगी न फ़र्यादे परेशाने वतन ।
रंग लाएगा कभी ख़ूने जवानाने वतन ।।
आह ऐ गर्दिशे अैयाम[1] के चोरों की जगह ।
हैं अज़ीज़ाने वतन क़ैदिए ज़िंदाने[2] वतन ।।
अब तो झुकना ही पड़ेगा तुझे ओ पीरे फ़लक[3] ।
मुल्क के नाम पे उठ्टे हैं जवानाने वतन ।।
"दास" ने ख़ूने जिगर से इसे सैराब[4] किया ।
तिशनः-एः-ख़ून[5] थी ख़ाके चमनिस्ताने वतन ।।
देखें "दत्त" और "भगत सिंह" की सूरत कब तक ।
होंगे पामाले ख़िज़ां[6] संबुलो रेहाने[7] वतन ।।
तुम पे है फ़ख़्र हमें "गांधी" व "नेहरू" से सिवा[8] ।
ऐ अज़ीज़ाने वतन ! माय[9]:- ए-ईमाने वतन ।।
तेग़[10] क़ातिल का भला हो के हर इक गोशे में ।
उसने आबाद किए गंजे शहीदाने[11] वतन ।।
इमतिहां होसलः-ए-दिल का न ले तू, क़ातिल ।
सरफ़रोशी को हैं आमादः जवानाने वतन ।।
दूर ज़िंदां[12] से है पर तुम से नहीं दूर "अख़्तर" ।
ऐ असीराने[13] वतन, शाने वतन, जाने वतन ।।

"अख़्तर" शीरानी—"आहे बेकस" उर्फ़ "आज़ादी की लहर"—संग्रहकर्ता, भाई शिव प्रसाद मुद्रक, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, जगाधरी—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1711

1. ज़माने के चक्कर, 2. कारागार, 3. बूढ़ा आकाश, 4. सींचना, 5. ख़ून की प्यासी, 6. पतझड़ का रौंदा हुआ, 7. फूलों के नाम, 8. अधिक, 9. पूंजी, 10. कटार, 11. जहां शहीदों के शव जमा किए जाएं, 12. कारागार, 13. क़ैदी

लोरी

कभी तो रहम पर आमादः बे रहम आसमाँ होगा ।
कभी तो ये जफ़ा पेशः[1] मुक़द्दर मेहरबाँ होगा ।
कभी तो सर पे अब्रे रहमते हक़[2] गुलफ़िशां[3] होगा ।
गुसरंत[4] का समाँ होगा,
मेरा नन्हा जवाँ होगा ।।

किसी दिन तो भला होगा ग़रीबों की दुआओं का ।
असर ख़ाली न जाएगा ग़म आलूद[5] इलतिजाओं[6] का ।
नतीजः कुछ तो निकलेगा फ़क़ीरानः सदाओं[7] का ।
ख़ुदा गर मेहरबाँ होगा,
मेरा नन्हा जवाँ होगा ।।

ख़ुदा रख्खे जवाँ होगा तो ऐसा नौजवाँ होगा ।
हसीनो कारदां[8] होगा दिलेरो तैग़रां[9] होगा ।
बहुत शीरी[10] ज़ुबाँ होगा बहुत शीरी बयाँ होगा ।
यह महबूबे जहाँ होगा,
मेरा नन्हा जवाँ होगा ।।

वतन और क़ोम की सौ जान से ख़िदमत करेगा यह ।
ख़ुदा की और ख़ुदा के हुक्म की इज़्ज़त करेगा यह ।
हर अपने और पराए से सदा उल्फ़त[11] करेगा यह ।
हर इक पर मेहरबाँ होगा,
मेरा नन्हा जवाँ होगा ।।

मेरा नन्हा बहादुर एक दिन हथियार उठाएगा ।
सिपाही बनके सूए[12] अर्स: गाहे रज़्म[13] जाएगा ।
वतन के दुश्मनों की ख़ून की नहरें बहाएगा ।
और आख़िर कामरां[14] होगा,
मेरा नन्हा जवाँ होगा ।।

वतन की जंगे आज़ादी में जिसने सर कटाया है ।
ये उस शैदाए मिल्लत[15] बाप का पुरजोश बेटा है ।
अभी से आलमें तिफ़ली[16] का हर अन्दाज़ कहता है ।
वतन का पासबां[17] होगा,
मेरा नन्हा जवाँ होगा ।।

है उसके बाप के घोड़े को कब से इन्तिज़ार उसका ।
है रस्त: देखती कब से फ़िज़ाए कारज़ार[18] उसका ।
हमेश: हाफ़िज़ो[19] नासिर[20] रहे परवरदिगार[21] उसका ।
बहादुर पहलवाँ होगा,
मेरा नन्हा जवाँ होगा ।।

वतन के नाम पर इक रोज़ यह तलवार उठाएगा ।
वतन के दुश्मनों को कुन्जे तुरबत[22] में सुलाएगा ।
और अपने मुल्क को ग़ैरों के पंजे से छुड़ाएगा ।
ग़ुरूरे[23] खान्दाँ होगा,
मेरा नन्हा जवाँ होगा ।।

सफ़े[24] दुश्मन में तलवार उसकी जब शोले गिराएगी।
शुजाअत[25] बाज़ुओं में (आग) बन के लहलहाएगी।
जबीं[26] की हर शिकन में मर्ग[27] दुश्मन थरथराएगी।
यह ऐसा तेग़ रां होगा,
मेरा नन्हा जवां होगा।।

सरे मैदान जिस दम दुश्मन उसको घेरते होंगे।
बजाए ख़ूं रगों में उसकी शोले तैरते होंगे।
सब उसके हमलः- ए-शेरानः[28] से मुंह फेरते होंगे।
तहो बाला[29] जहां होगा।
मेरा नन्हा जवां होगा।।

"अख्तर" शीरानी—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलकः- ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1712

1. अत्याचारी, 2. ईश्वरीय कृपा के बादल, 3. फूलों की वर्षा, 4. ख़ुशी, 5. दुखमय, 6. याचनाएं, 7. आवाज़ें, 8. समझदार, 9. कटार चलाने वाला (योद्धा), 10. मीठा, 11. प्रेम, 12. तरफ़, 13. युद्ध का मैदान, 14. सफल, 15. राष्ट्र प्रेमी, 16. बचपन, 17. रखवाला, 18. युद्ध का वातावरण, 19. रखवाला, 20. सहायक, 21. पालनहार, 22. क़ब्र का कोना, 23. गर्व, 24. पंक्ति, 25. बहादुरी, 26. माथा, 27. मृत्यु, 28. शेरों जैसा आक्रमण, 29. उलट-पलट

मैं उनके गीत गाता हूँ

मैं उनके गीत गाता हूं। मैं उनके गीत गाता हूं ।।

जो शाने[1] पर बग़ावत का अलम[2] ले कर निकलते हैं।
किसी ज़ालिम हुकूमत के धड़कते दिल पे चलते हैं।
मैं उनके गीत गाता हूं, मैं उनके गीत गाता हूं ।।

जो रख देते हैं सीनः, गर्म तोपों के दहानों पर।
नज़र से जिन की बिजली कूंदती है आसमानों पर।
मैं उनके गीत गाता हूं, मैं उनके गीत गाता हूं ।।

जो आज़ादी की देवी को लहू की भेंट देते हैं।
सदाक़त[3] के लिए जो हाथ में तलवार लेते हैं।
मैं उनके गीत गाता हूं, मैं उनके गीत गाता हूं ।।

जो पर्दे चाक[4] करते हैं हुकूमत की सियासत के।
जो दुश्मन हैं क़दामत[5] के जो हामी[6] हैं बग़ावत के।
मैं उनके गीत गाता हूं, मैं उनके गीत गाता हूं ।।

भरे मजमे में करते हैं जो शोरिश खेज़[7] तक़रीरें।
वो जिन का हाथ उठता है तो उठ जाती हैं शमशीरें[8]।
मैं उनके गीत गाता हूं, मैं उनके गीत गाता हूं ।।

वो मुफ़लिस[9] जिनकी आँखों में है परतौ[10] क़हरे यज़दाँ[11] का।
नज़र से जिनकी चेहरः ज़र्द[12] पड़ जाता है सुल्ताँ[13] का।
मैं उनके गीत गाता हूं, मैं उनके गीत गाता हूं ।।

वो देहक़ाँ[14] जिन के ख़िरमन[15]में हैं पिन्हा[16]बिजलियाँ अपनी।
लहू से ज़ालिमों के सींचते हैं खेतियाँ अपनी।
मैं उनके गीत गाता हूं, मैं उनके गीत गाता हूं ।।

वो मेहनत कश[17] जो अपने बाज़ुओं पर नाज़ करते हैं।
वो जिन की क़ुव्वतों से "देवे इसतबदाद[18]" डरते हैं।
मैं उनके गीत गाता हूं, मैं उनके गीत गाता हूं ।।

कुचल सकते हैं जो मज़दूर ज़र[19] के आस्तानों[20] को।
जो जल कर आग दे देते हैं जंगी करख़ानों को।
मैं उनके गीत गाता हूं, मैं उनके गीत गाता हूं।

झुलस सकते हैं जो शोलों से कुफ़रो दीं की बस्ती को।
जो लानत जानते हैं मुल्क में फ़िर्क़ः परस्ती को।
मैं उनके गीत गाता हूं, मैं उनके गीत गाता हूं।।

वतन के नौजवानों में नए जज़्बे जगाउंगा।
मैं उनके गीत गाउंगा मैं उनके गीत गाउंगा।
मैं उनके गीत गाता हूं, मैं उनके गीत गाता हूं।।

जां निसार "अख़्तर"—"आज़ादी की नज़्में", संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन",—प्रकाशक, हलक़-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य–
अवाप्ति संख्या, 1712

1. कांधे, 2. झण्डा, 3. सच्चाई, 4. फाड़ना, 5. पुरानापन, 6. समर्थक, 7. जोश उभारने वाली, 8. तलवारें, 9. ग़रीब, 10. झलक, 11. ईश्वर का प्रकोप, 12. पीला, 13. सम्राट, 14. किसान, 15. खलयान, 16. छुपी, 17. मेहनत करने वाले, 18. अत्याचार का देव, 19. स्वर्ण-धन, 20. ठिकाना

दावतें जंग

वो हुई लरज़िश[1] हवा में वो बिगुल बजने लगा ।
जंग के नग़मों से वो थर्राई दुनिया की फ़िज़ा ।
दिल धड़कता है फ़लक[2] पर आज इसराफ़ील[3] का ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां[4] तलवार खींच ।।

हर तरफ़, हर सम्त, कुश्तो ख़ून[5] का तूफ़ान है ।
जां बलब[6] कोई है, कोई पैकरे[7] बे जान है ।
यह समझ ले सारी दुनिया जंग का मैदान है ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच ।।

देख वो मज़दूर उट्ठे हैं बराए इन्तिक़ाम ।
हां उलटना है तुझे सरमायः दारी का निज़ाम[8] ।
क्यों नहीं होती तेरी तलवार आख़िर बे नियाम ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच ।।

गर्मियां गुफ़तार[9] में रखखी हैं किस दिन के लिए ।
आंधियां रफ़तार में रखखी हैं किस दिन के लिए ।
बिजलियां तलवार में रखखी हैं किस दिन के लिए ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच ।।

साज़े आलम[10] ख़ून के नग़मों से हमआहंग[11] है ।
मिस्ले "अर्जुन" मारके[12] में हिचकिचाना नंग[13] है ।
जंग का तू देवता है तेरी फ़ितरत जंग है ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच ।।

वो फ़लक रुत्बः[14] महल, वो मासियत[15] की ऐश गाह।
जिनमें कुंवारी लड़कियों की असमतें करती हैं आह।
ऐसा मन्ज़र देख सकती है सिपाही की निगाह?

ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच॥

झूमता चल और ख़ूंख़्वारों के सीने चीर डाल।
इक क़दम बढ़ और ग़द्दारों के सीने चीर डाल।
ज़ुल्मते शब[16] में सियःकारों[17] के सीने चीर डाल।

ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच॥

देख मैख़ाने[18] हैं वो, जा और मैख़ानों को तोड़।
मैकशों[19] के दिल में खन्जर भोंक पैमानों[20] को तोड़।
इस तरफ़ मस्जिद को ढा, उस सम्त बुत ख़ानों को तोड़।

ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फिशां तलवर खींच॥

आज इन ज़रदार[21] अक़ाओं[22] के दिल गुरदे निकाल।
इनको तोपों के दहानों से फ़ज़ाओं में उछाल।
दूर भागें तुझ से जो उनके लिए भाला संभाल।

ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच॥

जो तुझे रोटी को तरसाते थे उनको दे सदा।
दूबदू[23] आजाएं वो तेरे तो फिर गूंजे ज़रा।
डूब कर उनके लहू में तेरा ख़ूनी क़हक़हा।

ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच॥

जो न तेरी हम नवा [24] हों वो ज़ुबानें काट डाल।
ख़म शुदः[25] सी शहर यारों[26] की कमाने काट डाल ।
बे बसों के ख़ून की प्यासी सिसनानें[27] काट डाल ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच ॥

तुझको रोकेंगे ब मिन्नत[28] कितने शेख़ो ब्रहमन ।
नोए इंसानी के दुश्मन, मज़हबों के गोर कन[29] ।
हां इन्हीं के ख़ून से हों सुर्ख़ सहरा [30] व चमन ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच ॥

आएंगे ले ले के रिश्वत रश्के दारा[31] फ़ख़्रे जम[32] ।
बा फ़रावां सीमो गौहर, बा फ़रेबे चश्मे नम[33] ।
ऐसे सांपों को कुचल डालें मगर तेरे क़दम ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच ॥

जिनके आगे हाथ कांपें उन हसीनों को न देख ।
तू है जल्लादे फ़लक[34], ज़ोहरः जबीनों[35] को न देख ।
आसमां पर वार कर बढ़ कर, ज़मीनों को न देख ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच ॥

इन्क़िलाबी गीत गाता चल पर इस अंदाज़ में ।
अज़दहे[36] आतिश[37] के बल खाएं तेरी आवाज़ में।
आग लग जाए जफ़ा कारों[38] के रंगीं साज़[39] में ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच ॥

वो बुलन्दी पर है मज़दूरों का परचम आग सा ।
उसकी जानिब देख जब थकने लगें तेरे क़ुवा[40] ।
ज़ोर आजाएगा बाज़ू में तेरे "सुहराब" का ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच ॥

तू सरे दुश्मन का गाहक जंग के बाज़ार में ।
मौत का हंसता हुआ चेहरः तेरी तलवार में ।
फ़तह[41] के मुज़दे[42] तेरी तलवार की झंकार में ।
ऐ सिपाही खींच अपनी ख़ूं फ़िशां तलवार खींच ॥

मुईन अहसन "जज़बी'—"आज़ादी की नज़्में" संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलकः-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 1712

1. कम्पन, 2. आकाश, 3. यमदूत, 4. खून छिड़कती, 5. मारा मारी, 6. होंट पर जान आना, 7. शरीर, 8. शासन, 9. कथन, 10. विश्व संगीत, 11. जुड़ा हुआ, 12. संघर्ष, 13. लज्जा जनक, 14. बड़े मान सम्मान वाला, 15. पाप, 16. रात का अंधेरा, 17. पापियों, 18. मधुशाला, 19. शराबी, 20. प्यालों, 21. धनवान, 22. मालिकों, 22. आमने-सामने, 24. एक आवाज़, 25. टेढ़ी, 26. सम्राटों' 27. भाले, 28. बिनती से, 29. क़ब्र खोदने वाले, 30. जंगल, 31-32. ईरान के दो बड़े शाहों से भी महान, 33. ढेरों चांदी और मोती लेकर और आंखों में मक्कारी के आंसू लेकर, 34. आसमानी जल्लाद, 35. सितारों की भांति चमकते माथे वालियां, 36. अजगर, 37. अग्नि, 38. अत्याचारी, 39. बाजे, 40. शारीरिक अंग, 41. विजय, 42. शुभ समाचार

वतन के लिए पैग़ाम

बिगड़ी हुई वतन की बनालो, बढ़े चलो!
गिरते हुए निशां[1] को उठालो, बढ़े चलो!

आज़ाद मिस्ले सर्वे चमन[2] और सर बुलन्द।
हिन्दोस्तां के ताज़ः निहालो[3], बढ़े चलो!

दिल में कुदूरत[4] अपने शरीके सफ़र से क्या।
गुज़री हुई पे ख़ाक ही डालो, बढ़े चलो!

घबरा के रास्ते में न बैठो, दिलावरो।
मंज़िल वो सामने है ज्यालो, बढ़े चलो!

जो तेज़ गाम[5] बढ़ गए हैं उनसे जा मिलो।
जो रह गये हैं उनको मिलालो, बढ़े चलो!

मर्दानः वार ज़ारे[6] ग़ुलामी को तै करो।
कांटा भी पांव से न निकालो, बढ़े चलो!

मंज़िल बहुत क़रीब है, वो दिन नहीं है दूर।
जब गौहरे[7] मुराद को पालो, बढ़े चलो!

तिलोक चन्द "मेहरूम"—रोज़ाना "प्रताप", लाहौर (3 जुलाई, 1927 ई० सण्डे एडीशन)—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2549

1. झण्डा, 2. बाग़ का एक सर्व नामी पेड़, 3. नई पौद, 4. मन-मुटाव, 5. तेज़ चलने वाले, 6. मैदान-जंगल, 7. मोती

मजबूरियां

मुझे नफ़रत नहीं है इश्क़िय: अश्आर[1] से लेकिन ।
अभी उन को ग़ुलाम आबाद[2] में मैं गा नहीं सकता ।।

मुझे नफ़रत नहीं है हुस्ने जन्नत ज़ार[3] से लेकिन ।
अभी दौज़ख़[4] में इस जन्नत से दिल बहला नहीं सकता ।।

मुझे नफ़रत नहीं पाज़ेब[5] की झंकार से लेकिन ।
अभी ताबे निशाते[6] रक़्से महफ़िल[7] ला नहीं सकता ।।

अभी हिन्दोस्तां को आतिशीं[8] नग़में सुनाने दो ।
अभी चिंगारियों से इक गुले रंगीं[9] बनाने दो ।।

"सलाम" मछली शहरी—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलक:-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०), राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतबंधित साहित्य–अवाप्ति संस्था, 1712]

1. प्रेम भरी कविताएं, 2. ग़ुलामों की बस्ती, 3. स्वर्ग वाले, 4. नर्क, 5. पायल, 6. खुशी सहना, 7. नाच-गाने की सभा, 8. आग जैसी, 9. रंगीन फूल

अहद

जब तिलाई[1] रंग सिक्कों को नचाया जाएगा ।
जब मेरी ग़ैरत[2] को दौलत से लड़ाया जाएगा ।
जब रगे अफ़लास[3] को मेरी दबाया जाएगा ।
ऐ वतन उस वक्त भी मैं तेरे नग़मे गाऊंगा ।।
और अपने पांव से अंबारे ज़र[4] ठुकराऊंगा ।।
जब मुझे पेड़ों से उरयां[5] करके बांधा जाएगा ।
गर्म आहन[6] से मेरे होटों को दाग़ा जाएगा ।
जब दहकती आग पर मुझ को लिटाया जाएगा ।
ऐ वतन उस वक्त भी मैं तेरे नग़में गाऊँगा ।।
तेरे नग़मे गाऊंगा और आग पर सो जाऊँगा ।।
ऐ वतन जब तुझ पे दुश्मन गोलियां बरसाएंगे ।
सुर्ख़ बादल जब फ़ज़ाओं[7] पर तेरी छा जाएंगे ।
जब समन्दर आग के बुरजों से टक्कर खाएंगे ।
ऐ वतन उस वक्त भी मैं तेरे नग़में गाऊंगा ।।
तेग़[8] की झन्कार बन कर मिस्ले तूफ़ा आऊंगा ।।
गोलियां चारों तरफ़ से घेर लेंगी जब मुझे ।
और तन्हा छोड़ देगा जब मेरा मरकब[9] मुझे ।
और संगीनों पे चाहेंगे उठाना तब मुझे ।
ऐ वतन उस वक्त भी मैं तेरे नग़में गाऊँगा ।।
मरते मरते इक तमाशाए वफ़ा[10] बन जाऊंगा ।।

ख़ून से रंगीन हो जाएगी जब तेरी बहार ।
सामने होंगी मेरे जब सर्द नाशें[11] के शुमार ।
जब मेरे बाज़ू पे सर आकर गिरेंगे बार बार ।
ऐ वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नग़में गाऊँगा ।।
और दुश्मन की सफ़ों[12] पर बिजलियां बरसाऊंगा ।।
जब दरे ज़िंदाँ[13] खुलेगा बरमला[14] मेरे लिए ।
इन्तिहाई जब सज़ा होगी रवा[15] मेरे लिए ।
हर नफ़स[16] जब होगा पैग़ामे क़ज़ा[17] मेरे लिए ।
ऐ वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नग़में गाउँगा ।।
बादः कश[18] हूं ज़हर की तलख़ी[19] से क्यों घबराउँगा ।।
हुक्मे आख़िर क़त्ल गह[20] में जब सुनाया जाएगा ।
जब मुझे फांसी के तख़्ते पर चढ़ाया जाएगा ।
जब यकायक तख़्तः-ए-ख़ूनी हटाया जाएगा ।
ऐ वतन उस वक़्त भी मैं तेरे नग़में गाउँगा ।।
अह्द[21] करता हूं के मैं तुझ पर फ़िदा[22] हो जाऊंगा ।।

"साग़र निज़ामी"—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलक :–ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 1712

1. सुनहला, 2. आत्म-सम्मान, 3. ग़रीबी, 4. सोने के ढेर, 5. नंगा, 6. लोहा, 7. वातावरण, 8. कटार, 9. सवारी, 10. मित्रता, 11. शव, 12. पंक्तियों, 13. कारागार का द्वार, 14. सामने, 15. उपयुक्त, 16. सांस, 17. मृत्यु का संदेश, 18. शराबी, 19. कड़ुवाहट, 20. क़त्ल का स्थान, 21. प्रण, 22. न्योछावर

जवान जज़्बे

यह ज़ुल्मे शहनशाही[1] जिस व.क्त मिटा देंगे ।
सोई हुई दुनिया की क़िस्मत को जगा देंगे ॥

अफ़लास[2] के सीने से, शोले जो लपकते हैं ।
महलों में अमीरों के वो आग लगा देंगे ॥

हैं आज बग़ावत पर तैयार जवाँ जज़्बे[3] ।
जल्लाद हुकूमत की बुनयाद हिला देंगे ॥

यूं फूल खिलाएंगे टपका के लहू[4] अपना ।
ग़ुरबत[5] के बयाबाँ[6] को गुलज़ार[7] बना देंगे ॥

हम परचमे क़ौमी[8] को लहरा के हिमालय पर ।
दुश्मन की हुकूमत के झण्डे को झुका देंगे ॥

जो आड़ में मज़हब की हंगामः करे बरपा ।
हम ऐसे फ़सादी को गंगा में बहा देंगे ॥

सर जाए के जाए जां ऐ मादरे[9] हिन्द इक दिन ।
ज़िल्लत से ग़ुलामी की, हम तुझ को छुड़ा देंगे ॥

किस तरह संवरता है, सर देने से मुसतक़बिल[10] ।
ग़ैरों को बता देंगे, अपनों को सिखा देंगे ॥

"शमीम करहानी"—"आज़ादी की नज़्में"-संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हल्क़ः-ए-अदब, लखनऊ (194? ई०)—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 1712

1. साम्राज्री अत्याचार 2. ग़रीबी, 3. भावनाएं, 4. रक्त, 5. ग़रीबी, 6. जंगल, 7. बग़ीचा, 8. राष्ट्रीय झंडा, 9. माँ, 10. भविष्य

बेदारिए मश्रिक

इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक[1] ! इन्क़िलाब ।
वक़्त आया है के उट्ठे रूए गेती[2] से नक़ाब ॥

इन्क़िलाब ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक इन्क़िलाब !
इन्क़िलाब ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक इन्क़िलाब !

ऐ जमाले[3] शम-ए-आज़ादी[4] के परवानो ! उठो ।
सो चुके ऐ क़सरे मिल्लत[5] के निगहबानो ! उठो ।
बादए[6] बेदारिए मश्रिक़[7] के मस्तानो ! उठो ।

अब जगा भी दो बहुत कुछ सो चुका है आफ़ताब[8] ।
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक़ इन्क़िलाब ॥

नौजवानो ! अब निशाते[9] कुंजे तन्हाई[10] कहां ?
ऐ शुजाओ[11] ! तुम कहां, यह ऐश पैमाई[12] कहां ?
फूंक दो, महफ़िल को वक़्ते महफ़िल आराई[13] कहां ?

दूर फैंको सागरो पैमानः[14] ओ चंगो रबाब[15] ।
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक़ इन्क़िलाब ॥

ज़िंदगी-ताबिंदगी[16] है रूहे आज़ादी[17] के साथ ।
ज़िंदगी-पाबंदगी है रूहे आज़ादी के साथ ।
ज़िंदगी ही ज़िंदगी है रूहे आज़ादी के साथ ।

जिन्दः रहना है तो आज़ादी से कैसा इजतिनाब[18] ।
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक़ इन्क़िलाब ॥

अब भी आंखों में तुम्हारी रंगे ग़फ़लत दीदः[19] है ।
ख़ाबे मुस्तक़बिल[20] की हर ताबीर[21] ता पोशीदः[22] है ।
इन्तिज़ारे सुबह कैसा ! सुबह ख़ुद ख़ाबीदः[23] है ।

तुम ही ख़ुद बढ़ कर उलट दो मेहरे ज़र्री[24] का नक़ाब ।
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक़ इन्क़िलाब ।।

बर्क़[25] हो आंखों में, दिल में आतिशे परवानः[26] हो ।
होश भी आए तो लब पर नारए मस्तानः[27] हो ।
ख़ामुशी में जुर्रते बेदार[28] का अफ़सानः[29] हो ।

ज़िंदगी कब तक असीरे[30] एतिकाफ़ो[31] एहतिसाब[32] !
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक़ इन्क़िलाब !

ज़ीस्त[33] की क़ीमत ही क्या है पेशे मर्दाने वफ़ा[34] ।
कोई पूछे कर्बला से राज़े[35] पैमाने वफ़ा[36] ।
हां दिखा दो, ऐ शुजाओ ! जोशे अर्माने वफ़ा[37] ।

बे हुदूदो बे किनारो बे शुमारो बे हिसाब[38] ।
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े माश्रिक़ इन्क़िलाब ।।

दर्दे मिल्लत[39] ले के ऐ मिल्लत के ग़मख्वारो[40] ! चलो ।
ऐ जवानो ! ऐ दिलेरो, ऐ रज़ाकारो[41] ! चलो ।
मुन्तज़िर[42] है रहमते यज़दां,[43] वफ़ादरो ! चलो ।

यूं ही खुल जाते हैं अकसर क़सरे आज़ादी[44] के बाब[45] ।
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक़ इन्क़िलाब ।।

सुर्खिए ख़ूने वफ़ा[46] से जिंदगी गुलरेज़[47] है ।
ग़ैरते[48] मज़दूर, बर्क़[49] ख़िर्मने[50] परवेज़ है ।
जिसका तीश:[51] आज शोलाबार,[52] व आतिश खेज़[53] है ।

हां वही है कामरानो[54] कामगारो[55] कामयाब[56] ।
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक़ इन्क़िलाब ।।

शर्म आए अपनी नाकामी पे इस्तबदाद[57] को ।
अब न सैयादी[58] की जुर्रत हो किसी सैयाद को ।
तेज़ करदो शौल:हाए[59] फ़ितरते[60] आज़ाद[61] को ।

बिजलियों से सीख लो राज़े सुकूनों[62] इज़्तिराब[63] ।
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक़ इन्क़िलाब ।।

आसमाने सरफ़रोशी के सितारों की क़सम ।
पाक बाज़ों की क़सम, शब जिन्द: दारों[64] की क़सम ।
तुमको नामूसे[65] वतन के जां निसारों[66] की क़सम ।

जाग उठो देखोगे कब तक यूं ही उम्मीदों के ख़्वाब ।
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक़ इन्क़िलाब ।।

जां निसाराने वतन हैं वारिसे दारुस्सलाम[67] ।
है बहुत ऊंचा वतन पर मरने वालों का मुक़ाम ।
लेकिन इस मंजिल में अक़दामे तशद्दुद[68] है हराम[69] ।

तेग़े अख़लासो सदाक़त[70] ही है तेग़े कामयाब ।
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक़ इन्क़िलाब ।।

होशियार ! ऐ ग़ाफ़िलाने[71] हाले बर्बादे वतन ॥
ढूंढती फिरती है तुमको रूहे नाशादे[72] वतन ।
गर हुआ अब भी न तुमको पासे[73] फ़र्यादे वतन ।

आह क्या दोगे वतन के ज़र्रे ज़र्रे को जवाब ?
इन्क़िलाब ! ऐ साकिनाने अर्ज़े मश्रिक़ इन्क़िलाब ॥

"रविश" सिद्दीक़ी---"आज़ादी की नज़्में"---संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"---
प्रकाशक, हलक़:-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०) —
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य---अवाप्ति संख्या, 1712

1. पूरब के रहने वाले, 2. धरती के मुख से, 3. सौंदर्य, 4. स्वतन्त्रता का दीप, 5. राष्ट्र का महल, 6. शराब का प्याला, 7. पूरब की जागरुकता, 8. सूर्य, 9. प्रसन्नता, 10. एकांत, 11. बहादुरो, 12. ठाट-बाट, 13. सभा सजाना, 14. मदिरा के प्याले, 15. दो तरह के बाजे, 16. चमक, 17. स्वतन्त्रता की आत्मा, 18. बचना, 19. आलस्य का रंग, 20. भविष्य का सपना, 21. स्वप्न फल, 22. छुपा हुआ, 23. सोई हुई, 24. सुनहला सूरज, 25. बिजली, 26. पतंगे की लगन की आग, 27. मस्ती भरा नारा, 28. जागी हुई हिम्मत, 29. कहानी, 30. बंदी, 31. एकांत की पूजा, 32. अच्छे-बुरे का हिसाब, 33. जीवन, 34. प्रेम में डूबे वीर, 35. रहस्य, 36. प्रेम बंधन, 37. प्रेम की इच्छा, 38. जिसकी कोई सीमा, किनारा, गिनती और हिसाब न हो, 39. राष्ट्र, 40. दुःख के साथी, 41. स्वयं सेवकों, 42. प्रतीक्षा में, 43. ईश्वरीय कृपा, 44. आज़ादी के महल, 45. द्वार, 46. प्रेमयुक्त भाव की लाली, 47. फूलों भरी, 48. आत्म सम्मान, 49. बिजली, 50. बलयान, 51. हथौड़ा, 52. आग बरसाता, 53. आग उभारता, 54—56. सफल, 57. अत्याचार, 58. शिकार करने की, 59. आग की लपटें, 60. स्वभाव, 61. स्वतंत्र, 62. शांति, 63. अशांति, 64. रातों को जाग कर पूजा करने वाले, 65. आदर, 66. जान देने वाले, 67. शांति का घर, 68. हिंसक होना, 69. वर्जित, 70. सच्चाई एवं सद्भाव की कटार, 71. असावधान, 72. अप्रसन्न आत्मा, 73. लिहाज़ (ध्यान देना)

वतन का राग

भारत प्यारा देश हमारा, सब देशों से न्यारा है।
हर रुत हर इक मौसम उसका कैसा प्यारा प्यारा है।
कैसा सुहाना, कैसा सुन्दर प्यारा देश हमारा है।
दुख में, सुख में, हर हालत में भारत दिल का सहारा है।

भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है॥

सारे जग के पहाड़ों में बे मिस्ल पहाड़ हिमालः है।
पर्वत सब से ऊंचा है, यह पर्वत सबसे निराला है।
भारत की रक्षा करता है, भारत का रखवाला है।
लाखों चश्में[1] बहते हैं इसमें, लाखों नदियों वाला है।

भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है॥

गंगा जी की प्यारी लहरें गीत सुनाती जाती हैं।
सदियों की तहज़ीब[2] हमारी याद दिलाती जाती हैं।
भारत के गुलज़ारों[3] को सर सब्ज़[4] बनाती जाती हैं।
खेतों को हर्याली देती फूल खिलाती जाती हैं।

भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है॥

हरे-भरे हैं खेत हमारे, दुनिया को अन देते हैं।
चांदी सोने की कानों से हम जग को धन देते हैं।
प्रेम के प्यारे फूल की ख़ुश्बू गुलशन गुलशन देते हैं।
अम्नों अमां[5] की नेमत[6] सबको भर भर दामन देते हैं।

भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है॥

कृष्ण की वंसी ने फूंकी है रूह[7] हमारी जानों में।
गौतम की आवाज़ बसी है महलों में, मैदानों में।
"चिश्ती" ने जो दी थी मय[8] वह अब तक है पैमानों[9] में।
"नानक" की तालीम[10] अभी तक गूंज रही है कानों में।
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है ॥

मज़हब[11] कुछ हो हिन्दी हैं हम सारे भाई-भाई हैं।
हिन्दु हैं या मुस्लिम हैं या सिख हैं या ईसाई हैं।
प्रेम ने सबको एक किया है, प्रेम के हम शैदाई[12] हैं।
भारत नाम के आशिक़ हैं हम, भारत के सौदाई[13] हैं।
भारत प्यारा देश हमारा सब देशों से न्यारा है ॥

"अफ़सर" मेरठी--"आज़ादी की नज़्में"--संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"--
प्रकाशक, हलक:-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य--अवाप्ति संख्या, 1712

1. झरने, 2. सभ्यता, 3. बगीचे, 4. हरे-भरे, 5. शांति, 6. पूंजी, 7. आत्मा, 8. मदिरा, 9. प्याले, 10. शिक्षा, 11. धर्म, 12. चाहने वाला, 13. दीवाना

नौजवानों की दुनिया

वह दुनिया जिसका हर ज़र्रः जुनूं बरदोश[1] होता है ।
वह दुनिया जिसके सीने में बला का जोश[2] होता है ।।

वह दुनिया जिसमें हुस्नो इश्क़ की बातें नहीं होतीं ।
वह दुनिया जिसमें सोने के लिए रातें नहीं होतीं ।।

जहां तलवार की झंकार से चश्मे[3] उबलते हैं ।
जहां ख़ुद मौत की आग़ोश[4] में इन्सान पलते हैं ।।

जहां तूफ़ां में क़ौमियत[5] वतन की नाव खेती है ।
कमानों की कड़क में हुर्रियत[6] अंगड़ाई लेती है ।।

जहां हर दिल में आज़ादी की होती है लगन पैदा ।
जहां होता है शौक़े जां निसारी-ए-वतन[7] पैदा ।।

जहां आलाम[8] में होता है लोहे का जिगर पैदा ।
जहां होता है छिद-कर नावकों[9] से बालो पर पैदा ।।

जहां जज़बात खुददारी[10] दबाने से उभरते हैं ।
जहां शेराने जंग आवर[11] थपकने से बिफरते हैं ।।

जहां ख़ाशाक[12] तूफानों में घिर कर मुस्कुराता है ।
जहां ख़िरमन[13] शुआए बर्क़[14] से आंखें लड़ाता है ।।

जहां का चप्पा चप्पा, इन्क़िलाब आबाद होता है ।
दिमाग़ो दिल जहां ज़िन्दां[15] में भी आबाद होता है ।।

जहां मजबूर, जाबिर[16] की लहद[17] तैयार करता है ।
तवाना[18] को जहां बे दस्तो पा[19] बीमार करता है ।।

जहां मज़लूमियत[20] तौहीने[21] इस्तबदाद[22] करती है।
जहां शाहंशही[23] को बंदगी[24] बर्बाद करती है।।

जवां हिम्मत जहां तक़दीर पर क़ाने[25] नहीं होती।
कोई मुश्किल जहां तदबीर[26] में माने[27] नहीं होती।।

तुझे ऐ नौजवां ऐसा जहां[28] तैयार करना है।
इसी कोशिश में जीना है, इसी कोशिश में मरना है।।

"रज़ी" अज़ीमाबादी—"आज़ादी की नज़्में"—संग्रहकर्ता, "सिबते हसन"—प्रकाशक, हलक:-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 1712

1. जोश से भरा होना, 2. अत्याधिक जोश, 3. झरने, 4. गोद, 5. राष्ट्रीयता, 6. स्वतन्त्रता, 7. देश पर मर मिटने का शौक़, 8. कष्ट, 9. तीरों, 10. स्वाभिमानता, 11. योद्धा, 12. तिनके, 13. खलयान, 14. बिजली की लपक, 15. कारागार, 16. अत्याचारी, 17. क़ब्र, 18. स्वस्थ, 19. मजबूर (लाचार), 20. लाचारगी, 21. अनादर, 22. अत्याचार, 23. साम्राज्य, 24. निर्धनता, 25. निर्भर, 26. उपाय, 27. रुकावट, 28. संसार

सर फरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है

सर फ़रोशी[1] की तमन्ना अब हमारे दिल में है ।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए क़ातिल में है ॥

रहरवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में ।
लज़्ज़ते सहरा नवरदी[2] दूरिये मंज़िल में है ॥

वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आस्मां ।
हम अभी से क्या बताएं क्या हमारे दिल में है ॥

आके मक़तल[3] में यह क़ातिल कह रहा है बार बार ।
क्या तमन्नाए शहादत भी किसी के दिल में है ॥

ऐ शहीदे मुल्को मिल्लत तेरे जज़बों पर निसार ।
तेरी क़ुरबानी का चर्चा ग़ैर की महफ़िल में है ॥

अब न अगले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़ ।
एक मिट जाने की हसरत अब दिले "बिस्मिल" में है ॥

राम प्रसाद "बिस्मिल"---"वतन का राग"---संग्रहकर्ता, अकसीर सियालकोटी---
मुद्रक, नश्तर इस्टीम प्रेस, लाहौर---
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य---अवाप्ति संख्या, 1638

1. सर कटाना, 2. भटकना, 3. क़त्ल की जगह

वो चुप रहने को कहते हैं जो हम फर्याद करते हैं

इलाही ख़ैर वो हर दम नई बेदाद[1] करते हैं ।
हमें तुहमत लगाते हैं जो हम फ़र्याद करते हैं ।।
कभी आज़ार[2] देते हैं कभी बेदाद करते हैं ।
मगर इस पर भी सौ जी से हम उनको याद करते हैं ।।
असीराने क़फ़स[3] से काश ये सैयाद[4] कह देता ।
रहो आज़ाद होकर हम तुम्हें आज़ाद करते हैं ।।
रहा करता है अहले ग़म को क्या-क्या इंतिज़ार उसका ।
के देखें वो दिले नाशाद[5] को कब शाद करते हैं ।।
यह कह-कह कर बसर की उम्र हमने क़ैदे उल्फ़त[6] में ।
वो अब आज़ाद करते हैं, वो अब आज़ाद करते हैं ।।
सितम[7] ऐसा नहीं देखा, जफ़ा[8] ऐसी नहीं देखी ।
वो चुप रहने को कहते हैं जो हम फ़र्याद करते हैं ।।
यह बात अच्छी नहीं होती यह बात अच्छी नहीं करते ।
हमें बेकस समझ कर आप क्यों बरबाद करते हैं ।।
कोई बिस्मिल[9] बनाता है जो मक़तल[10] में हमें "बिस्मिल" ।
तो हम डर कर दबी आवाज़ से फ़र्याद करते हैं ।।

राम प्रसाद "बिस्मिल"—"कांग्रेस पुष्पांजलि"—संग्रहकर्ता, टेकचन्द भारती"—मुद्रक, फ़ारूक़ी प्रेस, सहारनपुर (1930 ई०)—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 1652

1. अत्याचार, 2. सताना, 3. पिंजरे के बंदी, 4. शिकारी, 5. अप्रसन्न, 6. मुहब्बत की क़ैद, 7–8. अत्याचार, 9. गला काटना, 10. हत्यास्थल

दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को

हम भी आराम उठा सकते थे घर पर रह कर ।
हम को भी पाला था मां बाप ने दुख सब सह कर ।
वक्ते रुखसत उन्हें इतना भी न आए कह कर ।
गोद में आंसू कभी टपके जो रुख[1] से बहकर ।
तिफ़्ल[2] उनको ही समझ लेना जी बहलाने को ।।

देश सेवा ही का बहता है लहू[3] नस नस में ।
अब तो खा बैठे हैं चित्तौड़ के गढ़ की क़स्में ।
सरफ़रोशी की अदा होती हैं यूं ही रस्में ।
भाई खंजर के गले मिलते हैं सब आपस में ।
बहनें तैयार चिताओं पे हैं जल जाने को ।।

नौजवानो जो तबीयत में तुम्हारे खटके ।
याद कर लेना कभी हमको भी भूले भटके ।
आप के अज़वे[4] बदन होवें जुदा कट कट के ।
और सर चाक हो माता का कलेजा फट के ।
पर न माथे पे शिकन आए क़सम खाने को ।।

अपनी क़िस्मत में अज़ल[5] से ही सितम[6] रख्खा था ।
रंज[7] रख्खा था महन[8] रख्खा था, ग़म[9] रख्खा था ।
किस को परवाह थी और किसमें यह दम रख्खा था ।
हमने जब वादिए ग़ुर्बत[10] में क़दम रख्खा था ।
दूर तक यादे वतन आई थी समझाने को ।।

अपना कुछ ग़म ही नहीं पर यह ख़्याल आता है ।
मादरे हिन्द पे कब तक यह ज़वाल[11] आता है ।
देश आज़ादी का कब हिन्द में साल आता है ।
क़ौम अपनी पे तो रह रह के मलाल[12] आता है ।
मुन्तजिर[13] रहते हैं हम ख़ाक में मिल जाने को ।।

राम प्रसाद "बिस्मिल"---"आहे बेकस" उर्फ़ "आज़ादी की लहर"---संग्रहकर्ता, भाई शिव प्रसाद--मुद्रक, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, जगाधरी—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य-अवाप्ति संख्या, 1711

1. मुख, 2. बच्चा, 3. रक्त, 4. अंग, 5. अनादिकाल, 6. अत्याचार, 7-9. दुख यात्रा में, 11. पतन, 12. दुख 13. प्रतीक्षा में

उम्मीद की झलक

उरूजे[1] कामयाबी पर कभी हिन्दोस्तां होगा ।
रिहा[2] संयाद[3] के हाथों से अपना आशियां होगा ॥

चखाएंगे मज़ा बरबादिए गुलशन का गुलचीं[4] को ।
बहार आजाएगी उस दिन जब अपना बाग़बां[5] होगा ॥

वतन की आबरू[6] का पास[7] देखें कौन करता है ।
सुना है आज मक़तल[8] में हमारा इमतिहां होगा ॥

जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हरगिज़ ।
न जाने बाद मुर्दन[9] मैं कहां और तू कहां होगा ॥

यह आए दिन की छेड़ अच्छी नहीं ऐ ख़न्जरे क़ातिल ।
बता कब फ़ैसला उन के हमारे दर्मियां होगा ॥

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले ।
वतन पर मरने वालों का यही बाक़ी निशां होगा ॥

कभी वह दिन भी आएगा कि जब स्वराज देखेंगे ।
जब अपनी ही ज़मीं होगी, और अपना आसमां होगा ॥

"अज्ञात" (सम्भवतः राम प्रसाद "बिस्मिल")--"क्रांति गीतांजलि"--संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक, हुलास वर्मा "प्रेमी"---मुद्रक, भारतीय प्रेस, देहरादून (1930 ई०) राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य---अवाप्ति संख्या, 1773

1. उत्थान, 2. छूट जाना, 3. शिकारी, 4. फूल तोड़ने वाला, 5. माली, 6. मान, 7. लिहाज़, 8. हत्यास्थल, 9. मरना

वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना

रवा[1] है बुलबुले शैदा[2], चमन के वास्ते मरना।
वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना॥

वतन से दूर क्या परदेस जाएं हज़रते "बिस्मिल"।
नहीं बेहतर कहीं दो गज़ कफ़न के वास्ते मरना॥

दीगर[3]

ख़ाक[4] होना है मुझे ख़ाक की हस्ती[5] क्या है।
चार दिन बाद बतादूंगा के मस्ती क्या है॥

वो बुलन्दी पे हैं, आज उनका सितारा है बुलन्द।
इससे आगाह[6] नहीं कुछ भी के पस्ती[7] क्या है॥

नेसती[8] से उन्हें आगाह करो ऐ "बिस्मिल"।
जो समझते ही नहीं दिल में के हस्ती क्या है॥

राम प्रसाद "बिस्मिल"--"इन्क़िलाब ज़िन्दाबाद की लहर" उर्फ़ "आज़ादी का फूल"-प्रकाशक, भाई शिव प्रसाद--मुद्रक, फ़ारूक़ी प्रेस, सहारनपुर--
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य--अवाप्ति संख्या, 2609

1. उपयुक्त, 2 चाहने वाली, 3. अन्य, 4. धूल, 5. अस्तित्व, 6. जानकार, 7. गिरावट, 8. न होना

शहीदे काकोरी अशफ़ाकुल्लाह खां की आखरी नज़्म

(यह नज़्म शहीद अशफ़ाक़ुल्लाह ख़ां ने गिरफ़तार होने से पांच दिन पहले लिखी थी।)

बहार आई है शोरिश[1] है जुनूने फ़ितनः सामां[2] की ।
इलाही ख़ैर रखना तू, मेरे जेबो गरीबां की ॥

भला जज़बाते उल्फ़त[3] भी कहीं मिटने से मिटते हैं ।
अबस[4] हैं धमकियां दारोरसन[5] की और ज़िदां[6] की ॥

वो गुलशन जो कभी आज़ाद था गुज़रे ज़माने में ।
मैं हूं शाखे़ शकिस्तः[7] हां उसी उजड़े गुलिस्तां की ॥

नहीं तुमसे शिकायत हम सफ़ीराने[8] चमन मुझको ।
मेरी तक़दीर ही में था क़फ़स[9] और क़ैद ज़िदां की ॥

ज़मी दुश्मन ज़मां दुश्मन, जो अपने थे पराए हैं ।
सुनोगे दास्तां क्या तुम मेरे हाले परेशां की ॥

यह झगड़े और बखे़ड़े मेट कर आपस में मिल जाओ ।
अबस तफ़रीक़[10] है तुम में यह हिन्दू और मुसलमॉ की॥

सभी सामाने इशरत[11] थे, मज़े से अपनी कटती थी।
वतन के इश्क़ ने हमको हवा खिलवाई ज़िदॉ की ॥

बे हम्दिल्लाह चमक उट्ठा सितारः मेरी क़िस्मत का ।
के तक़लीदे हक़ीक़ी[12] की अता[13] शाहे शहीदाँ[14] की ॥

इधर ख़ौफ़े ख़िज़ाँ[15] है, आशियाँ[16] का ग़म उधर दिल को ।
हमें यकसां[17] है तफ़रीहे चमन और क़ैद ज़िंदाँ की ॥

"अशफ़ाक़ुल्लाह ख़ां"—माहनामा "रिसाला कीर्ति', अमृतसर (मई, 1930 ई०)-
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2642

1. तेज़ी, 2. आतंक उठाने वाला पागलपन, 3. मुहब्बत, 4. बेकार, 5. सूली—बेड़ी, 6. कारागार, 7. टूटा हुआ, 8. साथ चहचहाने वाले, 9. पिंजरा, 10. अन्तर करना, 11. ख़ुशी, 12. वास्तविक अनुसरण, 13. प्रदान करना, 14. शहीदों का राजा अर्थात् इमाम हुसैन, 15. पतझड़, 16. घोंसला, 17. बराबर

तरानः-ए-जंग

बढ़ो बहादुरो बढ़ो ! अलम[1] वतन का खोल कर ।
करो मुक़ाबलः उदु[2] का तेग़[3] तोल तोल कर ॥
वतन की आन तुमसे है वतन की शान हो तुम ही ।
वतन की लाज तुमसे है, वतन का मान हो तुम ही ॥
वतन के हलकः हाए ग़म[4] बहादुरी से काट दो ।
ख़लीजे[5] बुज़दिली को अपनी ख़ाके पा से पाट दो ॥
फ़लक[6] को लाख बैर हो—उदु को लाख लाग हो ।
तुम्हारी सद्दे राह[7] आज ख़ून हो न आग हो ॥
लड़ो तो इस तरह लड़ो बहादुरी निसार हो ।
मुक़ाबलः हो मौत से तो मौत शर्मसार हो ॥
ग़नीम[8] को ढकेल दो उदु के सर पे जा चढ़ो ।
ज़फ़र[9] तुम्हारे हाथ है—बढ़े चलो—बढ़ो ! बढ़ो ॥
वो नार : हाए दिल शिकन[10] नहीबे राद[11] बन गए ।
गरज के मर्दे सफ़ शिकन[12] रक़ीबे राद[13] बन गए ॥
बहादुरों की हिम्मतों को इज़्ने जंग[14] मिल गया ।
वो ज़िन्दगी के रंग में क़ज़ा[15] का रंग मिल गया ॥
कटेंगे सर टलेंगी अब्र बलाएं मुल्को क़ौम की ।
कुमक[16] को आ रही हैं वो दुआएं मुल्को क़ौम की ॥

"विक़ार" अंबालवी—"आज़ादी की नज़्में,,—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—
प्रकाशक, हलक :-ए- अदब, लखनऊ (1940 ई०)-
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 1712

1. झंडा, 2. शत्रु, 3. कटार, 4. दुख की कड़ियां, 5. खाड़ी, 6. आसमान, 7. रास्ते की रुकावट, 8. शत्रु, 9. कामयाबी, 10. दिल को तोड़ देने वाले नारे, 11. बिजली की कड़क, 12. सेना की पंक्तियों को तोड़ने वाले, 13. बिजली की कड़क से सामना करने वाले, 14. युद्ध की आज्ञा, 15. मृत्यु, 16. मदद

तरानः-ए-आज़ादी[1]

भारत के ऐ सपूतो आओ गले लगाएं ।
अपनी तबाहियों का अफ़सानः कह सुनाएं ।
सब एक होके नग़मे आज़ादियों के गाएं ।
पिछली मुसीबतों को अब दिल से भूल जाएं ।
भारत की पाक देवी मिलने को आ रही है ।
आज़ादियों का झण्डा हमराह[2] ला रही है ।।
इक नूर[3] है जो सर से पा[4] तक बरस रहा है ।
गोया मसर्रतों[5] का चश्मा उबल रहा है ।
अन्दाज़ वालिहानः[6] अक़दाम[7] जां फ़िज़ा[8] है ।
हर ज़र्रः-ए-चमन अब बेदार[9] हो गया है ।
मानिन्दे रंगो बू[10] हैं हम हिन्द के चमन में ।
कितनी ही मिल्लतें[11] हों सब एक हैं वतन में ।।
अब वक़्त आ गया है उटठें बहार बनकर ।
फूलों की अंजुमन के नक़्शो निगार[12] बनकर ।
तारे रबाबे[13] हस्ती[14], मौजे शरार[15] बनकर ।
जोशे अमल[16] की ज़ौ[17] में इक ताजदार[18] बनकर ।
गुल्ज़ारे हुर्रियत[19] में कुछ ताज़ः गुल खिलादें ।
पेशानिए[20] वतन पर धब्बा जो है मिटादें ।।

"उमर" अंसारी—"आज़ादी की नज्में"—संग्रहकर्ता, "सिब्ते हसन"—प्रकाशक, हलकः-ए-अदब, लखनऊ (1940 ई०)-

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 1712

1. स्वतन्त्रता का गीत, 2. साथ, 3. प्रकाश, 4. पांव, 5. ख़ुशियों, 6. हार्दिक मिलन, 7. पग उठाना, 8. लुभावना, 9. जागना, 10. रंग एवं सुगंध की भांति, 11. क़ौमें, 12. चिह्न व चित्र, 13. एक बाजा, 14. अस्तित्व, 15. चिंगारियों की मौज, 16. कार्य की धुन, 17. चमक, 18. ताजवाला, 19. स्वतंत्रता, 20. माथा

पयामे बेदारी

उठो नौजवानो ! उठो नौजवानो !

उठो चश्मे ग़फ़लत[2] ज़रा मल के देखो ।
दिगरगूं[3] है हालत उठो चल के देखो ।।

नए वलवले हैं ।
नए हौसले हैं ।
नए दौर के सब जवां मनचले हैं ।।

उठो इन जवानों का पैग़ाम[4] सुन लो ।
नहीं है यह हंगामे[5] आराम सुन लो ।

उठो नौजवानो ! उठो नौजवानो !

दिलेरो[6] उठो वक़्त है इम्तहां का ।
उठो तोड़कर जाल ख़ाबे गिरां[7] का ।।

यह गफ़लत बुरी है ।
यह आदत बुरी है ।
ख़ुदा जानता है यह हालत बुरी है ।।

यही हाल है तो परेशान होगे ।
अभी वक़्त है फिर पशेमान[8] होगे ।

उठो नौजवानो ! उठो नौजवानो !

करो अपने दिल में कुछ एहसास पैदा ।
के हों जां निसारे वतन "दास" पैदा ।।

बनो मर्दे मैदां ।
करो जान क़ुरबां ।

बलिदान है नौजवानों के शायां[9] ।।

वतन पर तसद्दुक़[10] करो ज़िन्दगानी ।
के यह मौत है जीस्ते जाविदानी[11] ।।

उठो नौजवानो ! उठो नौजवानो !

जवानो नहीं वक़्त अब पेशो पस[12] का ।
के यह "रोग" है अब तुम्हारे ही बस का ।

तुम्हीं हो मसीहा ।
करो कुछ मदावा[13] ।
जवानो ! वफ़ा क यही है तक़ाज़ा !

वफ़ा के लिए जान पर खेल जाओ ।
यह इक खेल है आन पर खेल जाओ ।।

उठो नौजवानो ! उठो नौजवानो !

सुनो उठके पैग़ामे "लालो" "जवाहर" ।
बढ़ो कट मरो जां निसारो वतन पर ।।

जो आज़ाद होगा ।
तो आबाद होगा ।
वगरनः यूं ही देश बर्बाद होगा ।।

उठो नौजवानो ! समां[14] को बदल दो ।।
जहां[15] तो जहां, आसमां को बदल दो ।।

उठो नौजवानो ! उठो नौजवानो !

उठो इन्तहा हो गई बे दिली की ।
उठो गर तुम्हें क़द्र[16] है ज़िंदगी की ।।

कफ़न ज़ेबे सर[17] हो ।
तो सर हाथ पर हो ।
क़ज़ा[18] का न मुतलक़[19] किसी को ख़तर[20] हो ।।

चलो सूए[21] मैदान बनके सिपाही ।
वतन के पुजारी वतन के सिपाही ।।
उठो नौजवानो ! उठो नौजवानो !

ज़रा तो वतन की ग़रीबी को देखो ।
सियह बख़्तियो[22] बद नसीबी[23] को देखो ।।

उठो जां निसारो ।
वतन के सितारो ।
ग़ुलामी की लानत[24] को सर से उतारो ।।

क़सम खाओ स्वराज लेकर रहेंगे ।
कहो ! कल नहीं, आज लेकर रहेंगे ।।
उठो नौजवानो ! उठो नौजवानो !

अगरचे यह मंज़िल निहायत कड़ी है ।
हवादिस[25] का ख़तर: यहां हर घड़ी है ।।

जफ़ा[26] में न डरना ।
बला से न डरना ।
यहां तक के अपनी क़ज़ा से न डरना ।।

बला से अगर जान जाती है, जाए ।
मगर आंच अपने वतन पर न आए ।।
उठो नौजवानो ! उठो नौजवानो !

फ़ीडम[27] नहीं धमकियों से मिलेगी ।
यह नेमत तो क़ुर्बानियों से मिलेगी ।।

शहादत के प्यासे ।
निडर हर जफ़ा से ।
वतन को छुड़ाएंगे दामे[28] बला से ।।

जो हिम्मत है दिल में तो "साबिर" यक़ीं है ।
के आज़ाद होना भी मुश्किल नहीं है ।।

नौबहार सिंह "साबिर" टोहानवी—"पयामे बैदारी"—लेखक, सरदार नौबहार सिंह "साबिर"—मुद्रक, चन्द्रगुप्त प्रेस, दिल्ली-

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2606

1. जागरुकता का संदेश 2. सोई हुई आंखे, 3. खराब, 4. संदेश, 5. समय, 6. वीरों, 7, गहरी नींद, 8. पछताना, 9. अनुरूप, 10. न्योछावर, 11. सदा रहने वाला जीवन, 12. हिचकिचाना, 13. उपाय, 14. वातावरण, 15. संसार, 16. मूल्य, 17. सर पर 18. मौत 19. बिलकुल 20. भय। 21. ओर 22-23. दुर्भाग्य' 24. धिक्कार' 25. आपत्तियां' 26. अत्याचार- 27. आज़ादी' 28. जाल

आसारे आज़ादी

न क्यों हों अहले भारत[1] बरसरेपैकारे[2] आज़ादी ।
के दुनियां में हर इक इन्सान है हक़दारे आज़ादी ॥

लगालो हथकड़ी जब तक तुम्हारा ज़ोर है, इक दिन ।
इन्हीं हाथों से होना है अलम बरदारे[3] आज़ादी ॥

हटालो सर से ख़ंजर या उड़ादो सर को खंजर से ।
बहर सूरत मयस्सर[4] है हमें दस्तारे[5] आज़ादी ॥

न बैठेंगे, न दम लेंगे, बराबर बढ़ते जाएंगे ।
पहुंच जाएंगे ज़ेरे साय:-ए-दीवारे आज़ादी[6] ॥

पिला क़ातिल के हम जामे[7] शहादत को तरस्ते हैं ।
इसी मय[8] को पिया करते हैं बाद: ख़्वारे[9] आज़ादी ॥

ज़रा ठहरो मुझे फांसी का फन्द: चूम लेने दो ।
यही तो है शहीदों के गले का हारे आज़ादी ॥

मुहिब्बाने[10] वतन बेताब हैं कुरबान होने को ।
हुवैदा[11] हो गये हैं देश में आसारे आज़ादी[12] ॥

वो दिल ही दिल नहीं पहलू में कोई संग रेज़ः[13] है ।
न जिस में जोशे हुब्बे क़ौम[14] हो न प्यारे आज़ादी ।।
वो आंखें दाग़े पैशानी[15] हैं उनको फोड़ दो "साबिर" ।
नहीं मौजूद जिन में हसरते दीदारे[16] आज़ादी ।।

नौबहार सिह "साबिर" टोहानवी–– "पयामे बेदारी" ––लेखक, नौबहार सिह "साबिर" टोहानवी —मुद्रक, चन्द्रगुप्त प्रैस, देहली,—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य––अवाप्ति संख्या, 2606]

1. भारवातसी, 2. लड़ना, 3. झंडा उठाना, 4,प्राप्त, 5. पगड़ी, 6. स्वतन्त्रता की दीवार के न.चे. 7 प्याला, 8. मदिरा, 9. शराबो, 10. प्रेमी, 11.प्रकट, 12. आज़ादी के चिन्ह, 13. पत्थर का टुकड़ा, 14. राष्ट्रप्रेम 15. माथा, 16. दर्शन की इच्छा

शहाबे साकिब[1]

इलाही हिन्द कब आज़ाद होगा ।
दिले मुज़तर[2] हमारा शाद[3] होगा ।।

उजाड़ा बाग़बां[4] ने ख़ुद जिसे हो ।
गुलिस्तां[5] वह कभी आबाद होगा ।।

न हो गर मार्शल ला से तसल्ली ।
तो इक हरबा[6] नया ईजाद होगा ।।

मुसीबत में किसी का दस्ते उलफ़त[7] ।
करम[8] पर यह करम ईज़ाद[9] होगा ।।

जला दे सोज़े[10] दिल से जिस्में ख़ाकी ।
तेरा उजड़ा जहां आबाद होगा ।।

कटेगी आख़िरश[12] उस दिन गुलामी ।
यह दिल कम्बख़्त जब आज़ाद होगा ।।

कन्हैया लाल "साक़िब,"—हफ़तावार "कड़क", लाहौर (18 मार्च, 1930 ई०)—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य–अवाप्ति संख्या, 2371

1. जलता हुआ तारा, 2. दुखी दिल, 3. प्रसन्न, 4. माली, 5. उद्यान (बगीचा) 6. हथियार, 7. प्रेम भरा हाथ, 8. कृपा, 9. अधिक, 10. दिल की जलन, 11. मिट्टी का शरीर, 12. अन्त

नोहः-एः-वतन[1]

सद हैफ़[2] के भारत है गिरफ़तारे[3] महन[4] वाए-ऐ वाए वतन वाए[5]।
पामाले सितमहाय खिज़ां[6] है यह चमन वाए-ऐ वाए वतन वाए ।।

इक सम्त[7] निफ़ाक़[8] एक तरफ़ जेहले ज़लालत[9] ना गुफ़्तः[10] है हालत ।
फिर उस पे गुलामी का ये सैलाबे क़फ़स[11] वाए-ऐ वाए वतन वाए ।।

बरसों से है इस देश पर अग़यार[12] का क़ब्जः-अशरार[13] का कब्जः ।
हैं बुलबुले शैदा[14] की जगह ज़ाग़ो ज़ग़न[15] वाए-ऐ वाए वतनवाए ।।

जब देखिए अग़यार की इक तुरफ़ःजफ़ा है-महशर[17] सा बपा[18] है ।
रोते हैं गले मिल के जवानाने वतन वाए-ऐ वाए वतन वाए ।।

ना गुफ़्तःबेह हालत है अब इस उजड़े चमन की-मेरे प्यारे वतन की।
ऐ वाए वतन, वाए वतन, वाए वतन, वाए-ऐ वाए वतन वाए ।।

"जानबुल"—हफ़्तावार कड़क,लाहौर (18 मार्च, 1930 ई०)-
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2371

1. देश का शोक, 2. सौ बार अफ़सोस, 3. बंदा, 4. शोक, 5. अफसोस, 6. पतझड़ के अत्याचार से रौंदा हुआ, 7. ओर, 8 खोट, 9. अज्ञानता में भटकना, 10. न कहने योग्य, 11. पिंजरा, 12. विदेशियो, 13. अत्याधिक दुष्ट, 14. न्योछावर होने वाली बुलबुल, 15. चील कौवे ,16 नया अत्याचार, 17. प्रलय, 18. उपस्थित

ग़ज़ल

क़ौम[1]का दर्दे मुहब्बत क़ौम के प्यारों में है ।
है वही आज़ाद जो मुल्की गिरफ़्तारों में है ॥
आतिशे[2] हुब्बे वतन है पाराहाए क़ल्ब[3] में ।
क़ौम का सोज़े मुहब्बत[4] मेरे अंगारों में है ॥
देख ऐ मसरूफ़े राहत[5] देख ऐ इशरत पसन्द[6] ।
तेरी रुसवाई[7] ज़माने भर के बाज़ारों में है ॥
क्या तेरे दिल में भी है हुब्बे वतन,[8] दर्दे वतन ।
तू भी क्या इसके गिरफ़्तारों में, बीमारों में है ॥
क़ौम की आवाज़ पर लब्बैक[9] कह मैदां में आ ।
तेरा दावा है तू बाग़ैरत[10] है खुद्दारों[11] में है ॥
गर सआदत मन्द[12] है तो काट इसकी बेड़ियां ।
मादरे हिन्दोस्तां भी अब गिरफ़्तारों में है ॥
क़ब्ज़ः-ए-अग़यार[13] में महबूस[14] है,मजबूर है ।
अलमदद[15] ऐ अहले हिम्मत हिन्द लाचारों में है ॥
गाह[16] बज्में वाज़[17] में है गाह बज़्में रक़्स[18] में ।
तू भी "अख़्तर" किस मज़े का आदमी यारों में है ॥

ललिता प्रसाद "अख़्तर" सहारनपुरी—"इन्क़िलाब (जिन्दःबाद) की लहर" उर्फ़ "तूफ़ाने हिन्द"—मुद्रक, फ़ारूक़ी प्रेस, सहारनपुर –
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1658

1. राष्ट्र, 2. अग्नि, 3. दिल के टुकड़े. 4. प्रेम की गर्मी, 5. आराम करने वाला, 6. विलासी, 7. बदनामी, 8. देशभक्ति, 9. उपस्थित हो जाना, 10. अभिमान, 11. अभिमानी, 12. आज्ञाकारी, 13. विदेशियों के अधिकार में, 14. बंदी, 15. सहायता करो, 16. कभी, 17. उपदेश सभा, 18. नृत्य सभा

वतन कैद से अब छुड़ाना पड़ेगा

मुहब्बत का हल्क़ः[1] बढ़ाना पड़ेगा ।
के रंगे दुई को मिटाना पड़ेगा ।।

क़दम राहे हक़[2] पर जमाना पड़ेगा ।
शुजाअत[3] का जौहर दिखाना पड़ेगा ।।

वतन की मुहब्बत में ऐ हिन्दियों अब ।
ज़रो[4] माल अपना लुटाना पड़ेगा ।।

ज़रा नींद से अब तो जागो ख़ुदारा ।
बहुत सोए मैदां में आना पड़ेगा ।।

लिबासे ग़ुलामी जलाना पड़ेगा ।
वतन क़ैद से अब छुड़ाना पड़ेगा ।।

अगर तुम हो हिन्दी तो यह याद रखना ।
के सर को वतन पर कटाना पड़ेगा ।।

हुआ गर न तै अपने भारत का क़िस्सः ।
तो कूए शहीदां[5] बसाना पड़ेगा ।।

हैं हिन्दू मुस्लमान दोनों बराबर ।
अब आपस में उनको निभाना पड़ेगा ।।

किया ज़ुल्म जिसने हमारे वतन पर ।
मज़ः उनको उसका चखाना पड़ेगा ।।

उन्हें ख़ूब गोली चलाने दो यारो ।
हमें अपना चरख़ः चलाना पड़ेगा ।।

तरक़्क़ी अगर चाहते हो वतन की।
गला आफ़तों[6] में फंसाना पड़ेगा ॥

हमें जर्मनों का भी बावा समझना।
जो बिगड़े तो लंदन को जाना पड़ेगा ॥

सुनो नौजवानो ! ये कहता है "उस्मां"।
के ज़ालिम को नीचा दिखाना पड़ेगा ॥

"उस्मान" हामिद— "दर्दे वतन"— संग्रहकर्ता, कामरेड "उस्मान" हामिद— मुद्रक, अब्बासी लिथो आर्ट प्रेस, कराची—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2633

1. क्षेत्र 2. सत्यमार्ग 3. बहादुरी, 4. सोना, 5. शहीदों की गली, 6. कष्ट

इत्तिहाद

हालत बहुत ख़राब है हिन्दोस्तान की ।
कुछ फ़िक्रे चारः साज़िए[1]बीमार कीजिए ।।

आपस की खींच तान में कुछ फायादः नहीं ।
मौक़ूफ़[2] रोज़ रोज़ की तकरार कीजिए ।।

अन्जाम आप देख चुके इख़्तिलाफ़ का ।
अब इत्तिहादे[3] क़ौम पे इसरार कीजिए ।।

बेजा है यह के फ़िर्क़ः परस्ती के जोश में ।
बे जा मुतालबात की भरमार कीजिए ।।

है इत्तिहाद ही में निजात अहले हिन्द की ।
इस अम्रे वाक़ई[4] से न इन्कार कीजिए ।।

हरगिज़ नहीं है हिन्दू व मुस्लिम में फ़र्क़ कुछ ।
क्यों इमतियाज़े[5] काफ़िरो दींदार कीजिए ।।

बेदार पहले होजिए ग़फ़लत के ख़ाब से ।
फिर इंतिज़ारे दौलते बेदार[6] कीजिए ।।

मनोहर सहाय "अनवर"—"आहे बेकस" उर्फ़ "आजादी की लहर"—संग्रहकर्ता, भाई शिव प्रसाद— मुद्रक, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, जगाधीरी—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—आवाप्ति संख्या, 1711

1. उपचार, 2. रोकना, 3. एकता, 4. सच्चाई, 5. अन्तर, 6. जागना

एक तरही ग़ज़ल के मुनतख़ब[1] अश्आर[2]

बाग़ी हूं मैं अज़ल[3] से बग़ावत शिआर[4] हूं ।
कम मुझ सा बाग़ियों में कोई नामवर है आज ॥

है शीरख़्वारगी[5] से बग़ावत जो मेरा विर्द[6] ।
मेरी हर एक बात बग़ावत असर है आज ॥

लाई हैं रंग मेरी बग़ावत सराइयां[7] ।
यानी दयारे हिन्द[8] बग़ावत का घर है आज ॥

है उससे बढ़ के और बग़ावत का क्या सुबूत ।
मफ़क़ूद[9] हिन्दियों से फ़िरंगी का डर है आज ॥

"मिस्टर डलड़ बावा साहब बहादुर"—रोज़ाना 'वीर भारत,' लाहौर (2 मार्च, 1930 ई० पोलिटिकल तरही मुशाएरा)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2497

1. चुने हुए, 2. छंद, 3. अनादिकाल, 4. विद्रोही, 5. बचपन, 6. जाप, 7. विद्रोही कार्य, 8. भारत स्थान, 9. अप्राप्य

कहीं पीछे न हटना मर्दे मैदान वफा होकर

उठो ऐ नौजवानो ! जोशे रहमत[1] की घटा होकर ।
जगा दो ग़ाफ़िलाने हिन्द[2] को बांगे दरा[3] होकर ।।

तुम्हारी मुनतज़िर[4] है शौकतो तौक़ीरें[5] मुस्तक़बिल[6] ।
अमर हो जाओ आज़ादीए भारत पर फ़िदा[7] होकर ।।

फिर आई है मनाने के लिए इस दौर में तुम को ।
वो आज़ादी जो तुम से रूठ बैठी थी ख़फ़ा होकर ।।

क़दम जो बढ़ चुका है, और बढ़ना चाहिए आगे ।
कहीं पीछे न हटना मर्दे मैदाने वफ़ा[8] होकर ।।

ग़लत साबित करो यह क़ौल[9] देखो लोग कहते हैं ।
के आज़ादी का चरचः रह गया इक तज़किरा[10] होकर ।।

न दें अग़यार[11] ताने[12] अज़्म[13] की नाकामयाबी पर ।
के बच्चों का तमाशः था, हुआ और रह गया होकर ।।

यह जज़्बः जो हुआ है अज़ सरे नौ[14] मुल्क में पैदा ।
समझ लो कुछ न कुछ इसका रहेगा फ़ैसला होकर ।।

कोई हद भी है आख़िर जौरो इसतबदाद[15] की साहब ।
कोई कब तक रहे ख़ामोश मजबूरे जफ़ा[16] होकर ।।

तिलिस्मे सामरी[17] को तोड़ डालो अपनी क़ुव्वत[18] से ।
सरे "फ़िरऔन" पर दो ज़र्ब[19] "मूसा"[20] का असा[21] होकर ।।

बता दो हम वही हैं जिन से लरज़ां[22] सारा आलम[23] था ।
करो आज़ाद अब भारत को वक़्फ़े मारिक:[24] होकर ।।
अगर अहसास है कुछ तुमको ज़िंदाने[25] ग़ुलामी का ।
तो ज़ंजीरे ग़ुलामी तोड़ दो , निकलो रिहा[26] होकर ।।

कुंवर हरी सिंह "जरी" — "आहे बेकस" उर्फ़ "आज़ादी की लहर" संग्रहकर्ता ,भाई शिव प्रसाद — मुद्रक, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, जगाधरी—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—आवप्ति संख्या ,1711

1. कृपा, 2. भारत के सोए लोग, 4. कारवां का घण्टा, 4. प्रतीक्षा में, 5. आन बान, 6. भविष्य ,7. न्योछावर, 8. प्रेम क्षेत्र, 9. कथन, 10. वार्तालाप, 11. विदेशी, 12. व्यंग, 13. दृढ़ निश्चय, 14. फिर से, 15-16. अत्याचार, 17. "सामरी" का जादू, 18. शक्ति 19. चोट मारना ,20. मिस्र के राजा "फिरऔन" के युग के नबी, 21. छड़ी, 22. कांपता हुआ, 23. विश्व , 24. युद्ध में जूझना, 25. कारागार, 26. छुटना

शामे गुरबत

देखता हूं छा रही है, हर तरफ़।
शामे ग़ुरबत[1] आज हिन्दुस्तान में ॥

यह भी कोई ज़िन्दगी है जब नहीं।
ख़ुश्क टुकड़ा क़िस्मते इन्सान में ॥

सैंकड़ों फ़ाक़ों के मारे जा बसे।
क़ौम के फ़रज़न्द[2] क़बरस्तान में ॥

हाकिमों[3] के सग[4] हैं पलते दूध पर।
आपकी दौलत से इंग्लिस्तान में ॥

पर तुम्हें मिलती नहीं नाने जवीं[5]।
जान आए किस तरह से जान में ॥

मालो दौलत जा रहा है रात दिन।
लुट के इंग्लिस्तान में, जापान में ॥

सब ग़ुलामी के करिश्मे[6] हैं "अली"।
आज ग़ुरबत है जो हिन्दुस्तान में ॥

अली हुसैन शाह "अली"— "सदा –ए– दर्द"—लेखक, सैयद अली हुसैन शाह "अली"—
मुद्रक, रंजीत बर्क़ी प्रेस, सियालकोट—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य— अवाप्ति संख्या, 2307

1. ग़रीबी की शाम, 2. बेटे 3. शासक, 4. कुत्ते, 5. जौ की रोटी, 6. करतब

ग़ज़ल

क्या हवा चलती है तलवार दो धारा होकर ।
हौसला मुझको बचाएगा किनारा होकर ।।

क़ौम[1] के वास्ते यह जान जो मिट जाएगी ।
नाम चमकेगा मेरे बाद सितारा होकर ।।

मरके मिट्टी से भी निकलेगी सदा[2] हाए वतन ।
चल गई सीस पे बेदाद[3] जो आरा होकर ।।

मरके भी दर्द न भारत का मिटेगा दिल से ।
ख़ून तड़पेगा मेरा जोश से पारा होकर ।।

किशन चन्द "जैबा"—"इन्क़िलाब (ज़िन्दःबाद) की लहर" उर्फ़ "तूफ़ाने हिन्द"—
मुद्रक, फ़ारुक़ी प्रेस, सहारनपुर—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1658

1. राष्ट्र, 2. आवाज़, 3. अत्याचार

क़ुर्बान गाहें आज़ादी

मुक़र्रर[1] नक़दे जां[2] है जिसे[3] आज़ादी का बैआन:[4] ।
यहां चढ़ते हैं सर, दस्तार[5] है बे क़द्र नज़रान:[6] ।।

बताऊं मैं तुझे दस्तूरे क़ुरबां गाहे[7] आज़ादी ।
अगर दिल में हो तेरे इज़्तिराबो[8] सोज़े परवान:[9] ।।

विक़ारे क़ौम[10] की बुनयाद ज़ौक़े[11] सरफ़रोशी है ।
नहीं बनता ज़मीं पर ईंट गारे से यह काशान:[12] ।।

जहां हर एक ज़र्र: तिशन:[13]-ए-ख़ूने शहीदां[14] है ।
क़दम उस सर ज़मीं पर तूने रक्खा है दिलेरान:[15] ।।

वफ़ा कोशों[16] की सफ़[17] में काम क्या राहत परस्तों[18] का ।
के इस मेहफ़िल में बस परवानगी पाता है परवान: ।।

तलब में शौक़े सादिक़[19] हो अगर पैदा तो बन जाए ।
दिले सद चाक[20] ज़ुल्फ़े शाहिदे मक़सूद[21] का शान:[22] ।।

लिया जब सर हथेली पर तो फ़िक्रे आक़िबत[23] कैसी ।
क़दम मैदां में रक्खा है तो रख हिम्मत भी मर्दान: ।।

इनामुल्लाह खां "नासिर" हसन पुरी—"आहे बेकस" उर्फ़ "आज़ादी की लहर" —संग्रहकर्ता, शिव प्रसाद— मुद्रक, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, जगाधरीज—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1711

1. निश्चित, 2. जान की पूंजी, 3. वस्तु, 4. खरीद से पूर्व कुछ मूल्य चुकाना, 5. पगड़ी, 6 भेंट, 7. भेंट स्थल, 8. तड़प, 9. पतंगे की जलन, 10. राष्ट्र सम्मान, 11. शौक़, 12. महल, 13. प्यासा, 14. शहीदों का खून, 15. वीरता पूर्वक 16. प्रेम खोजी, 17. पंक्ति, 18. विलासी, 19. सच्चा, 20. टुकड़े टुकड़े दिल, 21. लक्ष्य की प्रेमिका के बाल, 22. कंघी ,23. परलोक

निदाए वक्त

खबर है बन गए हो क्या से क्या हिन्दोस्तां वालो ।
नहीं तुम सा कोई बे मुद्दआ हिन्दोस्तां वालो ।।
रहोगे ताबके[1] इस तरह पामाले ख़िज़ां[2] होकर ।
न होने दो वतन नज़रे फ़ना[3] हिन्दोस्तां वालो ।।
जहां तक हो सके तफ़रीक़े बाहम[4] को मिटा डालो ।
बनो आपस में तुम दर्द आशना हिन्दोस्तां वालो ।।
ख़ुदा के लुत्फ़ से कश्ती तुम्हारी पार उतरेगी ।
बनो तुम आप उसके नाख़ुदा[5] हिन्दोस्तां वालो ।।
ज़रूरत के मुताबिक हर तरफ़ हंगामः आरा[6] हो ।
अगर चाहो करो महशर बपा[7] हिन्दोस्तां वालो ।।
निदाए वक़्त[8] है जहमत कशों[9] के हाथ नुसरत[10] है ।
न कोसो अपना बख़्ते नारसा[11] हिन्दोस्तां वालो ।।
रहे जुग जुग जहां में तबलः-ए-अत्तार[12] "गांधी" का ।
हुई है इत्र बेज़[13] इस से फ़िज़ा हिन्दोस्तां वालो ।।
है वक़्ते इम्तिहां अब देखिए क्या कर दिखाते हो ।
बड़ा हो जाए काम ईसार[14] का हिन्दोस्तां वालो ।।
"फ़िदा" बिजली की फ़रमाइश का हासिल है यह लख़्ते दिल[15] ।
कड़क इसकी तुम्हें देगी जगा हिन्दोस्तां वालो ।।

पंडित दत्ता प्रसाद "फ़िदा"—हफ़तावार "कड़क" लाहौर (18 मार्च, 1930 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2371

1. कब तक, 2. पतझड़ का रौंदा हुआ, 3. मृत्यु, 4. आपसी झगड़े, 5. नाविक, 6. हंगामा करना, 7. परलय लाना, 8. समय की आवाज़, 9. मज़दूर, 10. सफलता, 11. दुर्भाग्य, 12. ख़ुशबू की डिब्बी, 13. महकती, 14. बलिदान, 15. दिल के टुकड़े

रावी की हवाएं

सम्ते[1] रावी से दिल अफ़रोज़[2] हवाएं आईं।
ले के आज़ादी का पैग़ाम फ़ज़ाएं आईं।।
कांग्रेस केम्प से आज़ादी के बादल उट्ठे।
खै़र मक़दम[3] करो रहमत[4] की घटाएं आईं।।
जिस्म तो क्या है वो जानों को भी देंगी हरकत।
हम को बेदार[5] बनाने वो सदाएं[6] आईं।।
ग़ैर की जो कभी शर्मिन्दः-ए-एहसाँ[7] न बनी।
फिर उमंगों पे वही अपनी अदाएं आईं।।
नज़्र इक़बाल[8] की देने को दुआएं आईं।
मादरे हिन्द[9] की लेने को बलाएं आईं।।
दौर ज़ुल्मत[10] का गया रौशनी का दौर आया।
नूर[11] आज़ादी का बरसाने शुआएं[12] आईं।।
हमपे हरदम जो जफ़ाएं[13] रहा करती थीं सवार।
बख़्शवाने को वही अपनी ख़ताएं[14] आईं।।
जौर[15] और जब्र[16] का होता है ज़मानः रुख़सत।
हाथ बांधे हुए देखो वो जफ़ाएं आईं।।
झूमती झामती पैग़ामें अमल[17] लाई हैं।
गर्मियाँ करती हुई ठंडी हवाएं आईं।।

"सागर" अकबराबादी-- "आहे बेकस" उर्फ़ "आज़ादी की लहर"—संग्रहकर्ता, शिव प्रसाद— मुद्रक, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, जगाधरी,—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1711

1. ओर, 2. लुभावनी, 3. अभिनंदन, 4. कृपा, 5. जगाने, 6. आवाज़ें, 7. आभारी, 8. सफलता, 9. भारत माँ, 10. अंधेरे का युग, 11. प्रकाश, 12. किरणें 13. अत्याचार, 14. गलतियाँ, 15-16. अत्याचार, 17. कर्म का संदेश

इन्किलाब ! इन्किलाब !!

इन्क़िलाब ज़िन्द:बाद, ज़िन्द:बाद इन्क़िलाब।
इन्क़िलाब लाजवाब, लाजवाब इन्क़िलाब।
इन्क़िलाब ! इन्क़िलाब !!

इधर से सर फ़रोशियां, और उसपे गर्म जोशियां।
उधर से सितम कोशियां[1], इधर से हैं ख़मोशियां।
ख़मोशियों में इन्क़िलाब, ज़िन्द:बाद इन्क़िलाब।
इन्क़िलाब ! इन्क़िलाब !!

उधर से डंडा बाज़ियां, इधर से बे नियाज़ियां[2]।
उधर से फ़ितन: साज़ियां[3], कमाल की गम्माज़ियां[4]।
इधर से जांगुज़ारियां[5], उधर से तुर्क ताज़ियां[6]।
उन ही की हील: साज़ियां[7], बपा[8] करेंगी इन्क़िलाब।
इन्क़िलाब ! इन्क़िलाब !!

उधर हैं चीर: दस्तियां[9], इधर हैं फ़ाक़: मस्तियां।
हैं आरज़ू की बस्तियां, यह इन्क़िलाबी हस्तियां।
जो झेलती हैं सख़्तियां, है सख़्तियों में इन्क़िलाब।
इन्क़िलाब ! इन्क़िलाब !!

चाहते हो इन्क़िलाब, सख़्तियों से इजतिनाब[10] ।
नौजवां का इन्क़िलाब, शान्दार इन्क़िलाब ।
रूस का था इन्क़िलाब, एशिया का इन्क़िलाब ।
हिन्द का यह इन्क़िलाब है जहां[11] का इन्क़िलाब ।
वह भी था इक इन्क़िलाब, यह भी है इक इन्क़िलाब ।
हर तरफ़ से इन्क़िलाब, लो वह देखो इन्क़िलाब ।
आ रहा है इन्क़िलाब, ज़िन्दःबाद इन्क़िलाब ।

इन्क़िलाब ! इन्क़िलाब ! !
ज़िन्दःबाद इन्क़िलाब ॥

शिवलाल "बिस्मिल"—"इंसाफ़ का ख़ून"—लेखक, पंडित शिव लाल "बिस्मिल"—मुद्रक, नरेन्द्र इलेक्ट्रिक प्रेस, लायलपुर—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबिंधित साहित्य—

अवाप्ति संख्या, 2312

1. अत्याचार करना, 2. परवाह न करना, 3. उपद्रव, 4. षडयंत्र, 5. जान दे देना, 6. आतंक, 7. बहाने बाज़ी, 8. ?ाईम (उपस्थित), 9. अत्याचार, 10. परहेज़, 11. विश्व

गुलामी का तौक उतार फेंको

निसार मुल्क पे हो जा के ज़िन्दगी है यही ।
विक़ार[1] क़ौम का क़ायम हो, तू रहे न रहे ॥

न घटने पाए किसी तरह आबरू-ए-वतन ।
न कर ग़म इसका, तेरी आबरू रहे न रहे ॥

उतार फेंक ग़ुलामी का तौक़ गर्दन से ।
बला से इस में सलामत गुलू[2] रहे न रहे ॥

जुदा कभी भी न हो आरज़ू-ए-आज़ादी ।
दिलों में और कोई आरज़ू रहे न रहे ॥

वतन के ग़म में बहा अश्के ख़ू[3] तो बेहतर है ।
तेरी रगों में रवाँ फिर लहू रहे न रहे ॥

जहाँ में चाहिये कुछ तुझ को क़ुव्वते बाज़ ।
नुमूदे[4] शौकतो शाने उदू[5] रहे न रहे ॥

"अजहर हसन जाहिदी"—"आहे बेकस" उर्फ़ "आज़ादी की लहर"—संग्रहकर्ता, भाई शिव प्रसाद— मुद्रक, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, जगाधरी –

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबिंधित साहित्य—

अवाप्ति संख्या, 1711

1. गरिमा, 2. गला, 3. ख़ून के आसूँ, 4. दिखावा, 5. शत्रु

शहादत की तमन्नाएं

ग़ुलामी क्या है इक तस्वीर है इंसाँ की ज़िल्लत की।
यही ज़िल्लत मुहाफ़िज़[1] है सितमरानो[2] की इज़्ज़त की।।

जहां तौहीन[3] करते हैं हुक़ूक़े आदमियत[4] की।
उसी बस्ती में होती है शकिस्त[5] अहकामे फ़ितरत[6] की।।

अगर है देखना तस्वीर जौरे क़ैसरियत[7] की।
तो देखो ग़ौर से हालत मेरी महकूम[8] मिल्लत[9] की।।

ज़मीने देहली व लाहौर कहती है सुन ऐ हिन्दी।
मेरे हर एक ज़र्रे में है तुरबत[10] तेरी हसरत[11] की।।

जहां चरखे़[12] वतन पर छा रहा हो अब्रे महकूमी[13]।
दिखाई दे वहां क्या शक्ल मेहरे आदमियत[14] की।।

वो हगांमः बदामन भी हों लेकिन दब ही जाएगी।
फ़ुग़ाने अह्ले मेहनत[15] से नवाऐं साज़े दौलत[16] की।

हमारे जोशे आज़ादी के पर्दे में है वो जज़्बः।
निहां[17] हैं जिसके दामन में तमन्नाऐं शहादत की।।

"अजहर" अमृतसरी—– माहनामा (मासिक) 'रिसाला कीर्ति', अमृतसर (मार्च, 1930ई०)—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—-अवाप्ति संख्या, 2645

1. रक्षक, 2. अत्याचार करना, 3. अपमान, 4. मानव अधिकार, 5. पराजय, 6. प्राकृतिक नियम, 7. साम्राजी अत्याचार, 8. ग़ुलाम, 9. राष्ट्र, 10. समाधी, 11. तमन्ना, 12. आकाश, 13. गुलामी के बादल, 14. मानवता, 15. मेहनत करने वालों की चीख़, 16. साम्राजी आवाज़े, 17. छुपी हुई

ऐ हुर्रियत की देवी ! हिंदोस्तान आजा

नारों में ग़ाज़ियों[1] के--नग़मों में शायरों के ।
ख़त्बों[2] में वाइज़ों[3] के अश्कों[4] में ज़ाहिदों[5] के ।
ऐ हुर्रियत[6] की देवी ! हिन्दोस्तान आजा ॥
है तुझ से हम को उल्फ़त[7]--दिलको है तेरी हसरत[8] ।
है ग़ैर अपनी हालत--इस वक़्त है ज़रूरत ।
ऐ हुर्रियत की देवी ! हिन्दोस्तान आजा ॥
जोशे फ़िरंग तुझसे--सब सुलहो जंग तुझसे ।
सारी उमंग तुझसे--सब रागो रंग तुझ से ।
ऐ हुर्रियत की देवी ! हिन्दोस्तान आजा ॥
नाक़ूस[9] की फ़ुग़ां[10] में--आवाज़:-ए-अज़ां[11] में ।
गुलशन में गुलसितां में, हां हां इसी खिज़ां[12] में ।
ऐ हुर्रियत की देवी ! हिन्दोस्तान आजा ॥
"नेहरू" की इलतिजा[13] में "आज़ाद" की सदा[14] में ।
"गांधी" की आत्मा में और हिन्द की दुआ में ।
ऐ हुर्रियत की देवी ! हिन्दोस्तान आजा ॥
रहमत[15] का अब्र[16] छाया हक़[17] ने यह दिन दिखाया ।
अपना भी वक़्त आया--आज़ाद कर ख़ुदाया ।
ऐ हुर्रियत की देवी ! हिन्दोस्तान आजा ॥

सैयद "मक़बूल" हुसैन-- 'रिसाला कीर्ति', अमृतसर (अप्रैल 1930 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2331

1. योद्धाओं–वीरों, 2. उपदेश, 3. उपदेश देने वाला, 4. आंसुओं, 5. त्यागियों, 6. स्वतंत्रता, 7. प्रेम, 8. इच्छा, 9. घण्टा, 10. चीख़, 11. अज़ान की आवाज़, 12. पतझड़, 13. प्रार्थना, 14. आवाज़, 15. कृपा, 16. बादल, 17. सत्य

मौत बेहतर है अगर आज़ादिएकामिल नहीं

मांगा पहले अब न मांगेंगे, मगर लेंगे ज़ुरूर ।
हक़्क़े आज़ादी, के हम हक़दार हैं साइल[1] नहीं ।।

ज़िन्दगी आज़ादगी, आज़ादगी है ज़िन्दगी ।
मौत बेहतर है अगर आज़ादिए कामिल[2] नहीं ।।

कर गया चट तेरी मेहनत का समर[3] सरमाय: दार[4] ।
तुझ को फ़ाक़े के सिवा मज़दूर ! कुछ हासिल नहीं ।।

है सवैयत[5] से अयाँ[6] आज़ादिए कामिल के याँ ।
माल, माले क़ौम है, मिलकियते कामिल नहीं ।।

कान खोदें और ज़मीं जोतें किसान और पेश:वर ।
आह ! हगांमे तमत्तो[7] कुछ इन्हें हासिल नहीं ।।

जाग ऐ "मनसूर" देखो वो निदा[8] आने लगी ।
क़ौम की दौलत है दौलत, दौलते काहिल[9] नहीं ।।

फीरोज उद्दीन "मन्सुर" —माहनामा 'रिसाला कीर्ति', अमृतसर, (जुलाई, 1929 ई.)—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2649

1. भिखारी, 2. पूर्ण स्वराज, 3. फल, 4. पूंजीपति, 5. सोवियत रूस, 6. स्पष्ट, 7. कमाई के समय, 8. प्रकार, 9. व्यर्थ श्रम

हिन्दुस्तानियों का गीत

दुनियां को दिखा देंगे हम ख़ुल्द[1] का नज़्ज़ारः ।
फिर होगा वतन अपना तहज़ीब[2] का गहवारः ।।

देखेंगे नए जलवे हम रूह की मुक्ति के ।
कर देंगे फ़ना तुझ को ऐ ख़्वाहिशे अम्मारः[3] ।।

छेड़ा है जो मुतरिब[4] ने फिर नगमः ए-आज़ादी ।
आंखों से रवाँ आँसू, हैं सूरते फ़व्वारः ।।

कब तक हमें रक्खेगा ऐ चर्खे सितम पेशः[5] ।
सर गश्तःओ[6] आवारः दरमान्दः[7] व बेचारः ।।

शमशीरे सितम[8] अपना क्या नक्श मिटाएगी ।
हम लेंगे जनम भारत ! मर कर यहीं दौबारः ।।

पहुचाएंगे हम ठण्डक जलते हुए सीनों को ।
हम उनकी दवा होंगे जो क़ल्ब[9] हैं सदपारः[10] ।।

दिल जिसका न भर आए औरों की मुसीबत पर ।
है बारे ज़मीं[11] बेशक वो हस्ती-ए-नाकारः[12] ।।

ज़ुल्मत[13] की घटा "दर्शन" हो जाएगी सद पारः ।
पहुंचेगा बुलन्दी पर जब क़ौम का सैयारः[14] ।।

लाला शगन चन्द "दर्शन"—"आहे बेकस" उर्फ़ "आज़ादी की लहर"—
संग्रहकर्ता, शिव प्रसाद—मुद्रक, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, जगाधरी—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1711

1. स्वर्ग, 2. सभ्यता, 3. तुच्छ इच्छाएं, 4. गवैया, 5. अत्याचारी आकाश, 6. परेशान, 7. भटका हुआ, 8. अत्याचार, 9. दिल, 10. सैकड़ों टुकड़े, 11. धरती का बोझ, 12. बेकार अस्तित्व, 13. अंधेरा, 14. विमान

जन्नत से भी अज़ीज़ है ख़ाक वतन मुझे

मर कर मिली है चादरे ख़ाके वतन मुझे।
मिट्टी ने इस ज़मीं की दिया है कफ़न मुझे ।।

भारत की गर्दे राह[1] है मुश्के ख़ुतन[2] मुझे।
जन्नत से भी अज़ीज़ है ख़ाके वतन मुझे ।।

चुप लग गई है अब नहीं ताबे सुख़न[3] मुझे।
मुहरे दहन[4] है तेरी जबीं[5] की शिकन मुझे ।।

चश्मे करम[6] है तुझसे बुते तेग़ ज़न[7] मुझे।
रूठी हुई निगाह नहीं दिल शिकन[8] मुझे ।।

रास आए क्या फ़िराक़[9] में सैरे चमन मुझे।
गुन्चे[10] दिखा रहे हैं जबीं पर शिकन मुझे ।।

मिट मिट के गर्दे राहे वतन बन रहा हूं मैं।
पीसे हज़ार गर्दिशे चर्खे कुहन[11] मुझे ।।

अकसीर[12] है नज़र में मेरी ख़ाके पाक[13] हिन्द।
उजड़ा हुआ दयार[14] है फ़ख्रे ज़मन[15] मुझे ।।

सोज़ो गुदाज़े ग़म[16] का हूं अफ़सानः-ए-ख़मोश[17]।
समझो बरंगे साज़[18] सरापा सुख़न[19] मुझे ।।

मैं ग़ुन्चए फ़सुर्दः[20] हूं गुल्ज़ारे दहर[21] में।
बादे बहार[22] कर न सकी ख़न्दः ज़न[23] मुझे ।।

लेता हूं हादसाते[24] ज़मानः से मैं सबक़।
इबरत[25] का है मुक़ाम यह दारुल महन[26] मुझे ।।

मैं हो गया हूं गर्दिशे[27] दौराने कारज़ार[28] ।
अब इन्क़िलाबे दहर नहीं दिल शिकन मुझे ।।

चकरा रहा हूं गर्दिशे चर्ख़े कुहन से मैं ।
मिल जाए काश फ़ुर्सते यकदम ज़दन[29] मुझे ।।

फिर तेरी ख़ाक सुर्मः-ए-अहले निगाह[30] हो ।
ऐ हिन्द फिर दिखा वही शाने कुहन[31] मुझे ।।

काबः में, बुतकदः में, कलीसा[32] में, दैर[33] में ।
हर जा[34] नज़र पड़ा वही जलवः फ़िगन[35] मुझे ।।

मक़तल[36] में बर्क़[37] मुझसे कशीदः[38] है तेग़े[39] यार ।
तड़पा रही है दर्द से बांकी दुल्हन मुझे ।।

महाराज बहादुर "बर्क़"—"ग्राहे बेकस" उर्फ़ "ग्राज़ादी की लहर"—संग्राहकर्ता,
शिव प्रसाद—मुद्रक, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, जगाधरी—
राष्ट्रीय ग्रभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
ग्रवाप्ति संख्या, 1711

1. रास्ते की धूल, 2. खुतन देश की कस्तूरी, 3. बात करने की हिम्मत, 4. मुंह पर मुहर, 5. माथा, 6. कृपा की ग्रांख, 7. कटार चलाने वाले, 8. दिल तोड़ने वाली, 9. जुदाई, 10. कलियां, 11. बूढ़े ग्रासमान का चक्कर, 12. ग्रमोघ, 13. पवित्र मिट्टी, 14. बस्ती, 15. विश्व से उत्तम, 16. दुख का पीड़ा व जलन, 17. चुप-कथा, 18. बाजे की भांति, 19. सर से पांव तक काव्य, 20. मुर्झाई कली, 21. संसार का बगीचा, 22. बहार ऋतु की हवा, 23. हंसाना, 24. घटनाएं, 25. शिक्षा पाना, 26. शोक का घर, 27. चक्र, 28. संघर्षमय, 29. एक सांस की फ़ुर्सत, 30. देखने वाले, 31. पुरानी, 32. गिरजाघर, 33. यहुदियों का मंदिर, 34. हर जगह, 35. प्रकाश देता, 36. हत्यास्थल 37. बिजली, 38. खिंचा हुग्रा, 39. मित्र की कटार

जज़्बाते बासिर

गुलामी फ़ितरते बरहम[1] की हैबतनाक[2] लानत है।
गुलामी क़हरे यज़दानी[3] की इक मलऊन[4] सूरत है ।।

गुलामी की रगों में, ख़ूं है लेकिन जोश उनक़ा[5] है ।
गुलाम इस गुलशने हस्ती में महरूमें तमन्ना[6] है ।।

ज़माने में सुकूं ना आशना[7] क़ल्बे[8] गुलामी है ।
यह दाग़ अफ़सोस रूए आदमियत[9] पर दवामी[10] है ।।

गुलामी में पड़ा रहना ख़िलाफ़े रम्ज़े फ़ितरत[11] है ।
गुलाम इस दौरे आज़ादी में नंगे आदमियत[12] है ।।

गुलामों ताबके[13] महरूमें[14] आज़ादी रहोगे तुम ।
बताओ ताबके यह ज़ुल्म की सख़्ती सहोगे तुम ।।

उठो और तोड़ दो मिल कर यह ज़ंजीरें गुलामी की ।
यही ख़्वाहिश है "गांधी" की, यही मुझ जैसे आमी[15] की ।।

सेवक राम "बासिर"—हफ़तावार 'कड़क', लाहौर (18 मार्च, 1930 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2371

1. क्रुद्ध प्रकृति, 2. भयानक, 3. ईश्वरीय प्रकोप, 4. तुच्छ, 5. न होना, 6. जिसकी इच्छा पूरी न हो, 7. अशान्त, 8. दिल, 9. मानवता का मुख, 10. सदा रहने वाला, 11. प्रकृति के रहस्य, 12. मानवता हेतु लज्जा-जनक, 13. कब तक, 14. जिसे न मिला हो, 15. आम आदमी

शोल: नवाई[1]

हुकूमत की बुनयाद ढाये चला जा ।
जवानों को बाग़ी बनाए चला जा ।।

बरस आग बनकर फ़िरंगी के सर पर ।
तकब्बुर[2] की दुनिया को ढाए चला जा ।।

जुनूने बग़ावत न हो जिन सरों में ।
उन्हें ठोकरों से उड़ाए चला जा ।।

ग़रीबों के टूटे चराग़ों की लौ से ।
अमीरों के ऐवाँ[3] जलाए चला जा ।।

शहीदाने मिल्लत[4] की सौगन्द तुझको ।
ये परचम यूंही लहलहाए चला जा ।।

परख़चे उड़ा डाल अरबाबे ज़र[5] के ।
[6]ग़रीब्रों को बाग़ी बनाए चला जा ।।

गिरा डाल क़सरे[6] शहनशाहियत को ।
अमारत[7] के माबद[8] जलाए चला जा ।।

ए०एच० "साहिर"—हफ़तावार 'अफ़ग़ान', बम्बई (25 सितम्बर, 1939 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2579

1. आवाज़ में आग की लपक, 2. घमण्ड, 3. महल, 4. क़ौम, 5. धनवान, 6. महल, 7. साम्राज्यवाद, 8. मन्दिर

कानपुर का खूनी मंजर

(२० मार्च का जंगी वाक़ेआ)

वो शहीदे तेग़े जफ़ा[1] हूं मैं, जिसे आसमां ने मिटा दिया ।
मेरे लब से निकली न आह तक मुझे गोलियों से उड़ा दिया ।।

वो बहाईं ख़ून की नद्दियाँ के पुकारा अर्श[2] भी अलअमाँ[3] ।
वो पलट पलट के सितम[4] किए के "हलाकू ख़ां" को भुला दिया ।।

हमीं जां निसार[5] हैं हिन्द के, हमीं दिल फ़िगार[6] हैं हिन्द के ।
हमें पास मह्रो वफ़ा[7] का है उन्हें जान देके दिखादिया ।।

कोई बैठ कर न संभल सका कोई दौड़कर न उछल सका ।
वो मुस्लिमों के जवान लाल तहे ख़ाक[8] जिन को मिला दिया ।।

कोई कुश्त: कुश्त:[9] था बे कफ़न कोई लोट पोट था ख़स्त: तन[10] ।
जो किसी में बाक़ी रही रमक़[11] तो पलट के चरक: लगा दिया ।।

भला कौन करता था हक़ रसी[12] के सरहाने रोती थी बेकसी ।
जिसे चाहा उसको दबा दिया जिसे चाहा उसको बहा दिया ।।

वो यतीम करते हैं जारियां[13] हैं नसीब जिनको यह ख़्वारियां[14] ।
वो घरों में रोती हैं औरतें जिन्हें हाय बेव: बना दिया ।।

मुहम्मद इब्राहीम "अबरार" देहलवी—"ख़ूनी कानपुर" उर्फ़ "बहादुर औरत"—
मुद्रक, रहीमी प्रेस, बम्बई—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2304

1. अत्याचार की तलवार, 2. आकाश, 3. शरण मांगना, 4. अत्याचार, 5. जान देने वाले 6. जिसके दिल के टुकड़े हो गए हों, 7. दोस्ती व प्यार, 8. धूल में, 9. मरा हुआ, 10. जिसके शरीर के टुकड़े हुए हों, 11. जान, 12. अधिकार पहुंचाना, 13. रोना, 14. अपमान

मज़लूम की आह

मैं वह लखनऊ का शहीद हूं जिसे आसमां ने मिटा दिया ।
मगर आह तक भी न मैंने की पए क़त्ल[1] सर को झुका दिया ।।

थी मई की कैसी पच्चीसवीं, सरे शाम[2] हश्र बपा[3] हुआ ।
जो जूलुस निकला था कांग्रेस का पुलिस ने उसको हटा दिया ।।

गया माल रोड जुलूस जब तो पुलिस ने रोका बसद ग़ज़ब[4] ।
जो था पर्चा क़ैद का हाथ में, मिस "मिला" को वह दिखा दिया ।।

हुई वह जो क़ैदे फ़िरंग में, किया और औरतों को अलग ।
उन्हें करने के लिए मुन्तशिर[5] वहीं और रस्तः बना दिया ।।

उन्हें दूर दूर पे छोड़ कर नया जारी तर्ज़े सितम[6] किया ।
बढ़े सत्याग्रही जब, उन्हें यह निराला हुक्म सुना दिया ।।

रहेरास्त[7] पर न कोई अड़े यही ख़ैर है के पलट पड़े ।
रहे देर तक जो यहां खड़े तो यह समझो यां पे लिटा दिया ।।

कहा नौजवानों ने लेट कर, चलो हम भी खेलेंगे जान पर ।
न हटेगा पीछे मगर क़दम, जो बढ़ा दिया वह बढ़ा दिया ।।

जो पुलिस ने हटने पे हट किया, उन्हें जोश और भी आ गया ।
रज़ाकार[8] कहते हैं हम जिन्हें उन्हें नज़्रे जौर[9] बना दिया ।।

कोई हन्टरों से पिटा किया, कोई नज़्रे नोके सिना[10] हुआ ।
कोई ज़ेरे नाले फ़रस[11] रहा जो पुलिस ने उनपे कुदा दिया ।।

थीं यह टापें घोड़ों की दस्तकें जो पड़ीं जवानों के सीनों पर ।
थे जो लेटे ख़ाबे ग़ुलामी में, उन्हें रोंद करके जगा दिया ।।

कई सौ जो ज़ख़्मी बशर[12] हुए कई सौ पुलिस के सर हुए।
उन्हें लारियों में बिठा बिठा तो और दो ग्यारह बना दिया ॥

नहीं यह शहीदों का ख़ून है यह सहसरबाहू का है लहू ।
जो जमीं पे क़तरः गिरा दिया तो सहसरबाहू बना दिया ॥

है कलामे[13] "शोख़" वह मोजिज़ः[14] नई रूह तन में जो फूंक दे।
हुआ उठ खड़ा वह मज़ार में किसी मुर्दे को जो सुना दिया ॥

"शोख़" देहलवी—"ज़ख़्मी लखनऊ" उर्फ़ "मज़लूमों की आह"—प्रकाशक,
विद्या भंडार, लखनऊ (1930 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य —
अवाप्ति संख्या, 2287

1. हत्या के लिए, 2. शाम से, 3. प्रलय होना, 4. रोषपूर्वक, 5. बिखेर देना, 6. अत्याचार का ढंग, 7. सत्य मार्ग, 8. स्वयं सेवक, 9. अत्याचार के शिकार, 10. बरछे की नोक, 11. घोड़े की नाल के नीचे, 12. व्यक्ति, 13. कविता, 14. चमत्कार

हिन्दुस्तानी आज़ाद जमाअत

होती हैं आज़ाद क़ौमे सर कटा देने के बाद ।
खौफ़ दिल से एकदम बिल्कुल हटा देने के बाद ।।

मिल नहीं सकती है आज़ादी बिला क़ीमत दिए ।
रोक सकता कौन है क़ीमत पटा देने के बाद ।।

फ़र्ज़ है होना फ़ना[1] आज़ादगी के वास्ते ।
तुख़्म[2] फलता फूलता, हस्ती[3] मिटा देने के बाद ।।

टूट जाएगी ग़ुलामी की कड़ी दम भर में आप ।
हिन्दुओ मुस्लिम के बस कंधा सटा देने के बाद ।।

जंगे आज़ादी में होते हैं फ़ना पहले जवां ।
होते हैं आज़ाद फिर गर्दन कटा देने के बाद ।।

शान से मरना भला, इज़्ज़त मगर खोना नहीं ।
पूछता कोई नहीं इज़्ज़त घटा देने के बाद ।।

गुलबदन[4] जितने मरे, हरगिज़ मरे वे हैं नहीं ।
पा गए हैं वे बक़ा[5] सर को कटा देने के बाद ।।

यह उरूस आज़ादगी[6] आग़ोश[7] में आएगी ख़ुद ।
क़ौम की ख़िदमत में हस्ती को मिटा देने के बाद ।।

तुम मरो चाहे जियो, कोशिश मगर मत छोड़ियो ।
खुलते दरवाज़े हैं यारो खटखटा देने के बाद ।।

आ रहा "साइमन" कमीशन एक्ट रोलेट बन गया ।
तोहफ़ा तुमको यह मिला गर्दन कटा देने के बाद ।।

आप पा सकते ख़ुदा को, क्या है फिर आज़ादगी ।
अपने दिल से परदए ग़फ़लत हटा देने के बाद ॥

वेद में लिखखा यही, यह ही लिखा कुरआन में ।
होती हैं आज़ाद क़ौमें सर कटा देने के बाद ॥

बहरे आज़ादी[8] यह "माहिर" शान से मर जाएगा ।
अपनी ग़ज़लें मुल्क वालों को रटा देने के बाद ॥

कह रहा हूं आख़िरी जुमलः यही तारीख़[9] से ।
रूस आज़ाद हो गया फ़ौजें डटा देने के बाद ॥

"माहिर"--"हिन्दुस्तानी आज़ाद जमाअत"--प्रकाशक, देव नारायण पाण्डे कानपुर
मुद्रक, सिराजी प्रेस, कलकत्ता--
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य--
अवाप्ति संख्या, 2466

1. मरना, 2. बीज, 3. अस्तित्व, 4. फूल से शरीर वाले, 5. जीवन, 6. स्वतन्त्रता की दुल्हन, 7. गोद, 8. आज़ादी के लिए, 9. इतिहास --

है लाजिम हिन्द को आज़ाद करना

हमारे क़ौल[1] को भी याद करना।
हमें है मुल्क को आज़ाद करना ।।

वतन के वास्ते गर सर हो कटता ।
तो कट जाए न तुम फ़र्याद करना ।।

हो तुम आज़ाद यह ऐलान कर दो ।
ग़ुलामी को न हरगिज़ याद करना ।।

अगर मरना तुम्हें बहरे[2] वतन है ।
न मरते वक़्त भी फ़र्याद करना ।।

वतन के वास्ते बर तख़्तः-ए-दार[3] ।
ना हरगिज़ शिकवः-ए-बेदाद[4] करना ।।

ब वक़्ते इम्तिहाने इज़्ज़ते मुल्क ।
तबीयत को न तुम नाशाद[5] करना ।।

उठाए रहना सर बहरे वतन तुम ।
झुका कर मत उसे बर्बाद करना ।।

मिटाकर जंगे आज़ादी में ख़ुद को ।
अभागे हिन्द को आज़ाद करना ।।

क़फ़स[6] में अन्दलीबो[7] घुट के मरना ।
वले[8] मत आजिज़ी[9] सैयाद[10] करना ।।

कहे जाता है यह हर बार "माहिर"।
है लाजिम[11] हिन्द को आज़ाद करना ॥

"माहिर"—'यंग कामरेड,' लाहौर (24 फ़रवरी, 1930 ई०, फांसीनम्बर)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2494

1. कथन, 2. वास्ते, 3. सूली के तख्ते पर, 4. अत्याचार की शिकायत, 5. अप्रसन्न, 6. पिंजरा, 7. बुलबुल, 8. लेकिन, 9. गिड़गिड़ाना, 10. शिकारी, 11. जरूरी

हिंदियों को संदेस

न हिंदियो, बेक़रार हो तुम के नेक अय्याम[1] आ रहे हैं।
वह जल्द मिट जाएंगे जहां से, हमें जो ज़ालिम सता रहे हैं।।

न समझो रस्सी या बान उनको, जो जेल में बट रहे हैं क़ैदी।
वह आहनी तौक़[2] पापियों के गले की ख़ातिर बना रहे हैं।।

उधर से संगीन तन रही है, इधर से सीने खुले हुए हैं।
इधर है चेहरों पे मुस्कुराहट, उधर वह गोली चला रहे हैं।।

इधर इरादः यह कर चुके हैं, क़दम न पीछे हटाएंगे हम।
उधर वह लालच से, धमकियों से, हमारे दिल आज़मा रहे हैं।।

ख़ुदा को मंज़ूर अब यही है कि हिंद में इन्क़िलाब होगा।
तब ही तो भारत के लाल ख़ुश होके जेलख़ाने को जा रहे हैं।।

थीं जिनके क़दमों पे सारी दुनिया की नेमतें दस्तबस्ता[3] हाज़िर।
ख़ुदा की क़ुदरत वह आज हंस-हंस के ख़ुश्क रोटी चबा रहे हैं।।

अब वक़्ते स्वराज आ रहा है और "लार्ड इर्विन" भी कह रहा है।
मगर "मुसाफ़िर" को धोखा दे कर यह और मुद्दत[4] बिता रहे हैं।।

"मुसाफ़िर"—"क्रान्ति गीतांजलि"—संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक,
हुलस्स बर्मा "प्रेमी"—मुद्रक, भारतीय प्रेस देहरादून (1930 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1 773

1. अच्छे दिन, 2. लोहे की हंसली, 3. हाथ बांधे, 4. अवधि

ऐ खुफ़्तः बख़्त हिन्दी कब तक तुझे जगाएं

मेरठ की सरज़मीं से आती हैं यह सदाएं[1] ।
ऐ खुफ़्तः बख़्त[2] हिन्दी कब तक तुझे जगाएं ॥

ग़ैरों ने है गिरादी खिरमन[3] पे तेरे बिजली ।
मदहोश[4] तू पड़ा है, ग़ाफ़िल तेरी अदाएं ॥

चीनी व तुर्क रूसी सब बढ़ गए हैं आगे ।
लेकिन है यह क़यामत हम पाँव न उठाएं ॥

माना के बे तरह से सैयाद[5] के हैं बस में ।
माना के दुश्मनों को मन्ज़ूर हैं जफ़ाएं[6] ॥

माना के मुफ़लिसी[7] ने पामाल[8] कर दिया है ।
माना है तेरे सर पर नादारी[9] की घटाएं ॥

लेकिन रगों के अन्दर मर्दानगी का ख़ू है ।
सद हैफ़[10] और लानत[11] हरकत में गर न आएं ॥

नादानियों से अपना यह हाल हो गया है ।
ताक़त में है हमारी गर आक़िबत[12] बनाएं ॥

इन ताक़तों का हमको एहसास दे इलाही ।
जिनके तुफ़ैल[13] दुश्मन फिर सर के बल गिराएं ॥

है लुत्फ़ ज़िन्दगी का उस वक़्त नौजवानों ।
जब क़तरः क़तरः ख़ू का हम क़ौम पर बहाएं ॥

मज़दूर और किसाँ गर हो जाएं "दास" मुतहिद[14] ।
सरमाये[15] के क़िलेः को इक फूंक से उड़ाएं ॥

"रामदास"—माहनामा 'रिसाला कीर्ति', अमृतसर (जुलाई, 1929 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य '—अवाप्ति संख्या, 2649

1. आवाज़, 2. सोए हुए भाग्य वाला, 3. खलयान, 4. नशे में, 5. शिकारी, 6. अत्याचार, 7. ग़रीबी, 8. रौंदना, 9. निर्धन, 10. अति खेद, 11. धिक्कार, 12. भविष्य, 13. द्वारा, 14. एक हो जाना (सही शब्द मुत्तहिद), 15. पूंजीवाद

हिन्दुस्तान

आज़ाद होगा अब तो हिन्दोस्तां हमारा ।
बेदार[1] हो रहा है हर नौजवाँ हमारा ।।

आज़ाद होगा होगा हिन्दोस्ताँ हमारा ।
है ख़ैर ख़्वाहे भारत ख़रदो कलां[2] हमारा ।।

वो सख़्तियां क़फ़स[3] की बे आबोदानः मरना ।
क़ैदी का फिर भी कहना हिन्दोस्ताँ हमारा ।।

इक क़त्ले "साड्रंस" पर इतनी सज़ाएं उनको ।
रोता है "लाजपत" को हिन्दोस्ताँ हमारा ।।

बेड़ा उठा लिया है आज़ादियों का हमने ।
जन्नत निशाँ[4] बनेगा हिन्दोस्ताँ हमारा ।।

सोज़े सुख़न[5] से अपने मजनूं हमें बना दे ।
बच्चों की हो ज़ुबां पर हिन्दोस्ताँ हमारा ।।

इक बार फिर ये नग़मः "अनवर" हमें सुनादे ।
"हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्ताँ हमारा" ।।

"अनवर"—सेह रोज: (त्रि-दिवसीय) 'थड़थल', लाहौर (7 मार्च 1930 ई०)—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य —अवाप्ति संख्या, 2578

1. जागना, 2. छोटे-बड़े, 3. पिंजरा, 4. स्वर्ग जैसा, 5. काव्य की गर्मी

अवतार ले चुके हैं बाँकी कमान वाले

महशर[1] बपा करेंगे हिन्दोस्तान वाले ।
कुछ मुत्तफ़िक़ हैं ऐसे वेदो क़ुरान वाले ।।

करके क़ता ताल्लुक़[2] ख़ुद हुक्मराँ बनेंगे ।
मुंह ताकते रहेंगे सारे जहान वाले ।।

कर देगा तहो बाला यक दम में चरख़े गरदूं[3] ।
ज़ेरे ज़मीन होंगे नामो निशान वाले ।।

अब रुक नहीं सकेगी ऐसी हवा चली है ।
ख़ामोश होके बैठें वहमो गुमान[4] वाले ।।

जागे हैं अब तो "गाँधी" दुख दर्द मिट रहेगा ।
अवतार ले चुके हैं बांकी कमान वाले ।।

"आग़ा" संभल के रहना प्रजा बिगड़ रही है ।
ख़ानः ख़राब[5] होंगे महलो मकान वाले ।।

"आग़ा"—"इन्क़िलाब (ज़िन्दाःबाद) की लहर" उर्फ़ "तूफ़ाने हिन्द"—मुद्रक, फ़ारूक़ी प्रेस सहारनपुर—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य अवाप्ति संख्या, 1658

1, परलय, 2. नाते तोड़ना, 3. आसमान का चक्कर, 4. शक, 5. घर-बर्बाद

खून का असर

शहीदों के खूं का असर देख लेना ।
मिटाएंगे ज़ालिम का घर देख लेना ॥

किसी के इशारे के हम मुन्तज़िर[1] हैं ।
बहा देंगे खूं की नहर देख लेना ॥

झुका देंगे गरदन को हम ज़ेरे ख़ंजर ।
ख़ुशी से कटाएंगे सर देख लेना ॥

जो ख़ुदग़र्ज गोली चलाते हैं हमपर ।
तो क़दमों में उनका ही सर देख लेना ॥

जो कल हमने सींचा है ख़ूने जिगर से ।
वह होगा कभी बारवर[2] देख लेना ॥

किनारे पे आए भंवर से वह कश्ती ।
वह आएगी इक दिन लहर देख लेना ॥

बलाएं यह जाएंगी ख़ुद सर निगूं[3] हों ।
नहीं होगी इनकी गुज़र देख लेना ॥

"ख़ुजंदी" हुआ हिन्द आज़ाद अपना ।
छपेगी यह इक दिन ख़बर देख लेना ॥

"ख़ुजंदी—"गांधी का सुदर्शन चक्र"—प्रकाशक, मोहर चन्द "मस्त", गुड़गांव—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2491

1. प्रतीक्षा में, 2. फलदार, 3 सर-झुकाना

कटेंगी मादरे भारत की यारब बेड़ियां कब तक

रहेंगे भेड़िये भेड़ों के यारब गल्लः बां[1] कब तक ।
हिफ़ाज़त दूध और घी की करेंगी बिल्लियां कब तक ॥

न जाने हमको तड़पाएगी यादे रफ़्तगां[2] कब तक ।
बहाएगी लहू ग़म में यह चश्मे खूं चकां[3] कब तक ॥

रहेगा दस्त बुरदेग़ैर[4] में हिन्दोस्तां कब तक ।
बनेगा तख़्तः-ए-मश्क़े सितम[5] यह बे ज़ुबां कब तक ॥

ग़ुलामी की शबे तारीक[6] का कब ख़ातमः होगा ।
ख़ुदाया शम्स[7] आज़ादी का होगा ज़ौ फ़िशां[8] कब तक ॥

मिलेंगे बुलबुलो गुल सर्वो क़ुमरी[9] कब ख़ुदा जाने ।
रहेगी गुलशने भारत में आख़िर यह ख़िज़ां[10] कब तक ॥

भरे जाऐंगे कब तक जेल ख़ाने देश भक्तों से ।
सहेंगे ज़ौरे इसतबदाद[11] मज़दूरो किसां कब तक ॥

चलेंगी आंधियां कब तक यहां जब्रो तशद्दुद[12] की ।
रहेंगे गर्द आलूदः[13] ज़मीनो आसमां कब तक ॥

बन्धेगा बोरिया बिस्तर न जाने कब हुकूमत का ।
कटेंगी मादरे भारत की यारब बेड़ियां कब तक ॥

रहेगा बूमे[14] इंगलिशियः का हम पर कब तलक सायः ।
बसेंगी हिन्द की उजड़ी हुई फिर बस्तियां कब तक ॥

सगे[15] बर्तानियः भी लामुहालः[16] ज़र्ब[17] खाएगा।
चबाएगा मज़े ले ले हमारी हड्डियां कब तक ॥

रगे जां[18] में कभी तो ख़ूने ग़ैरत मौजज़न[19] होगा।
सर अफ़गन्दः[20] व पज़मुर्दः[21] रहेंगे नौजवां कब तक ॥

मसल मशहूर है आलम[22] में तंग आमद बजंग आमद[23]।
सहेंगे हिन्द वाले आख़िरश ये सख़्तियां कब तक ॥

अगर है शौक़े आज़ादी तो उट्ठो और कमर बांधो।
सुने जाओगे उनके ज़ुल्म की तुम दास्तां कब तक ॥

कामरेड भारती "शौक़"—"ग्राहे बेकस" उर्फ़ "ग्राज़ादी की लहर"—संग्रहकर्ता, शिव प्रसाद—मुद्रक, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, जगाधरी—
राष्ट्रीय ग्रभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य
ग्रवाप्ति संख्या, 1711

1. गल्ले के रखवाले, 2. जाने वालों की याद, 3. ख़ून भरी ग्रांखें, 4. दूसरों के अधिकार में, 5. जिस पर ग्रत्याचार किया जाए, 6. काली रात, 7. सूर्य, 8. प्रकाशमय, 9. एक पौधा और एक पक्षी, 10. पतझड़, 11-12. ग्रत्याचार, 13. धूल में ग्रटे 14. उल्लू, 15. कुत्ता, 16. ग्रवश्य ही, 17. चोट, 18. जान की नसें, 19. जोश मारना, 20. परेशान, 21. उदासीन, 22. संसार, 23. तंग ग्राकर युद्ध करना

ग़ज़ल

ख़ुदाया कैसी मुसीबतों में यह हिन्द वाले पड़े हुए हैं।
क़दम क़दम पर हमारी ख़ातिर सितम[1] के जाले पड़े हुए हैं॥

हमारे मेहमां जो आए बनकर वह ज़ुल्म करने लगे हमीं पर।
ग़ज़ब है अपने मकां के बाहर मकान वाले पड़े हुए हैं॥

सरों पे दुश्मन खड़े हुए हैं, गलों में ख़ंजर अड़े हुए हैं।
दिलों में नश्तर चुभे हुए हैं, जिगर में भाले लगे हुए हैं॥

हज़ारों बच्चों से बाप बिछड़े, वह तेग़े क़िस्मत[2] से होके टुकड़े।
सुहागनों के सुहाग उजड़े, घरों में ताले पड़े हुए हैं॥

हवा ज़माने की बिगड़ी "नैयर" तो ज़ुल्म होने लगे सरासर।
सुनाएं फ़रयाद किसको जाकर दिलों में छाले पड़े हुए हैं॥

"नैयर"—"तरानः-ए-आज़ाद"—संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक, कुंवर प्रताप चन्द्र "आज़ाद"—मुद्रक, आनन्द प्रेस, बरेली—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—

अवाप्ति संख्या, 2677

1. अत्याचार, 2. भाग्य की कटार

ग़ज़ल

वह दिन भी आएगा जब फिर बहार देखेंगे ।
ग़रीबे हिन्द को हम ताजदार देखेंगे ॥

घड़ी वह दूर नहीं ऐ वतन के शैदाओ[1] ।
के मुल्के हिन्द को फिर पुर बहार[2] देखेंगे ॥

उदू[3] की सख़्तियां उलटा असर दिखाएंगी ।
वह ग़ाफ़िलों को फिर अब होशियार देखेंगे ॥

बढ़े चलो ऐ जवानो फ़तह हमारी है ।
वतन को जल्द ही बा इख़्तियार देखेंगे ॥

हरीफ़[4] सख़्तियां कर कर के हार जाएगा ।
गले में "गांधी" के नुसरत[5] का हार देखेंगे ॥

मिलेगा हिन्द को स्वराज एक दिन "ख़ुर्शीद" ।
ख़िज़ां[6] को देखने वाले बहार देखेंगे ॥

"ख़ुर्शीद"—"इन्क़िलाब (ज़िंदःबाद) की लहर" उर्फ़ "तूफ़ाने हिंद"–मुद्रक, फ़ारूक़ी प्रेस, सहारनपुर—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य
अवाप्ति संख्या, 1658

1. प्रेमियों 2. बहार से भरा 3-4. शत्रु, 5. जीत, 6. पतझड़

ग़ज़ल

ऐ हिन्द देख तो तेरी हालत को क्या हुआ ।
हैरत में आइना है के सूरत को क्या हुआ ॥

जब से कमां की तरह कमर सब की झुक गई ।
"अर्जुन" भी पूछता है के हिम्मत को क्या हुआ ॥

मारे जो कोई फूंक तो उड़ जाएं अहले हिन्द ।
चक्कर में "भीमसेन" है, ताक़त को क्या हुआ ॥

हमको ज़लील ख़स्ता[1] व मजबूर देखकर ।
"प्रताप" कह रहा है हमीयत[2] को क्या हुआ ॥

जिसने बड़े बड़ों के भी छक्के छुड़ा दिए ।
उस शूरवीर क़ौम की हिम्मत को क्या हुआ ।

अफ़लास[3] में फंसे हुए भारत को देखकर ।
हैरत में "ग़ज़नवी" है के दौलत को क्या हुआ ॥

भाई को तिश्ना[4] देख के भाई के ख़ून का ।
"लक्षमन" पुकारता है, मुहब्बत को क्या हुआ ॥

इतने बहादुरों को "फ़लक" खा गई ज़मीं ।
हैरां है "पृथ्वीराज," शुजाअत[5] को क्या हुआ ॥

"फ़लक"—"इंक़िलाब (ज़िदाःबाद) की लहर" उर्फ़ "तूफ़ाने हिंद"—मुद्रक, फ़ारूक़ी प्रेस, सहारनपुर—राष्ट्रीय अभिलेखाकार प्रतिबन्धित साहित्य—अवाप्ति सख्या, 1658

1. कमज़ोर, 2. स्वाभिमान, 3. ग़रीबी, 4. प्यासा, 5. बहादुरी

फ़िरंगी का आज और कल

कल कह रहा था एक फ़िरंगी बसद मलाल[1]।
दुनिया मेरी निशात[2] की ज़ेरो ज़बर[3] है आज ।।

कल जिनको था सआदते दारैन[4] मेरा क़ुर्ब[5]।
बहशत[6] से उनके विर्दे ज़ुबां[7]-अल-हज़र[8] है आज ।।

कल गालियां थीं जिनको गवार: मेरी उन्हें।
हर बात मेरी बाइसे दौराने सर[9] है आज ।।

कल आसरा था जिनको, मैं चश्मे उम्मीद[10] का ।
बरगश्त:[11] आह ! मुझसे उन्हीं की नज़र है आज ।।

कल जो मेरे इशारे पे आते थे सर बकफ़[12]।
ग़ौग़ा भी मेरा उनके लिए बे असर है आज ।।

कल उड़ रहा था अर्श[13] पे जो मेरा मदह ख़्वां[14]।
बेबस मिसाले ताइरे[15] बे बालो पर है आज ।।

कल मेरे दर पे मजमए अहले नियाज़[16] था ।
शीराज़:[17] बाविक़ार[18] मेरा मुन्तशिर[19] है आज ।।

कल बज़्में, राज़ में भी ज़ुबां सबकी बन्द थी ।
चर्चा मेरी जफ़ा[20] का सरे रहगुज़र है आज ।।

कल जिस क़दर सुकूँ मुझे हासिल था अलग़रज़।
उस से कुछ इज़तिराब[21] मेरा बेशतर है आज ॥

"रोशन ख़्याल"—रोजाना 'वीर भारत', लाहौर (2 मार्च, 1930 ई०, सण्डे एडीशन)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2497

1. बहुत शोक से, 2. प्रसन्नता, 3. उथल-पुथल, 4. लोक परलोक का सौभाग्य, 5. निकटता, 6. घबराहट, 7. जपना, 8. डरे हुए मंत्र, 9. सर दर्द का कारण, 10. आशा भरी आंखें, 11. नाराज़, 12. हथेली पर सर लिए, 13. आकाश, 14. प्रशंसक, 15. पक्षी की भांति, 16. श्रद्धालुओं की भीड़, 17. लड़ी, 18. गौरवपूर्ण, 19. बिखरा हुआ, 20. अत्याचार, 21. घबराहट

नौजवानों से खिताब

ऐ जवानो है अगर अपने वतन से उल्फ़त[1]।
बाग़बानों[2] है अगर अपने चमन से उल्फ़त ।
तिशनःकामों[3] है अगर गंगो-जमन से उल्फ़त ।
सरफ़रोशो है अगर दारो रसन[4] से उल्फ़त ।

आओ आज़ादी के झण्डे को उठा लें मिलकर ।
हिन्द को क़ैदे ग़ुलामी से छुड़ा लें मिलकर ॥

मादरे हिन्द की उल्फ़त भरी रूदाद सुनो ।
खोल कर कान ज़रा करती है फ़र्याद सुनो ।
फीके जल्सों पे करेगा न कोई साद[5] सुनो ।
सुनके तक़रीर न होगा वतन आज़ाद सुनो ।

होगा आज़ाद अगर, सर ही कटा कर होगा ।
नौजवानों के ही यह बाज़ू-ओ-बल पर होगा ॥

मैगुसाराने[6] वतन के लिए ख़ुमख़ाने[7] बनो ।
साक़ी[8]-ए-मुल्को वतन के लिए पैमाने बनो ।
हुरियत[9] की अंजुमन के लिए दीवाने बनो ।
शमे आज़ादी पे जल जाने को परवाने बनो ।

"दास" के योमे[10] शहादत को ज़रा याद करो ।
इस जवानी को उसी शौक़ में बर्बाद करो ॥

जज़बए ईसार[11] से हर फ़र्द[12] को हैरां कर दो ।
दुश्मने हिन्द को अंगुश्त बदन्दां[13] कर दो ।
तुम पे हंसता है जो उस शोख़[14] को गिरयां[15] कर दो ।
आके मैदां में रक़ीबों[16] को परेशां कर दो ।

तोड़ दो तौक़े ग़ुलामी[17] को रसन की सूरत ।
फ़र्क़े आदा[18] पे गिरो बर्क़े कुहन[19] की सूरत ।।

कह दो अंग्रेज़ से अब बांध लो बिस्तर अपना ।
साहिले[20] हिन्द से ले जाए वह लश्कर अपना ।
मुंह न दिखलाए कभी हमको सितमगर अपना ।
ढूंड ले जाके कोई और वह घर-दर अपना ।

वरना यह याद रहे हश्र[21] ही बर्पा[22] होगा ।
गोशे गोशे[23] से क़यामत ही का चर्चा होगा ।।

"कानून शिकन"—हफ्तावार 'कड़क', लाहौर (18 मार्च, 1930 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2371]

1. प्रेम, 2. मालियों, 3. प्यासों, 4. सूली और रस्सी, 5. समर्थन, 6. शराब पीने वाले, 7. मधुशालाएं, 8. मदिरा पिलाने वाला, 9. स्वतंत्रता, 10. दिन, 11. त्याग भावना, 12. व्यक्ति, 13. मुंह में उंगली डालना (अचम्भा), 14. चंचल, 15. रोता हुआ, 16. शत्रुओं, 17. गुलामी की हंसली, 18. शत्रुओं के सर, 19. भारी बिजली, 20. किनारा, 21. प्रलय, 22. होना, 23. कोने-कोने

इन्किलाब! इन्किलाब!! इन्किलाब!!!

अशहबे फ़िक्र[1] तेज़गाम[2] है आज ।
सैफ़े मज़मून[3] बे नियाम[4] है आज ।।

इन्क़िलाब आ रहा है भारत में ।
दावते इन्क़िलाब आम है आज ।।

आज हर ज़र्रः ख़ाक का बम है ।
तिनका भी सैफ़े बे नियाम है आज ।।

जोश में आज है "मुहम्मद खां" ।
बाहर आपे से "परस राम" है आज ।।

भरा बैठा है आज "उत्तम सिंह" ।
नज़रे तशवीशो फ़िक्र[5] "टाम" है आज ।।

सफ़े मातम[6] बिछी है मग़रिब[7] में ।
जश्ने मश्रिक़[8] का एहतिमाम[9] है आज ।।

बादए हुर्रियत[10] पिलाए जा ।
साक़िया[11]! देख जश्ने आम है आज ।।

"मिर्ज़ा दबंग"—रोज़ाना 'वीर भारत', लाहौर (6 मार्च, 1930 ई०, तिलक एडीशन)—राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2335

1. सोच का घोड़ा, 2. तीव्र गति वाला, 3. लेख की तलवार, 4. नियाम से बाहर, 5. सोच तथा उलझन में पड़ जाना, 6. रोने धोने का फ़र्श, 7. पश्चिम, 8. पूरब का उत्साह दिवस, 9. संयोजन, 10. स्वतंत्रता की मदिरा, 11. मदिरा देने वाला

सुर्ख़ मछली बनके तैरेगी छुरी जल्लाद की

ज़ेरे ज़ुलमत[1] क्यों है क़िस्मत भारते नाशाद[2] की ।
ऐ ख़ुदा अब तो ख़बर ले हिन्द की औलाद की ।।

क्या यह कुछ तक़सीर[3] कम थी उल्फ़ते दिलदार की ।
घर दिया और ज़र दिया, सर तक से भी इमदाद की ।।

ख़ूबिये क़िस्मत तो देखो जां निसारी के सिले[4] ।
जो मिलीं सब पर अयां[5] हैं सनअतें[6] उस्ताद की ।।

मार्शल ला, जेलख़ाना, फांसी और हब्से दवाम[7] ।
बन्दिशे नज़्रो ज़ुबां क्या क्या नहीं ईजाद की ।।

अपनी हिम्मत और शुजाअत[8] से भी तो कुछ काम लो ।
अब तलक तो बुज़दिली में ज़िन्दगी बर्बाद की ।।

ग़र्क़ होगा ख़ुद सितमगर बहरे[10] ख़ूने हिन्द में ।
सुर्ख़ मछली बनके तैरेगी छुरी जल्लाद की ।।

"अज्ञात"—"इन्क़िलाब ज़िंदःबाद की लहर" उर्फ़ "आज़ादी का फूल"—प्रकाशक, भाई शिव प्रसाद —मुद्रक, फ़ारूक़ी प्रेस, सहारनपुर—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2609

1. गहरे अंधेरे में, 2. अप्रसन्न, 3. जुर्म, 4. बदले, 5. स्पष्ट, 6. कारीगरी, 7. उम्र क़ैद 8. बहादुरी, 9. डूबना, 10. समुद्र

मुकद्दमः-ए-साज़िश लाहौर कें असीरान की आवाज़

(यह नज़्म कामरेड प्रेम दत्त मुलजिम मुक़द्दमः-ए-साजिश; लाहौर अपनी सुरीली आवाज से मुक़द्दमः की समाअत[2] के दौरान पढ़ा करते थे बाद अज़ आ[3] तमाम मुलजिम मिल कर इस को गाते थे)

भारत न रह सकेगा हरगिज़ ग़ुलाम ख़ानः[4] ।
आज़ाद होगा होगा आता है वह ज़मानः ॥

अब भेड़ और बकरी बन कर न रह सकेंगे ।
कर देंगे ज़ालिमों का अब बंद ज़ुल्म ढानः ॥

ख़ूं खोलने लगेगा हिन्दोस्तानियों का ।
इस पस्त हिम्मती का होगा कहां ठिकानः ॥

भारत के हम हैं बच्चे, भारत हमारी माता ।
उसके ही वास्ते है मन्ज़ूर सर कटाना ।

"अज्ञात"—हफ़्तावार 'पयामे जंग', लाहौर (8 जनवरी, 1930 ई०, लाहौर का आज़ादी नम्बर)—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—

अवाप्ति संख्या, 2321

1. बन्दी, 2. सुनवाई, 3. तत्पश्चात्, 4. बन्दीगृह

तरानः-ए-फ़लक[1]

बाग़ से सर सर[2] का झोंका आशियानः[3] ले गया ।
अन्दलीबों[4] को क़फ़स[5] में आबो दानः ले गया ।।

कुछ गुलो[6] गुलचीं[7] का शिकवः[8] बुलबुले भारत न कर।
तुझ को पिंजरे में तेरा ये चहचहानः ले गया।।

कौन कहता है ज़बरदस्ती से हम पकड़े गए ।
जेल में खुद हम को शौक़े जेल ख़ानः ले गया ।।

क्यों घटा इदबार[9] की छाए न अह्ले हिन्द पर ।
खींच कर यूरप है सब मालो ख़ज़ानः ले गया।।

"अज्ञात"—"क्रांति गीतांजलि"—संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक, हुलास वर्मा "प्रेमी"-मुद्रक, भारतीय प्रेस, देहरादून (1930 ई०)–
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 1773

1. आसमानी गीत, 2. आंधी, 3. घोंसला, 4. बुलबूलों, 5. पिंजरा, 6. पुष्प, 7. फूल तोड़ने वाला, 8. शिकायत, 9. दुर्दशा

चलो जेलख़ाने-चलो जेलख़ाने

सुनो गोशे दिल[1] से ज़रा यह तराने ।
अनोखे निराले हैं जंगी फ़साने[2] ।
कहीं शोरे मातम, कहीं शादियाने[3] ।
इसी तरह कटते रहेंगे ज़माने ।

करो थोड़ी हिम्मत, न ढूंडो बहाने ।
चलो जेलख़ाने, चलो जेलख़ाने ॥

तुम्हारी सदा[4] कोई माने न माने ।
मगर तुम यह जाकर कहो हर ठिकाने ।
के हर शख़्स अपने फ़रज़ो को जाने ।
बला से जो छुट जाएं अपने बेगाने ।

करो थोड़ी हिम्मत, न ढंडो बहाने ।
चलो जेलख़ाने, चलो जेलख़ाने ॥

ख़ुदा ने रसूलों को भी आज़माया ।
बला की कसौटी पे रखकर कसाया ।
सदाक़त[5] ने जब मुद्दई तुम को पाया ।
पए आज़माइश[6] है, यह वक़्त लाया ।

करो थोड़ी हिम्मत, न ढूंडो बहाने ।
चलो जेलख़ाने, चलो जेलख़ाने ॥

समझते थे ज़िल्लत का घर जेलख़ाना ।
के था चोरो बदकार का यह ठिकाना ।
हुआ जब से वां पेशवाओं का जाना ।
बना फ़ख्र ो इज़्ज़त का यह इक ख़ज़ाना ।

करो थोड़ी हिम्मत, न ढूंडो बहाने ।
चलो जेलख़ाने, चलो जेलख़ाने ।।

"अज्ञात"--- "वतन का राग" --संग्रहकर्ता, "अकसीर सियालकोटी"-मुद्रक, नश्तर स्टीम प्रेस, लाहौर,—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—

अवाप्ति मंख्या, 1638

1. दिल के कान से, 2. कथाए, 3. खुशी के बाजे, 4. आवाज, 5. सच्चाई, 6. परीक्षा

हिन्दुस्तानी बच्चों का गीत

सरों पे शौक़ से कोहे अलम[1] उठाएंगे ।
पड़ेंगे आग में, माता से लौ लगाएंगे ॥

हज़ारों सख़्तियां झेलेंगे देश की ख़ातिर ।
वतन के नाम पर गर्दन भी हम कटाऐंगे ॥

हम अपने हाथ से काटेंगे देश के बंधन ।
सपूत बनके ज़माने में नाम पाएंगे ॥

मिटेंगे शम-ए-मुहब्बत[2] पे मिसले परवाना[3] ।
ज़ुबां पर हरफ़े शिकायत मगर न लाएंगे ॥

पड़ेंगे क़ौम के दर पर रटेंगे आज़ादी ।
फ़क़ीर बनके वहां धूनियां रमांएगे ॥

"अज्ञात"—"कांग्रेस पुष्पान्जलि"—संग्रहकर्ता, टेक चन्द भारती— मुद्रक, फ़ारूक़ी प्रेस, सहारनपुर (1930 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1652

1. दुख के पहाड़, 2. प्रेम की शमा, 3. पतंगे की भांति।

ऐ फ़िरंगी

बाज़ आ, अब तो जफ़ा[1] से, ऐ फ़िरंगी बाज़ आ।
फूंक डालेगी तुझे ही यह शररबारी[2] तेरी ।।

रहम कर, हां रहम कर हिन्दोस्तां के हाल पर ।
अब नहीं होने की हमसे नाज़ बरदारी[3] तेरी ।।

साथ ले जाता है बर्बादी, जहां जाता है तू ।
बाअसे आलाम[4] है दुनिया में हुश्यारी तेरी ।।

तेरे वादों पर यक़ीं आता नहीं अक़वाम[5] को ।
किस क़दर है शोहरए आफ़ाक़[6] मक्कारी तेरी ।।

कुछ नज़र आता नहीं चारः बग़ावत के सिवा।
बढ़ चली है आह ! इस हद तक सितमगारी[7] तेरी ।।

हुर्रियत[8] का दौर है अब, दिन ग़ुलामी के गए।
फ़र्ज़ थी जब हम ग़ुलामों पे वफ़ादारी तेरी ।।

"अज्ञात"-यंग कामरेड, लाहौर (24 फरवरी, 1930 ई०, फांसी नम्बर)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2494

1. अत्याचार, 2. अग्नि वर्षा, 3. नख़रे उठाना, 4. दुख का कारण, 5. विश्व, 6. आकाश तक चर्चित, 7. अत्याचार, 8. स्वतन्त्रता

हो गए हैं अपने घर में हैफ हम बे खानुमा

हमनशीं[1] बतलाएं क्या हम दर्दे दिल की दास्तां ।
एक मुद्दत से हैं गोया चर्ख़[2] से नाल: कुनां[3] ।।
तिनके तिनके ले गया सैयाद[4] चुनकर अपने घर ।
और पत्तों को उड़ाकर ले गई बादे ख़िज़ां[5] ।।
साकिनाने[6] गुलशने हस्ती[7] मुक़ामे ग़ौर[8] है ।
हो गए हैं अपने घर में हैफ़[9] हम बे ख़ानुमां[10] ।।
हम असीरो[11] कुछ रिहाई[12] की भी अब तदबीर[13] हो ।
हैं हमारी बेकसी पर ख़न्द: ज़न[14] एहले जहां[15] ।।
क्या करें हम रौनक़े बाग़े जहां[16] को क्या करें ।
अपना ही गुल[17] ख़ार[18] है जब वक़्फ़[19] ता रोज़े ख़िज़ां[20] ।।
नोजवानाने वतन हिम्मत ज़रा दरकार है ।
फिर बसाना है हमें उजड़ा हुआ यह आशियां[21] ।।

"अज्ञात"—"क्रान्ति गीतांजलि"— संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक, हुलास वर्मा "प्रेमी"—मुद्रक, भारतीय प्रेस, देहरादून (1930 ई०) —
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1773

1. साथी, 2. आकाश, 3. रोने वाला, 4. शिकारी, 5. पतझड़ की हवा, 6. रहने वाले, 7. अस्तित्व के बाग़ के, 8. विचार योग्य, 9. अफ़सोस, 10. बेघर, 11. सहबंदी, 12. छुटकारा, 13. उपाय, 14. हंसी उड़ाना, 15. संसार वाले, 16. संसार, के बाग़ की शोभा, 17. फूल, 18. कांटा, 19. दान किया हुआ, 20. पतझड़, के मौसम तक, 21. घोंसला

वतन के वास्ते हम दार पर चढ़ कर दिखा देंगे

तेरी इस ज़ुल्म की हस्ती[1] को ऐ ज़ालिम मिटा देंगे ।
ज़बां से जो निकालेंगे वह हम करके दिखा देंगे ।।

हमारे सामने सख़्ती है क्या इन जेल ख़ानों की ।
वतन के वास्ते हम दार[2] पर चढ़ कर दिखा देंगे ।।

हमारी फ़ाक: मस्ती[3] कुछ न कुछ रंग लाके छोड़ेगी ।
निशां तेरा मिटा देंगे तुझे जब बद दुआ[4] देंगे ।।

कुछ इस में राज़ था मुददत से जो ख़ामोश बैठे थे ।
हम अब करने पे आए हैं सो कुछ करके दिखा देंगे ।।

अगर कुछ भेंट आज़ादी की देवी हम से मांगेगी ।
समझ कर हम ज़हे क़िस्मत[5] सब अपने सर चढ़ा देंगे ।।

"अज्ञात"-"यंग कामरेड," लाहौर (24 फरवरी, 1930 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 2494

1. अस्तित्व, 2. सूली, 3. भूख में मस्त रहना, 4. श्राप 5. सौभाग्य

अच्छें दिन आने वाले हैं

ऐ मादरे[1] हिन्द न हो ग़मगीं,[2] अच्छे दिन आने वाले हैं।
आज़ादी का पैग़ाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं ।।

मां ! तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ़ ज़ईफ़ी[3] में ।
मायूस न हो मग़रूरों[4] को हम मज़ः चखाने वाले हैं ।।

कमज़ोर हैं हम और मुफ़लिस[5] हैं गो कुन्जे क़फ़स[6] में बेबस हैं।
बेकस हैं लाख मगर माता हम आफ़त के परकाले हैं ।।

हिन्दू और मुस्लिम मिल करके चाहे जो हम कर सकते हैं।
ए चरख़े कुहन[7] हुश्यार हो तू, पुर शोर[8] हमारे नाले[9] हैं ।।

मेरी रूह को करना क़ैदो क़त्ल, इम्कान[10] से बाहर है उनके।
आज़ाद है अपना दिल शैदा[11] गो लाख ज़ुबां पर ताले हैं ।।

मग़लूब[12] जो हैं होंगे ग़ालिब[13] महकूम[14] जो हैं होंगे हाकिम[15] ।
सदा एक सा वक़्त रहा किसका क़ुदरत के तौर निराले हैं ।।

"गांधी" ने तरके तआवुन[16] का यह कैसा मंत्र चलाया है ।
लरज़ां[17] है जिससे अर्ज़ो समा[18] सरकार को जान के लाले हैं ।।

"अज्ञात"-"क्रांति गीतांजलि"—संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक, हुलास वर्मा "प्रेमी"—मुद्रक, भारतीय प्रेस, देहरादून (1930 ई०)—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 1773

1. भारत मां, 2. दुखी, 3. बुढ़ापा, 4. घमण्डी, 5. कंगाल, 6. पिंजरे का कोना, 7. बूढ़ा आसमान, 8 शोर से भरा, 9. रोना, 10 क्षमता, 11. प्रेमी, 12. हारा हुआ, 13. जीता हुआ, 14. जिस पर शासन किया जाए, 15. शासक, 16. असहयोग, 17. कांपता, 18. धरती—आकाश

ग़ज़ल

ज़ुल्म "डायर" ने किया था रंग जमाने के लिए ।
हिन्द वालों को मुसीबत में फंसाने के लिए ।।

ख़ून से पंजाब के "डायर" ने लिख्खी डायरी ।
रूबरू[1] रख दी मेरी तबीयत जलाने के लिए ।।

बाग़े जलियां में शहीदों की बने गर यादगार ।
जाएंगे आशिक़ वतन आंसू बहाने के लिए ।।

जिसने तन मन धन किया था जंगे-ए-यूरोप पर निसार[2] ।
आप हैं तैयार अब उसके मिटाने के लिए ।।

जब कहा मैंनें तो "ओ डायर" ने मारा बेख़तर[3] ।
हंस के बोले ज़ुल्म था यह आज़माने के लिए ।।

सर हथेली पर अगर रख्खा तो डर किस बात का ।
सर कटाने के लिए है, जान जाने के लिए ।।

"अज्ञात"—"सत्यवती का संदेश और इन्क़िलाब की लहर" —संग्रहकर्ता, गोबिन्द राम गुप्ता "रहबर"—प्रकाशक, एस० डी० गुप्ता, देहली—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 2297

1. आमने सामने, 2. न्योछावर, 3. बेधड़क

ग़ज़ल

नौजवानों वक़्त है मिट जाओ क़ौमी[1] आन पर।
देखना बट्टा न लग जाए वतन की शान पर ॥

खि़रमने[2] हिन्दोस्तां पर बिजलियां टूटा करें ।
हैफ़[3] है फिर भी न जूं रेंगी तुम्हारे कान पर ॥

चहचहाना भूल जाओगी, वतन ख़तरे में है ।
बुलबुलो क्या देखती हो खेल जाओ जान पर ॥

क़सरे आज़ादी[4] की राहों का पतः लग जाएगा ।
गर नज़र डालो ज़रा तुम चीन और जापान पर ॥

"अज्ञात"––"इन्किलाब (ज़िन्दि : बाद') की लहर" उर्फ "तूफाने हिन्द" मुद्रक—फ़ारूक़ी प्रेस, सहारनपुर—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 1658

1. राष्ट्रीय ,2. खलयान, 3. खेद, 4. स्वतन्त्रता का महल

ग़ज़ल

अनोखा निराला हमारा वतन है ।
हमें जानो दिल से प्यारा वतन है ।।

मुसीबत भी, आफ़त[1] भी, ज़ुल्मो सितम[2] भी ।
तेरे वास्ते सब गवारा वतन है ।।

हमें हों तमन्नाएं जन्नत की क्यों कर ।
के जन्नत से बढ़ कर हमारा वतन है ।।

निगाहों में रहता है मन्ज़र वतन का ।
सफ़र में भी हमराह प्यारा वतन है ।।

करो पहले आज़ाद अपने वतन को ।
ग़ुलामी से जकड़ा हमारा वतन है ।।

न आलम[3] से मतलब न दुनिया से मतलब ।
हमारे लिए बस हमारा वतन है ।।

"अज्ञात"—इन्किलाब (ज़िन्दःबाद) की लहर "उर्फ़ "तूफ़ाने हिन्द"—मुद्रक फ़ारूकी प्रेस, सहारनपुर—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—
अवाप्ति संख्या, 1658

1. आपत्ति, 2. अत्याचार, 3. विश्व

ग़ज़ल

आहे शरर फ़िशां[1] की तासीर[2] दिखा देंगे ।
एहसास[3] की दुनिया में इक आग लगा देंगे ।।
हम हिन्द के बाशिन्दे[4] दुख दर्द के मारे हैं ।
नाले[5] जो किए हमने गरदूं[6] को हिला देंगे ।।
फ़रयाद के पर्दे में छेड़ेंगे वह अफ़सान:[7] ।
सोती हुई क़ौमों[8] को गफ़लत[9] से जगा देंगे ।।
खुद्दारी की तालीमें[10] तकमील[11] को पहुंचाकर ।
धब्बा यह ग़ुलामी का दामन से मिटा देंगे ।।
तसवीर तरक्क़ी की आलम[12] की फ़िज़ाओं[13] में ।
इन कांपते हाथों से इक रोज़ बना देंगे ।।
हर दिल पे चढ़ाएंगे इक रंग मुहब्बत का ।
तफ़रीक़े मज़ाहिब[14] को भारत से मिटा देंगे ।।
मिल मिल के गले बाहम[15] बरसाएंगे अश्क[16] इतने ।
यह आग अदावत[17] की दमभर में बुझा देंगे ।।
ऐ हुब्बे वतन[18] आजा तेरी ही जरूरत है ।
हम बेकसो ग़म दीद:[19] दिल में तुझे जा[20] देंगे ।।

"अज्ञात"— "इन्क़िलाब (ज़िन्द:बाद) की लहर "उर्फ़ तूफ़ाने हिन्द"—मुद्रक, फ़ारूक़ी प्रेस, सहारनपुर—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवप्ति संख्या, 1658

1. चिगारी बरसाती हुई, 2. प्रभाव, 3 संवेदन. 4. निवासी, 5. रोना, 6. आकाश, 7. कथा, 8. राष्ट्र, 9. आलस्य, 10. शिक्षाएं, 11. पूरा करना, 12. विश्व, 13 वातावरण, 14. धार्मिक भेद-भाव, 15. आपस में, 16. आसूं, 17. शत्रुता, 18. देश भक्ति, 19. दुख देखा हुआ, 20. स्थान

ग़ज़ल

कभी वह दिन भी आएगा के हम स्वराज देखेंगे ।
दयारे हिन्द[1] में फिर हिन्दियों का राज देखेंगे ।।

छुटेगी क़ौम अपनी ग़ैर जाति की हुकूमत से ।
वतन को ग़ैर मुल्कों का न हम मोहताज देखेंगे ।।

गड़ेगा हिन्द में झण्डा मसावातो[2] अदालत[3] का ।
रवादारी-ए-नस्लो रंग का इख़राज[4] देखेंगे ।।

न हिन्दी कोश पर कब्ज़ा रहेगा ग़ैर हाकिम का ।
न भारतवर्ष से लेते किसी को बाज देखेंगे ।।

रज़ाकाराने[5] आज़ादी की कोशिश बारवर[6] होगी ।
मुज़फ्फ़र[7] कांग्रेस की हर तरफ़ अफ़वाज[8] देखेंगे ।।

हमेशा हर घड़ी तिफ़लो[9] जवानो पीर[10] के दिल में ।
वतन के इश्क़ की उठती हुई अमवाज[11] देखेंगे ।।

तकालीफ़ो मसाइब[12] दूर होंगे एहले भारत[13] के ।
संवरते हिन्द के बिगड़े हुए सब काज देखेंगे ।।

न आने पाएंगी कसरत[14] से मुल्के ग़ैर[15] की चीज़ें ।
न जाता हिन्द से हिन्दोस्तां का अनाज देखेंगे ।।

ग़रीबों को भी आएगी मयस्सर[16] पेटभर रोटी ।
यतीमों को न दाने दाने का मोहताज देखेंगे ।।

विजय के हार होंगे "नेहरु" व "गांधी" की गर्दन में ।
मुक़द्दस[17] मादरे भारत के सर पर ताज देखेंगे ।।
मनाएंगे ज़मीने हिन्द पर हम जश्ने आज़ादी ।
फ़लक[18] पर से हमें ख़ुश ख़ुश "तिलक" महाराज देखेंगे ।।

"अज्ञात"—"इन्क़िलाब (ज़िन्द:बाद) की लहर" उर्फ़ "तुफ़ाने हिन्द"—मुद्रक, प्रेस, सहारनपुर—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य—अवाप्ति संख्या, 1658

1. भारतवर्ष, 2. बराबरी, 3. न्याय, 4. दूर होना, 5. स्वयं सेवक, 6. सफल , 7. विजयी, 8. फ़ौजें, 9. बच्चे, 10. बूढ़े, 11. मौजें, 12. दुख-कष्ट, 13. भारतवासी, 14. बहुतात, 15. विदेश, 16. उपलब्ध, 17. पवित्र, 18. आकाश

ग़ज़ल

बांध ले बिस्तर, फ़िरंगिया राज अब जाने को है।
ज़ुल्म काफ़ी कर चुके, पब्लिक बिगड़ जाने को है॥

गोलियां तो खा चुके अब तोप भी हम देख लें।
मर मिटेंगे देश पर, फिर इन्क़िलाब आने को है॥

वीर जो इस जेल में हैं, क़ौम[1] के वह नाख़ुदा[2]।
जेलख़ाना तोड़ देंगे, यह हवा चलने को है॥

कह रहे हैं "बाबा गांधी" मान लो शरतें तमाम।
वरना फिर नक़्शा हुकूमत का पलट जाने को है॥

आगए हैं अब "पटेल" भी कारज़ारे[3] हिन्द में।
देखना तुम राजशाही बेनक़ाब होने को है॥

"मालवी" ने वार अपना कर दिया इंग्लैंड पर।
देखना अब मानचिस्टर भी उजड़ जाने को है॥

"अज्ञात"—"तरानः-ए-आज़ाद"—संग्रहकर्ता एवं प्रकाशक, कुंवर प्रताप चन्द्र "आज़ाद"—मुद्रक, आनन्द प्रेस, बरेली—

राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य--अवाप्ति संख्या, 2677

1. राष्ट्र, 2. नाव खेने वाला, 3. युद्धस्थल

ग़ज़ल

भारत को ग़ुलामी से आज़ाद करा देंगे ।
इस तरज़े हुकूमत[1] को हम मिल के मिटा देंगे ।।

"सरदार भगत सिंह" का कर देंगे मिशन पूरा ।
और "दत जी" के चरनों में सर अपना झुका देंगे ।।

हिम्मत जो करो मिल के ऐ हिन्दू मुसलमानों ।
हम को जो मिटाते हैं, हम उन को मिटा देंगे ।।

डन्डों से डराते हो क्यों हम को पुलिस वालो ।
आज़ादी की ख़ातिर हम सर अपना कटा देंगे ।।

यह कह दो हुकूमत से के ज़ुल्म किए जाओ ।
हम ज़ुल्म की, ज़ालिम की, हस्ती[2] को मिटा देंगे ।।

"अज्ञात"—"आहे बेकस" उर्फ़ "आज़ादी की लहर"–संग्रहकर्ता, भाई शिव प्रसाद–मुद्रक, कृष्णा प्रिंटिंग प्रेस, जगाधरी—
राष्ट्रीय अभिलेखागार प्रतिबंधित साहित्य--अवाप्ति संख्या, 1711

1. शासन के ढ़ंग, 2. अस्तित्व

2. डी० आफ आरचीफ़स/86—छः—30-9-86—1000

शुद्धि पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति / नोट	गलत	सही
6	1	मुनतखिब	मुनतख़ब
13	4	तेड्जीबे	तहज़ीबे
14,25,92,117	नोट सं. 6,13,7,1	परलय	प्रलय
16,41,103,117	नोट सं. 33,1,11,3	चक्कर	चक्र
22	नोट सं. 5	उद्ण्डता	उद्दण्डता
23,57,58,74,85	1,2,14,12,14	खाब	ख़्वाब
24	12	तजय	जय
28	4	राहृ	राह्
29	नोट सं. 15	का का	का
35	नोट सं. 14	पराज्यों	पराजय
36	नोट सं. 8	पौडर	पाउडर
43	3	की	के
44	नोट सं. 16	बछपन	बचपन
45	7	कुदती	कौंदती (कौंवती)
55	नोट सं. 1	सामाज्रा	साम्राज्य
61	7	हिन्दु	हिन्दू
65	2	फर्याद	फ़रयाद
66	4	बक्तेर ख़ुसत	बक़्ते फ़ुरसत
67	नोट सं. 9	दुख	दुख, 10.
70	2	आखरी	आख़िरी
72	3, 8	उर्दु	उर्दू
77	नोट सं. 20	भया	भय
79	नोट सं. 1	भारवातसी	भारतवासी
79	नोट सं. 6	के नच	के नीचे
80	14	कनेहया	कन्हैया
86	नोट सं. 8	भारत स्थान	भारत देश
83	16	मुस्लमान	मुसलमान

कृ० पृ० उ०

2 D of Archieves/86

पृष्ठ संख्या	पंक्ति / नोट	गलत	सही
85,91	17, 17	जगाधीरो	जगाधरी
88	नोट सं. 26	छुटना	छूटना
88	नोट सं. 18	शकित	शक्ति
95	नोट सं. 8	डाईम (उपस्थित)	उठाना
100	नोट सं. 8	प्रकार	आवाज़
101	नोट सं. 7	भठका	भटका
103	नोट सं. 33	यहुदियों	यहूदियों
105	13	ग़रींबों	ग़रीबों
129	13	र्ग्राके	शर्के
136,143	10, 14	एहले	अहले
137	8	मुददत	मुद्दत
139	8	जंगे-ए	जंगे
144	6	प्रेस	फ़ारूक़ी प्रेस
146	5	दत	दत्त
146	मुद्रक नोट (अन्तिम पंक्ति)	डी. आफ आर चीफ़स	अभिलेख निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार